साम्यवादी-पुस्तकमाला, संख्या २.

आयरलैण्ड के

ग़दर की कहानियां।





सत्यभक्त

आयरलैण्ड के

ग़दर की कहानियां.

लेखक :-

सत्यभक्त

प्रकाशक :-

सोशलिस्ट बुकशाप

कानपुर

प्रथम संस्करण   मार्च १९२७   मूल्य-दस आना

प्रिन्टर पं० राधामोहन बाजपेयी
ब्राह्मण प्रेस-कानपुर।

निवेदन।

"आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियां" एक अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है जिसका नाम "केसी आफ आई० आर० ए०" है। इस पुस्तक के लेखक मि० ए० टी० वाल्श हैं। अंगरेजी पुस्तक ज्यादातर सिपाहियों और कम पढ़े लोगों की बोलचाल की जबान में लिखी गई है। उसका हिन्दी में ज्यों का त्यों अनुवाद कर सकना एक तरह से नामुमकिन है। अगर ऐसा करने की कोशिश की भी जाती तो इस पुस्तक की भाषा ऐसी बेढब हो जाती कि मामूली आदमी उसे समझ नहीं सकते और न उसके पढ़ने में कुछ मजा आता। इस लिये अंगरेजी पुस्तक का मतलब लेकर उसको अपने ढंग से और कुछ घटा बढ़ा कर लिखा गया है। आशा है कि इस तरह यह पुस्तक सब के समझने लायक हो गई होगी।

पुस्तक की भाषा के बारे में एक और बात कह देना जरूरी है। भाषा के सम्बन्ध में मेरे विचारों में दूसरे लोगों से कुछ फर्क है और उसके सबब से शायद कुछ आलोचना-प्रिय महाशयों को इसमें कुछ दोष नजर आवें। मेरा खयाल भाषा को सीधीसाधी और मामूली लोगों के समझने लायक बनाने की तरफ ज्यादा रहता है, और इस लिये हिन्दी उर्दू का खयाल न करके जो शब्द सहज और स्पष्ट मालूम पड़ता है उसी को मैं इस्तैमाल करता हूं। इसके सिवा कम पढ़े लोगों की आसानी के लिये मैं जहां तक हो सकता है मिले हुये हरूफ भी कम लिखता हूं और हरूफों के नीचे नुकता देना भी पसंद

नहीं करता। मिसाल के लिये इस किताब में 'बिल्कुल' 'दुश्मन' 'हुक्म' 'शर्म' 'जुल्म' 'उम्र' वगैरह शब्दों की जगह 'बिलकुल' 'दुशमन' 'हुकम' 'शरम' 'जुलम' 'उमर' वगैरह लिखा गया है। इसी तरह 'ख़बर' 'ख़त्म' 'आफ़त' 'क़दम' 'अफ़वाह' वगैरह शब्दों में हरूफों के नीचे नुकता नहीं दिया गया है। पर यह कायदा तमाम जगह नहीं बरता जा सका है। अभ्यासवश या प्रूफ पढ़ने की गलती से कितनी ही जगह इन हरूफों को मिला कर भी लिख दिया है। अगली बार यह दोष न रहेगा।

'ब' और 'व' के इस्तैमाल में भी मेरा कायदा कुछ अलग है। कुछ थोड़े से प्रचलित और मशहूर हिन्दी शब्दों को छोड़ कर बाकी तमाम जगह 'ब' और 'व' के फर्क पर मैं बहुत कम ध्यान देता हूं। इस से मुमकिन है कि एक ही शब्द में एक जगह 'ब' और दूसरी जगह 'व' देखने में आये।

अब रह गया पुस्तक का विषय। इस पुस्तक में सन् १६२०-२१ में आयरलैण्ड में होने वाले गदर की एक झलक दिखाने की कोशिश की गई है। इस गदर में आयरलैण्ड के देशभक्तों ने जिस आत्मत्याग और साहस का परिचय दिया उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में मिल सकना मुशकिल है। यह इन लोगों के बलिदान और हिम्मत का ही नतीजा था कि वे ब्रिटिश सरकार जैसी दुनियां की सबसे ताकतवर सल्तनत को झुका सके। ऐसे वीरों का चरित्र पढ़ना और उनकी इज्जत करना हर एक आदमी का फर्ज है। जो देश वीर-पूजा करना नहीं जानता- जैसी कि बदकिस्मती से आजकल हमारे देश की हालत है-वह मुरदा है और ऐसा देश हमेशा दूसरों का गुलाम बन कर ही रहता है।

यह पुस्तक उपदेशप्रद होने के साथ ही दिलचस्प भी काफी है। आजकल ज्यादातर नौजवान जासूसी, तिलस्मी और प्रेम के थर्ड क्लास उपन्यासों के पढ़ने में वक्त खराब किया करते हैं। अगर वे ऐसी पुस्तकों से अपना मनोरंजन करने लगें तो 'एक पंथ दो काज' की कहावत पूरी हो सकती है। अभी तक हिन्दी में इस तरह की पुस्तकें बहुत कम हैं और मेरा खयाल है कि यह पुस्तक शायद इस कमी के मिटाने में मददगार होगी।

इस किताब की छपाई जहां तक मुमकिन था अच्छी कराने की कोशिश की गई है। तो भी पहिले दो फार्म कुछ खराब हो गये हैं। बीच में भी कहीं कहीं मशीन की खराबी से अक्षर और मात्रायें टूट गई हैं। इसकी कीमत भी शायद कुछ लोगों को ज्यादा जान पड़े। पर पुस्तकें कम तादाद में छपाई गई हैं और बेचने के लिये इश्तहार और कमीशन देने में एक बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है। इस लिये इससे कम कीमत में काम चल सकना मुशकिल था।

अगर हिन्दी पाठक इस किताब की कुछ कदर करेंगे और इसका दूसरा ऐडीशन होने का मौका आयेगा तो ये सब त्रुटियां दूर की जा सकेंगीं।

निवेदक—

सत्यभक्त

१६ मार्च १९२७]

विषय–सूची

१–मेलार्न में पहिली गोली ५–१६

२–स्वयंसेवक दल का संगठन १७–२६

३–सरकारी सेना पर छापा २७–३६

४–राष्ट्रीय सेना का घेरा ३७–४८

५–ओहारा की वीरता ४९–६३

६–डबलिन–यात्रा ६४–७७

७–युद्ध और प्रेम ७८–९३

८–काल के मुंह में से निकल आये ९४–१०७

९–एक निरपेक्ष डाक्टर १०८–१२०

१०–युद्ध के दावपेच १२१–१३१

११–देशभक्ति का प्रमाण १३२–१४३

१२–लड़ाई का अंत १४४–१५५

आयरलैंड के

ग़दर की कहानियां

मेलार्न में पहिली गोली।



ह उन दिनों की बात है जब कि आयरलैंड के देशभक्त अपनी मातृभूमि को पराधीनता से छुड़ाने के लिये अंगरेजों के साथ घोर युद्ध कर रहे थे। हर रोज़ कहीं न कहीं आयरिश प्रजातंत्र सेना के स्वयंसेवक सरकारी सेना के किसी छोटे दल पर हल्ला बोल देते, और जब तक कोई बड़ी सेना उनका मुकाबला करने आवे, तब तक मारकाट करके और सिपाहियों के हथियार छीन कर पहाड़ों और जङ्गलों में भाग जाते थे। रास्ते में रेलगाड़ी को खड़ा करके डाक को लूट लेना, रेल की पटरी और तारों को तोड़ देना, सरकारी अदालतों को जला देना, पुलिस की चौकियों को उड़ा देना आदि उन के लिये साधारण बातें थीं।

× × × ×

सन् १९२० ई० का मार्च का महीना था। मेलार्न नामक गांव के स्कूल का मास्टर जेम्स केसी अपने मकान में बैठा हुआ भोजन कर रहा था। भोजन करके ज्योंही उसने अपना सिगरेट

का बक्स खोला कि यकायक थोड़ी दूर पर एक बन्दूक चलने की आवाज़ आई । कुछ ही क्षण के बाद बीसियों बन्दूकों की आवाज सुनाई पड़ने लगी ।

केसी ने घबड़ा कर कहा "भगवान, यह कौनसी नई बला आई ।"

वह बन्दूकों के चलने का कारण सोच ही रहा था और चाहता था कि बाहर निकल कर पता लगावे, कि इतने में किसी ने बड़े जोर से धक्का मार कर उस के कमरे का दरवाजा खोला । उसका एक पुराना शागिर्द टामी मुलन हांफता हुआ भीतर घुस आया, उस के हाथ में एक छर्रेदार बन्दूक थी ।

टामी ने घबड़ाई हुई आवाज से कहा "इस बन्दूक को कहीं छुपादो ।"

'क्या ! क्या !' केसी ने भयभीत होकर लड़खड़ाती हुई जबान से पूछा । पर टामी ने उस की बात का कुछ जबाव न दिया और वह बन्दूक को उसी कमरे में फेंक बड़े जोर से बाहर की तरफ भाग गया ।

केसी गुस्सा होकर बड़बड़ाने लगा :—

"बड़ा बदमाश लड़का है । मुझे फंसाने के लिये जबर्दस्ती मेरे घर में बन्दूक फेंक गया ।"

वह भौचक्का होकर बन्दूक की तरफ देखने लगा । इतने में उस घर की मालिकिन मिसेस ब्रेनिन उसके पास आकर चिल्ला कर कहने लगी "तुम पागल की तरह खड़े क्यों हो ?

सिपाही लोग आरहे हैं। अगर वे बन्दूक को इस घर में देख लेंगे तो हम सब को जान से मार डालेंगे।"

केसी के चेहरे से निराशा का भाव प्रकट होने लगा। उसने घबड़ा कर चारों तरफ़ देखा कि बन्दूक कहां छिपाई जाय। वह खिड़की की तरफ गया और देखा कि सिपाही उसके दरवाजे पर आगये हैं। रक्षा का कोई उपाय न देख कर उस ने बन्दूक को मकान के पीछे वाले बगीचे में फेंक दिया। सौभाग्य से वह पेड़ों के झुरमुट में गिरी और देखने वालों की निगाहों से बिलकुल छुप गई।

बन्दूक को अच्छी तरह छुपा हुआ देख कर केसी का डर कुछ कम हुआ। उसने जल्दी डिब्बे में से एक सिगरेट निकाल कर जलाई और आराम कुर्सी पर लेट कर पीने लगा। इतने में सिपाही उस के कमरे के भीतर पहुँच गये और चिल्ला कर बोले "हाथ ऊपर करो।" आश्चर्य और डर का भाव दिखलाते हुये केसी ने हाथ ऊपर उठा दिये। अब उससे सवाल पर सवाल किये जाने लगे। कुछ सिपाही उसे धमकाने और गालियाँ देने लगे। पर वह शांति के साथ उन के तमाम सवालों के जवाब में 'नहीं' कहता गया। 'मैंने किसी को नहीं मारा है, न किसी मारने वाले को छुपाया है।' 'मैंने किसी को बन्दूक ले कर अपने घर में घुसते नहीं देखा।' 'मुझे खेद है कि आप मेरी बात पर विश्वास नहीं करते पर मैं सत्य कहता हूं कि मैंने किसी को बन्दूक लिये नहीं देखा।' 'मेरे घर में कोई बन्दूक नहीं है।

आप बड़ी खुशी से मेरे मकान की तलाशी ले सकते हैं, मुझे इस में कोई एतराज नहीं।' इस तरह के जवाब देने के सिवा वह किसी तरह सिपाहियों की पकड़ में न आया।

इस बीच में दूसरे सिपाही घर की तमाम चीजों को इधर उधर फेंक कर खूनी को तलाश कर रहे थे। साथ में वे केसी को बुरी बुरी गालियां देते जाते थे। इतने में उनका कप्तान भीतर आया। उसे देखकर सिपाहियों का बकना कुछ कम हुआ। कप्तान के मुंह से खून निकल रहा था और एक रूमाल घाव के ऊपर बँधा था। उसने भीतर आते ही पूछा "क्यों, कुछ मिला?"

एक हवलदार ने जवाब दिया :—

"नहीं कप्तान साहब, अभी कुछ नहीं मिला।" यह कह कर वह गुस्से से केसी की तरफ देखने लगा।

कप्तान ने कहा :—

"सब जगह अच्छी तरह तलाश करो। ख़ास कर पिछवाड़े की तरफ ग़ौर के साथ देखना।"

अब कप्तान केसी पर सवालों की बौछार करने लगा। यद्यपि उसे केसी की बातों पर विश्वास नहीं हुआ तोभी वह ऊपर से भले आदमी की तरह शांति पूर्वक उस की बातें सुनता रहा। कुछ देर बाद उस ने खुद ही असली बात बतलादी।

कप्तान ने अपने मुंह को दिखला कर कहा "देखो, उस बदमाश, खूनी लड़के ने किस जगह मुझे घायल किया है। मैं सब से आगे की मोटरगाड़ी में ड्राइवर के पास बैठा था। हम

लोग एक जगह जरा रुके थे कि एक गली में से एक लड़का भागता हुआ आया और एक दम मेरे ऊपर बन्दूक चलाई। भगवान ने मेरी रक्षा की और एक ही छर्रा मेरे मुंह में लगा। पर बिचारे ड्राइवर के शरीर में जगह जगह छर्रे घुस गये और वह फौरन मर गया। हमारे सिपाहियों में इस अचानक घटना के कारण जरा हलचल मच गई और इस बीच में वह लड़का इस तरफ भाग आया। पर चाहे जो हो हम जरूर उसका पता लगा लेंगे और जब एक बार वह पकड़ लिया गया तो मैं उसकी बोटी बोटी काट डालूंगा। यह मामला गांव की भलाई की निगाह से बड़ा संगीन है। अब तक इस गांव की किसी तरह की बदनामी नहीं हुई है, पर अगर इस मौके पर यहां के रहने वाले उस खूनी लड़के के पकड़ने में मदद न करेंगे तो तमाम गांव की कमबख्ती आई समझो।"

केसो ने कप्तान की बातें बड़ी सहानुभूति का भाव प्रकट करते हुए सुनीं। कप्तान ने उसे लड़के का हुलिया खूब अच्छी तरह समझाया, पर वह उसे किसी तरह न पहिचान सका! उस ने कहा:— "इस हुलिये का कोई लड़का इस गांव में नहीं रहता। कम से कम मैंने तो उसे कभी नहीं देखा। वह किसी दूसरी जगह का रहने वाला होगा। चाहे जो हो, उस का यह काम बड़ा खराब है।"

स्कूल मास्टर की बातें कप्तान को बड़ी बुरी लगीं। पर जब घंटा भर तलाश करने पर भी कुछ न मिला तब वह अपने

सिपाहियों के साथ चला गया। चलते समय उस ने केसी को खूब धमकाया। इस के बाद उन्होंने गांव के दूसरे कई घरों की तलाशी ली और पांच छै नौजवान लड़कों को पकड़ कर लेगये। पर असली मारने वाला लड़का टामी मुलन उन के हाथ न आया। वह उस समय पास की पहाड़ी में छुपा बैठा था।

× × × ×

जब सरकारी सिपाही गांव से चले गये, तब जेम्स केसी अपने घर में बैठा हुआ टामी मुलन के विषय में विचार करने लगा। अब उस को उस लड़के पर जरा भी गुस्सा न था और उस की बहादुरी देख कर उसके दिल में आदर का भाव पैदा हो रहा था। इस लिये जब उस मकान की मालिकिन मिसेस ब्रैनिन इस तरह की आफत बुलाने के लिये टामी मुलन को कोसने काटने लगी तो केसी ने चिल्ला कर कहा:—

"उस लड़के के लिये कोई खराब शब्द मुंह से मत निकालो। उसने यह काम अपने देश की भलाई के लिये किया है।"

अब धीरे धीरे केसी को पुरानी बातें याद आने लगीं। उस का पितामह अंगरेजों का कट्टर दुश्मन था, और आयरलैंड की स्वाधीनता के लिये लड़ कर उस ने अपने प्राण दिये थे। केसी को भी आयरलैंड की स्वाधीनता बहुत प्यारी लगती थी और अंगरेजों के अत्याचार देख कर उस का खून उबलता था। सन् १९१६ में जब आयरलैंड के देशभक्तों ने ग़दर का झंडा उठाया तब केसी ने भी अपना नाम राष्ट्रीय वालंटियरों में लिखाया था।

उस समय उसे कवायद परेड सिखाई गई थी और मोटर गाड़ी चलाना, बम फेंकना, बन्दूक चलाना आदि बातों का भी कुछ अभ्यास कराया गया था। पर जब इंगलैंड की सरकार ने आयर-लैण्ड को होमरूल देने का वायदा किया और ग़दर दब गया तो यह वालंटियर सेना धीरे धीरे बिखर गई। अब जब कि आयर-लैण्ड वालों ने दूसरी बार अंगरेजी शासन के विरुद्ध ग़दर आरम्भ किया तो केसी का खयाल भी उस तरफ गया। पर अभी तक विद्रोहियों का जोर डबलिन और दक्षिणी आयरलैंण्ड के जिलों में ही था। मेलार्न गांव के निवासी ग़दर में शामिल नहीं थे और उन की राय में यह कार्य व्यर्थ की खून खराबी थी। पर आज टामी मुलन की एक गोली ने गांव की इस उदासीनता को भंग कर दिया और मेलार्न का नाम बागियों के दल में लिखा दिया। केसी ने देखा कि गांव के सब लोग टामी मुलन के बंदूक चलाने की बात जानते हैं, पर किसी ने सिपाहियों के सामने उस का नाम नहीं लिया। इन सब बातों से उसका ध्यान ग़दर की तरफ बहुत आकर्षित हुआ और वह अपने पुराने शागिर्द मुलन के इस काम को बड़ी श्रद्धा की निगाह से देखने लगा।

जब शाम होगई और गांव के सब लोग अपने अपने घरों को चले गये तब केसी अकेले में बैठकर सोचने लगा कि उस बन्दूक का क्या इन्तजाम करना चाहिये। उसे यह बात किसी तरह पसंद नहीं आई कि बन्दूक नष्ट करदी जाय या तालाब में फेंक

दी जाय। यदि वह रात के समय इसे जमीन में गाड़ने की कोशिश करता तो इस बात का डर था कि कोई पड़ोसी देख न ले। अन्त में उस ने निश्चय किया कि सवेरे तक बन्दूक उन्हीं पेड़ों के बीच में पड़ी रहने दी जाय और तब जैसा ठीक मालुम हो वैसा किया जाय।

आधी रात के समय केसी की नींद भयंकर कोलाहल के कारण भंग होगई। वह जल्दी से अपनी पतलून पहिन कर खिड़की के पास आया। वहां उसने जो कुछ देखा उससे उसके होश हवास गायब होगये। उसने देखा कि उसके घर को सिपाहियों ने घेर लिया है और वे हाथों में बिजली के लैम्प लेकर चारों तरफ ढूंढ़ रहे हैं। कुछ लोग इधर उधर गोलियां चला रहे थे और कुछ मकान के दरवाजे को तोड़ रहे थे। केसी समझ गया कि वे अंगरेजी सरकार की खूनी सेना 'ब्लैक एण्ड टैंस' (कृष्ण घातक दल) के आदमी हैं, जिनका काम सर्वसाधारण पर बिना कारण अत्याचार करके विद्रोहियों को डराना है। उसे विश्वास हो गया कि इस समय ये लोग आज की दुर्घटना का बदला लेने आये हैं और मुझे जरूर मार डालेंगे। भय के कारण उसकी सोचने विचारने की ताकत चली गई और अपने बचने का कोई उपाय न कर वह पत्थर की मूर्ति की तरह खिड़की के पास ही खड़ा रहा। जब उसने देखा कि सिपाहियों ने पेड़ों के झुरमुट में से बन्दूक को निकाल लिया और उसे लेकर चिल्लाते हुये ऊपर चढ़े आरहे हैं, तब भी वह उस जगह से नहीं

हिला । सिपाहियों ने उसे सैकड़ों गालियां दीं और लड़के का पता पूछा । पर उसकी समझ में एक भी बात अच्छी तरह न आई । सिपाहियों ने उसे लातों और घूसों से मारते मारते अध-मरा कर दिया, पर उस के मुंह से एक आवाज भी न निकली । अंत में एक राक्षस की सी शकल वाले शख्श ने उसकी तरफ पिस्तौल तान कर कहा 'जवाब दे ।' पर तब भी वह गूंगे की तरह देखता रहा । सिपाही ने पिस्तौल चलाई और केसी बेहोश हो कर गिर गया ।

× × × ×

केसी को नहीं मालूम कि वह कितनी देर बेहोश रहा और उसकी बेहोशी के बाद क्या हुआ । पर जब वह होश में आया तो उसने देखा कि वह मोटर लारी के एक कोने में पड़ा है । उसके तमाम शरीर में बड़ा दर्द हो रहा था और सिर में से खून निकल रहा था । पर उसका दिमाग़ इस समय बड़ा साफ था । उसने देखा कि उसके घर में आग लगादी गई है और सब चीज़ें जल रही हैं । सिपाही अब भी बंदूकें चलाते हुए इधर उधर घूम रहे थे । एक सिपाही ने दूर से चिल्लाकर कहा "वह मरा नहीं है । मेरी गोली उसके सरको छूकर निकली है । रास्ते में हम उससे लड़के का पता पूछने की कोशिश करेंगे और अगर तब भी न बतलायेगा तो फिर उसे ठिकाने लगा देंगे ।"

केसी समझ गया कि ये बातें उसी के लिये कही जा रही हैं । पर अब उसे किसी बात का डर नहीं रहा था, और उसके दिल

में सिर्फ एक ख़याल ज़ोर मार रहा था, कि मरने से पहले इन बदमाश सिपाहियों को एक अच्छा सबक़ सिखाया जाय। वह अपना उद्देश्य पूरा करने की कोई तरकीब सोचने लगा। ढूंढते ढूंढते उसका हाथ गाड़ी के दूसरे कोने में पड़े हुए बमों के ढेर पर पड़ा। अब उसने एक तरकीब सोची जिससे न केवल सिपाहियों को दण्ड ही दिया जाय, बल्कि अगर मुमकिन हो तो भाग कर अपनी जान भी बचा ली जाय।

इस समय सिपाही चलने की तैयारी कर रहे थे। मोटर लारी का इंजिन ज़ोर से फटफटा रहा था। ड्राइवर आलस्य में बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। दो सिपाही गाड़ी के नज़दीक बाहर बैठे हुए बातचीत कर रहे थे। केसी ने चुपके से एक बम उठाया और उसकी मूंठ को मज़बूती के साथ पकड़ लिया। इसके बाद उसने अचानक बड़े ज़ोर से बम की मूंठ का एक ठोसा ड्राइवर के मुँह पर मारा और बिजली की तरह कूदकर मोटर चलाने की जगह पर बैठ गया। पास में बैठे हुए दोनों सिपाही चौंक कर उठ पर केसी ने फौरन वह बम उनकी तरफ फेंक दिया और जब तक उसका धड़ाका हुआ तब तक उसने मोटर को पूरी तेजी से दौड़ा दिया।

अपने शिकार को इस तरह भागते देखकर दूसरे सिपाही उसकी तरफ गोलियों की वर्षा करने लगे। पर मोटर की तेज चाल के कारण कोई भी गोली निशाने पर नहीं लगी। करीब दो मील चले जाने के बाद केसी को कराहने की आवाज़ सुनाई दी। उसने

देखा कि मोटर का ड्राइवर होशमें आ रहा है। वह उसे मारने के लिये कोई चीज तलाश करने लगा। पास ही एक बड़ी पिस्तौल रखी हुई थी। केसी ने पहिले तो ड्राइवर को मार देना चाहा, पर जब उसने उसके टूटे हुये जबड़े को देखा तो उसे दया आगई और उसने पिस्तौल अपने जेब में रख ली।

पर अभी तक केसी विपत्ति से मुक्त नहीं हुआ था। दूसरी मोटर गाड़ियों में बैठकर अंगरेजी सिपाही उसका पीछा कर रहे थे। उनकी मोटरों की रोशनी उसे दूर से दिखलाई देने लगी। अन्त में केसी ने एक उपाय सोचा और एक ढालू जगह की चोटी पर पहुंच कर मोटर को ठहरा दिया। उसकी इच्छा थी कि भागने से पहिले थोड़े बम ले लिये जांय, पर उनको रखने के लिये वहां कोई चीज न थी। तब उसने खतरे की परवा न करके दो बम अपनी पतलून की जेबों में रख लिये। इसके बाद उसने मोटर लारी को नीचे की तरफ ढकेल दिया और वह खड़खड़ाती हुई नीचे गिर कर चूर चूर हो गई।

अब केसी जोर से खेतों में होकर भागने लगा। बीच बीच में वह किसी जगह छुप जाता था। इस प्रकार भागते भागते उसने सड़क को कई मील पीछे छोड़ दिया और वह मेलार्न की दक्खिन दिशा वाली पहाड़ियों में पहुंच गया। अब सिपाहियों का डर जाता रहा था। वह सिपाहियों की मारपीट और भागने के कारण बेहद थक गया था, और जमीन पर पड़ते ही उसे गहरी नींद आगई। जब उस की आखें खुली तो तीन चार घंटे

दिन चढ़ चुका था और चारों तरफ तेज धूप फैली हुई थी। सबसे पहिले उसकी निगाह टामी मुलन पर पड़ी जो पास ही खड़ा हुआ डरी हुई निगाह से उसे देख रहा था। केसी को जगा हुआ देखकर टामी ने रोती हुई आवाज से पूछा "केसी साहब, आपकी यह कैसी हालत है?"

पर अब केसी साहब बिल्कुल बदल गये थे। उसने हंसते हुए मुलन से कहा "नहीं, मैं बिलकुल अच्छी तरह हूं। तुम कहां से आ गये?"

मुलन ने जवाब दिया "आज सुबह जब मैं अपने छुपने की जगह से बाहर निकला तो दूर ही से मैंने आप को पड़े देखा पर बहुत देर तक डरके मारे आपके पास नहीं आया। आह, केसी साहब, आपतो सर से पैर तक खून में सने हुये हैं।"

केसी ने जवाब दिया-"हां सर में कुछ चोट लग गई थी।" इसके बाद उसने हँसते हुए कहा "मुलन अब मैं तुम्हारा गुरू नहीं रहा। अब तुम मुझसे साहब न कह कर केवल जेम्स या केसी के नाम से बात किया करो। मैं आयरलैंड की राष्ट्रीय सेना में शामिल होना चाहता हूँ। इस समय यहां पर तुम्हारे सिवा उसका ऐसा कोई पदाधिकारी नहीं है जो शत्रु का मुकाबिला कर रहा हो। इस लिये महरबानी करके मेरा नाम अपने सिपाहियों में लिख लो।"

स्वयं-सेवक-दल का संगठन।



लार्न गांव में इन दिनों बड़ी हलचल मची रहती थी। यद्यपि आयरलैण्ड का स्वाधीनता-संग्राम कई महीनों से जारी था पर मेलार्न वालों ने उसमें कोई हिस्सा नहीं लिया था। वे केवल एक तमाशाई की तरह इस संग्राम की आश्चर्यजनक घटनाओं को सुनते और पढ़ते रहते थे। गांव के छोटे से पुस्तकालय में जो दो चार अख़बार आते थे, उनसे पता चलता था कि, इस समय आयरलैण्ड में सचमुच एक युद्ध हो रहा है, जिसमें एक तरफ आयरलैण्ड का राष्ट्रीय दल है और दूसरी तरफ अंगरेजी सरकार। समय समय पर सरकारी सेना विभाग की तरफ से जो सूचनायें निकलती थीं उनसे भी इस बात की सचाई साबित होती थी। लोग सुना करते थे कि डबलिन, कार्क और दूसरे स्थानों में अक्सर छोटी मोटी लड़ाइयां होती रहती हैं जिनमें आयरलैण्ड वाले ही नहीं मरते वरन् सरकारी सिपाही भी मारे जाते हैं।

लड़ाई की इन ख़बरों पर गांव में बड़ी बहस हुआ करती थी। कुछ लोग राष्ट्रीय सेनावालों के काम की इस लिये निन्दा करते थे कि इससे अंगरेजी सिपाहियों को सर्वसाधारण पर अत्याचार करने का बहाना मिल जाता है और व्यर्थ में बेकसूर

लोगों की जानें जाती हैं। पर दूसरे लोग फौरन जवाब देते कि इस समय देश की इज्जत मरने और मारने की नीति से ही क़ायम रह सकती है और इस लिये राष्ट्रीय सेना वाले ही सच्चे देशभक्त हैं। इस बात को प्रायः सब लोग मानते थे कि राष्ट्रीय सेनावाले बड़े बहादुर हैं। कभी कभी मेलार्न के निवासी इस बात पर रंज जाहिर करते थे कि उनका गांव देश की स्वाधीनता के युद्ध में कुछ भाग नहीं ले सकता। फिर अगर वे कुछ करना भी चाहें तो उनके पास बंदूक और गोली बारूद कहां है? इस तरह मेलार्न वालों का युद्ध में भाग ले सकना एक नामुमकिन बात जान पड़ती थी और सरकारी सिपाही बिना किसी डर के उस गांव में होकर आते जाते रहते थे।

पर एक ऐसे लड़के ने जिसको गांव के बहस करने वाले 'राजनीतिज्ञ' जानते भी न थे, अचानक मेलार्न का नाम युद्ध करने वालों की फिहरिस्त में लिखा दिया। दस घंटे के भीतर ही ऐसी भयंकर घटनायें हो गईं जिनका किसी को ख़याल भी न था। खास कर जब रात के समय सरकारी सेना ने गांव में घुस कर टामी मुलन की विधवा माता और स्कूल मास्टर के मकान जला दिये और उनके पूजनीय गुरु केसी साहब को मार पीट कर घायल कर दिया, तो मेलार्न वालों के दिल में बड़ा धक्का लगा।

इस घटना के बाद कई दिन तक फौज के सिपाही गांव वालों पर ज़ुल्म करते रहे। वे हर एक घर की तलाशी लेते थे। आस

पास के गांव वालों को पकड़ पकड कर बुलाते थे; लोगों से तरह तरह के सवाल करते, धमकाते और मारपीट करते थे। फौज वाले मेलार्न के तमाम संदेहजनक लोगों को पकड़ कर ले गये, जिनमें ज्यादातर बातूनी राजनीतिज्ञ थे। सरकारी सेना ने मेलार्न को बुरी तरह से कुचल डाला।

इस अत्याचार ने मेलार्न की रंगत ही बदल दी। शुरू में तो वहाँ के लोग मौत के डर से भेड़ की तरह गरीब बन गये। पर जब मौत बिल्कुल सर के ऊपर आ पहुंची तो निराशा ने उनको जंगली जानवर की तरह खूंखार बना दिया। कितने ही नौजवान पहाड़ियों में भाग गये और राष्ट्रीय सेना में शामिल हो गये।

जब मुख्य सरकारी सेना गांव छोड़ कर चली गई और सिर्फ पुलिस-चौकी में थोड़े से सिपाही बाकी रह गये, तब गांव वालों का डर कुछ दूर हुआ और वे आजादी के साथ घरों से निकलने लगे पर अब कोई खुलकर राजनीति सम्बन्धी चरचा नहीं करता था और आपस में बात करते समय भी लोग चौकन्ने रहते थे। पर लोगों के दिलों में अंगरेजों के प्रति घृणा का भाव बड़ा मज़बूत हो गया था, और वे राष्ट्रीय सेना वालों से हार्दिक सहानुभूति रखने लगे थे। अगले इतवार के दिन गिरजे में जब उस ज़िले के बड़े पादरी ने फौज पर हमला करने वालों की निन्दा की और गालियां दीं, तो सबके चेहरों पर घृणा का भाव जाहिर हो रहा था। उसके बाद जब गांव का छोटा पादरी फादर

एमन अंतिम प्रार्थना सुनाने को खड़ा हुआ तो सब उसकी बात बड़े ग़ौर से सुनने लगे। गांव वालों को मालूम था कि फादर एमन भीतर ही भीतर राष्ट्रीय सेना वालों से मिला हुआ है।

× × ×

पहाड़ियों में भागने वाले नौजवानों की संख्या अब बीस तक पहुंच चुकी थी। सरकारी सेना के सिपाही वहां भी उनको ढूंढ़ते फिरते थे। पर वहां के रास्तों और छुपने के मुकामों का पता न होने के कारण वे पांच सात दिन में नाउम्मेद होकर बैठ रहे। इस बीच में इन नौजवानों ने अपना बाक़ायदा संगठन कर लिया और नेड फोयले नाम के एक किसान पहलवान को अपना नेता बनाया। फोयले की उम्र करीब ३० साल थी और वह शांत, समझदार तथा लड़ने में खूब बहादुर था। अपनी रक्षा का इन लोगों ने बड़ा पक्का इन्तज़ाम कर रखा था और हर समय दो तीन आदमी बारी बारी से पहरा देते रहते थे। खाने की चीजों और कपड़ों के लिये एक छुपा हुआ भंडार बनाया गया और दूर से बातचीत करने के लिये कुछ इशारे भी बना लिये गये।

पहाड़ियों में रहने वाले किसान इन नौजवानों की सब तरह से सहायता करते थे। शुरू में वे ही लोग ज्यादा सहायता करते थे जो सबसे गरीब थे। उसके बाद धीरे धीरे मालदार किसान भी मदद देने लगे। स्त्रियां इस काम में विशेष उत्साह दिखलाती थीं और उन्हीं के जोर देने से मर्द लोग मदद करते थे।

इन नौजवानों का सबसे पहिला काम राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर से अपना सम्बन्ध जोड़ना था। उन्होंने अपना एक प्रतिनिधि उस जिले के सेनापति के पास भेजा। सेनापति ने मेलार्न के दल को अपनी सेना में शामिल करना मंजूर कर लिया और उनको शिक्षा देने के लिये एक नौजवान अफसर भेजा। यह अफ़सर राष्ट्रीय सेना के प्रधान हैडक्वार्टर डबलिन से इस जिले की सेना का संगठन करने के लिये भेजा गया था। उसका नाम कप्तान मुनरो था।

कप्तान मुनरो ने बड़ी खुशी से इन अनजान लोगों को शिक्षा देने का काम अपने हाथ में लिया। मुनरो का पूर्व चरित्र किसी को मालूम न था, पर यह सबको दिखलाई पड़ता था कि उसकी नस नस में जोश और वीरता भरी हुई है। उसके साथ में रहकर थोड़े ही दिनों में मेलार्न के वालंटियरों को विश्वास हो गया कि उसका जन्म देशसेवा के लिये ही हुआ है, और सिवा मौत के और कोई ताक़त उसको इस काम से नहीं हटा सकती।

कप्तान मुनरो ने इन नौजवानों को समझाया कि-"डबलिन में रहने वाले 'बडे नेता' इस जिले के संगठन से संतुष्ट नहीं हैं। वे चाहते हैं कि दूसरे जिलों की तरह यहां वाले भी कोई 'बड़ा काम' करके दिखलायें। आप लोगों ने काम को अच्छे ढंग से उठाया है, पर जब तक आप का संगठन मजबूत न होगा और आपके पास काफी बंदूकें न होंगी तब तक आप ज्यादा आगे नहीं दढ़ सकते। इस उम्मेद को छोड़ दो कि हैडक्वार्टर से तुमको

अभी बंदूकें मिल जायंगी। वहां से अभी उन्हीं जिलों की मांग पूरी नहीं हो सकती जहां युद्ध खूब जोरों से चल रहा है। इसलिये तुमको खुद ही बंदूकें इकट्ठी करने की कोशिश करनी चाहिये। आसपास के गांवों में तलाश करो और जिस किसी के घर में बंदूक हो जाकर उठा लाओ। यह भी याद रखो कि हमारे दुश्मन के पास ढेरों बंदूकें हैं, तुमको चाहिये कि जिस तरह हो सके उससे बंदूकें छीन लो।"

अब संगठन का काम शुरू हुआ। इसमें सामाजिक श्रेष्ठता और विद्या का ख़याल बिल्कुल छोड़ दिया गया और जो आदमी जिस काम के लायक ठीक जान पड़ा उसे वही काम दिया गया। गांवों में भी कुछ ऐसे विश्वासपात्र मनुष्य नियत किये गये जो तमाम बातों की ख़बर पहाड़ियों में पहुंचाते रहें और वालंटियरों की हर तरह से सहायता करें।

पर एक सवाल बार बार सामने आता था कि बंदूकें कहां से आवें। एक दिन कप्तान मुनरो ने बातें करते हुये कहा—"बंदूकों की मुशकिल हर जगह है। जब मैं लाफ नाम के गांव में सङ्गठन करने गया तो देखा कि उन लोगों के पास एक भी बंदूक नहीं है। वे लोग पहाड़ी थे और ऐसे लम्बे चौड़े और जबर्दस्त थे कि उनका एक मामूली आदमी मुझे अपने हाथों से पीस सकता था। उनका नेता उस जिले का एक मशहूर और प्रभावशाली शख्श था, जो सच्चा देशभक्त था। पर मैंने देखा कि उसमें उत्साह की कमी है और वह इस काम को आगे नहीं बढ़ा सकता। उस ज़िले

के सेनापति की निगाह में एक दूसरा आदमी था जो इस काम को अच्छी तरह से कर सकता था। पर उसे डर था कि वर्तमान नेता के हटा देने से शायद वालंटियर नाराज हो जांय। इसलिये इस काम का जिम्मा मैंने अपने ऊपर लिया और उन लोगों से कहा कि मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूं जो तुमको बंदूकें दिला सकता है। इस पर वे राजी हो गये और पुराना नेता ख़ुशी से, कम से कम ऊपर से दिखाने के लिये, अपनी जगह से हट गया। नया आदमी हर तरह से योग्य साबित हुआ और इस समय लाफ का वालंटियर दल देश भर में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध और हथियारबंद है।"

इस तरह के क़िस्सों से ऐसा उत्साह पैदा होता था कि जैसा बड़े बड़े जोशीले व्याख्यानों से भी नहीं हो सकता। मेलार्न वाले सोचते थे कि हमारी हालत भी उन पहाड़ी लोगों से मिलती हुई है। अब वे अपनी लापरवाही पर बहुत पछताते थे कि हमको पहिले से ख़याल न आया और हमने अपने यहां की बन्दूकों के लेने की कोशिश न की, जिनको बाद में सरकारी सेना वाले ले गये। तो भी ये लोग बिलकुल नाउम्मेद नहीं हुये थे और हर एक वालण्टियर का विश्वास था कि अगर मौका लगे तो जो काम उन पहाड़ी आदमियों ने किया वह हम भी करके दिखला सकते हैं।

जब कप्तान मुनरो मेलार्न के वालण्टियर दल का संगठन करके दूसरी जगह को रवाना हुआ तो उसके दिल में इस बात का विश्वास था कि यहां वाले अपनी पूरी ताकत से काम करेंगे

और कुछ न कुछ कर दिखलावेंगे। ख़ास कर कप्तान फोयले के ऊपर उसे बड़ा भरोसा था और वह जानता था कि जब इन जवानों का नया जोश ठंडा पड़ जायगा और भयंकर कठिनाइयों तथा भय का सामना करना पड़ेगा तो फोयले ही उनके साहस को क़ायम रख सकेगा।

× × × ×

मेलार्न में एक नया जमाना शुरू हुआ। अब लोग बहस मुवाहिसे में वक्त खराब नहीं करते थे। जो लोग लड़ने भिड़ने के नाकाबिल थे वे घरों में रह कर ही हर तरह से वालण्टियरों की सहायता करते थे। उधर वालण्टियरों ने भी अपना काम शुरू कर दिया। रास्ते के बीच में खाई खोद कर सरकारी फौजों को रोक देना, सड़कों पर पेड़ काट कर गिरा देना, तारों को काट डालना और तार के खम्भों तोड़ देना वगैरह उनके रोज के काम थे। इन कामों में सिवा थोड़े से मामूली औजारों के और किसी चीज़ की जरूरत न थी।

वे लोग डाक को लूट लेते थे और हथियारों के लिए राज-भक्त लोगों के मकानों पर हमला करते थे। एक दिन उन्होंने मेलार्न की पुलिस चौकी पर अचानक हमला किया और एक बम भीतर फेंक कर चले आये। यद्यपि इस बम से ज्यादा नुकसान नहीं हुआ पर लोगों में इससे बड़ा जोश फैल गया और इस जिले के अख़-बार में यह ख़बर बड़े बड़े हैडिंग देकर प्रकाशित की गई।

फोयले का इरादा था कि गश्त लगाने वाले सरकारी सिपाहियों पर छापा मार कर उनकी बन्दूकें छीनी जायँ। क्योंकि बिना फौजी बन्दूकों के वे दुश्मन का मुकाबला नहीं कर सकते थे। इस काम के लिये चुने हुये वालंटियरों का एक दल तैयार किया गया। केसी का नाम भी इन लोगों में था और उसने इस काम को बड़ी खुशी से मंजूर किया। उसको डर था कि शायद ज्यादा उम्र होने के कारण या पढ़ा लिखा आदमी समझ कर उसको इस दल में न रखा जायगा। अगर ऐसा होता तो केसी को बड़ा रंज होता। क्योंकि उस दल में कितने ही लोग ऐसे थे जिनको उसने पढ़ाया था और उनके सामने वह हरगिज पीछे नहीं रहना चाहता था।

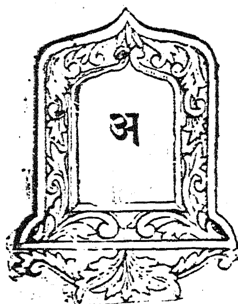
गश्त लगाने वाले सिपाहियों की तलाश में इन लोगों को घंटों तक छुपे बैठे रहना पड़ता था। एक दल के बाद दूसरा दल उसकी जगह पर बैठता। इस तरह खाली बैठे बैठे लोग बहुत थक जाते थे, तो भी कोई और उपाय न था। कभी कभी वे लोग पीछे से सरकारी सेना वालों पर गोलियां चला देते थे, पर उसके बाद फौरन ही पहाड़ियों में भाग जाते थे। उनके पास न तो इतना सामान था न वे इतने होशियार थे कि सरकारी फौज वालों के सामने ठहर कर लड़ सकें। तो भी जब सरकारी सिपाहियों की तादाद कम होती थी तो वे उनको दबा लेते थे। एक दिन उन्होंने पुलिस वालों से दो बंदूकें छीन लीं। पर लौटते समय उनको बड़ी कठिनाई पड़ी और उनके दो आदमी सख्त

घायल हो गये। इनमें से एक वालंटियर जिसका नाम टाम गैनन था दो तीन घंटे बाद मर गया। तमाम लोगों को अपने एक साथी के मरने से बड़ा रंज हुआ क्योंकि इस तरह का यह पहिला ही मौका था। रात के समय उन्होंने टाम गैनन के मुर्दा शरीर को कब्र खोद कर गाड़ दिया। सब लोग शांत तथा गम्भीर भाव से कब्र के चारों तरफ खड़े थे। ऊपर से थोड़ी थोड़ी बूंदें भी गिर रही थीं। उस समय फादर पेमन ने अंतिम प्रार्थना पढ़ी। उसकी आवाज से स्वाभिमान और दुःख दोनों तरह के भाव प्रकट हो रहे थे।

नेड गैनन, मरने वाले वालंटियर का भाई था। उसने कब्र के ऊपर एक शब्द भी मुंह से नहीं निकाला। पर जब वे लौट कर अपने पड़ाव में पहुंचे और नेड गैनन ने देखा कि सब लोग सहानुभूति के साथ उसकी तरफ देख रहे हैं तो उसने कहाः—"भाइयो, हमें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि अभी हम इतने आदमी दुश्मन का मुकाबला करने को मौजूद हैं। टाम देश के लिये मरा है और उसके कारण हमको बंदूकें भी मिली हैं इस लिये रंज करने की कोई जरूरत नहीं।"

कप्तान फोयले ने गम्भीरता से सिर हिला कर कहा "हां, बंदूकें तो मिलने लगी हैं।"

सरकारी सेना पर छापा ।



अब धीरे धीरे मेलार्न गांव का महत्व बढ़ने लगा । डबलिन के दैनिक पत्रों में भी कभी कभी मेलार्न का नाम छप जाता था । इस बीच में वहां पर अंगरेजों के चार सिपाही मारे जा चुके थे; बहुत से घायल हुये थे; फौज और पुलिस वालों के हथियार छीने गये थे; सड़कें तथा तार बार बार काट डाले जाते थे । यद्यपि समस्त देश की निगाह से ये बातें साधारण थीं; पर जिले के लोगों और वहां के सेनापति को इन पर काफी गर्व था । उस जिले के सरकारी सेनापति को अपनी रिपोर्ट में मेलार्न का जिक्र हमेशा करना पड़ता था और छोटे अफसर भी इस मामले को बेचैनी और जिम्मेदारी की निगाह से देखते थे ।

अब पहाड़ियों में फोयले के वालंटियरों की तादाद ४२ तक पहुंच गई थी । इसलिये उनका संगठन फिर से किया जाना जरूरी था । कई नये अफ़सर नियत किये गये और चौकीदारी का इंतजाम पहिले से ज्यादा मज़बूत किया गया । वालंटियरों में से पांच आदमी घायल और बीमार हो गये थे, उनका इंतजाम

करने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। यह देखकर फादर एमन और दूसरे गांव वालों ने उनका प्रबन्ध अपने ऊपर लेकर लड़ने वालों का बोझ हलका कर दिया।

टाम गैनन की मृत्यु से वालंटियरों का गुस्सा बहुत बढ़ गया था और सब की राय थी कि मेलार्न की पुलिस चौकी को बर्बाद करके इसका बदला लेना चाहिये। इस समय उनके पास छैं फौजी बंदूकें, ग्यारह छर्रेदार बंदूकें और पांच पिस्तौलें थीं। उनका खयाल था कि इतने हथियारों से हम दुश्मन को अच्छी तरह नीचा दिखा सकते हैं। कप्तान फोयले भी हमला करने के विरुद्ध नहीं था, पर उसकी राय में अभी हथियारों की कमी थी। उसका कहना था कि जब तक हमारे पास काफी सामान न हो तब तक फिजूल में अपनी गोली बारूद को खर्च करना मुनासिब नहीं। पर उसके बहुत से साथियों का आग्रह इतना बढ़ा हुआ था, कि बजाय उनको दबाकर रखने के उसने यही अच्छा समझा कि उनकी बात को थोड़ा बहुत मान लिया जाय। इसलिये उसने लोगों को इस बात पर राजी किया कि चौकी पर पास जाकर हमला न किया जाय, बल्कि दूर से गोलियां चलाकर सरकारी सेना वालों को धोखे में डाला जाय।

× × ×

वह रात मेलार्न के रहने वालों के लिये बड़े भय की थी। रात भर कोई आदमी न सो सका। ज्योंही राष्ट्रीय सेना वालों की तीन चार टोलियों ने छुपे हुए मुकामों से कुछ गोलियां

चलाईं कि तमाम सरकारी सेना में खलबली मच गई। घंटे भर के भीतर ही पुलनमोर और बैलून की छावनियों से अँगरेज सिपाही आ पहुंचे। सिपाहियों के दल के दल तमाम रात सड़कों पर घूमते रहे और जहां जरा भी शक होता था वे बंदूकों और मशीनगनों से गोलियों की वर्षा करने लगते थे। एक जगह सिपाहियों की गड़बड़ के सबब से एक सोता हुआ बकरा भड़क गया। बकरा बड़ा भारी था, उसने गुस्से में भरकर एक मोटे अँगरेज सारजंट की तोंद में ऐसे जोरसे टक्कर मारी कि सारजंट साहब वहीं अंटाचित हो गये। सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को रोका और बकरे को संगीनों से मार डाला। उस रात को सिवा उस 'देशभक्त' बकरे के और कोई मरा गिरा नहीं, पर सुवह के वक्त पुलिस की चौकी और उसके आस पास के मकानों पर गोलियों के निशानों और टूटी हुई खिड़कियों को देखने से ऐसा मालूम होता था कि यहां पर कोई बड़ी भारी लड़ाई हुई है।

राष्ट्रीय सेना के वालंटियर अपने उद्देश्य को सफल होता देखकर बहुत खुश हुये। उन्होंने दुश्मन की एक बड़ी सेना को रात भर परेशान रखा और उसका सैकड़ों मन गोली बरूद खर्च करा दिया। अंगरेजी सेना विभाग ने इस घटना का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ा कर अखबारों में प्रकाशित कराया। उसके ऊपर मोटे मोटे अक्षरों में लिखा था 'मेलार्न की पुलिस चौकी पर भयंकर आक्रमण।' उस सूचना में यह भी लिखा था कि-"हमारी (अंगरेजी

सिपाहियों की) गोलियों से कितने ही बाग़ी गिरते दिखलाई दिये । हमारा कुछ नुकसान नहीं हुआ ।" इन बातों को पढ़कर सब वालंटियर खूब हँसते रहे ।

× × ×

उधर फोयले गोली बारूद की कमी के कारण बड़े सोच में पड़ा हुआ था । बहुत कुछ विचार करने के बाद उसने तय किया कि सरकारी सेना पर एक बार ऐसा हमला करना चाहिये कि जिससे दुश्मन को गहरी चोट लगे और साथ ही हमको कुछ मसाला भी मिले । उसने अच्छी तरह देख लिया था कि वालंटियरों का रहन सहन सब तरह से ठीक है और वे कवायद परेड बड़े शौक से करते हैं । जैसे जैसे मुसीबतें झेलनी पड़ती थीं, उनकी मजबूती बढ़ रही थी । यह बात ठीक थी कि उन लोगों को लड़ाई का अभ्यास न था, पर उनमें जोश इतना ज्यादा था और वे लड़ने के लिये ऐसे उतावले हो रहे थे कि अभ्यास की कमी कोई बड़ी बात न थी ।

धीरे धीरे हमले की तैयारी की जाने लगी । कुछ ऐसे मुकाम तलाश किये गये जहां से दुश्मन पर छापा मारकर फौरन पहाड़ियों के भीतर छुपा जा सके । तैयारी का काम बड़ी छुपी तौर पर किया जाता था और किसी बाहरी आदमी को उसकी जरा भी ख़बर न थी । जो लोग घरों में रहकर वालंटियरों की मदद करते थे और जिनसे समय पड़ने पर लड़ने के काम में मदद ली जाती थी उनको भी बहुत थोड़ा हाल बतलाया गया । क्योंकि

इस बात का डर था कि अगर तैयारी की बात बहुत लोगों को मालूम हो जायगी तो कोई न कोई बातूनी आदमी उसे चारों तरफ फैला देगा।

यह समझना ग़लत है कि इस वालंटियर दल के संगठन में कोई दोष न था। यह बात भी न थी कि तमाम आदमियों में लड़ने का एक सा जोश था। एक आदमी से दूसरे आदमी के स्वभाव में बड़ा अंतर था और आज्ञापालन का भाव भी अभी बहुत मजबूत नहीं हुआ था। कभी कभी आपस में चढ़ाऊपरी का भाव भी देखने में आता था। सब लोग बहस मुवाहिसे में खुल कर भाग लेते थे और आपस में कोई बात छुपाई नहीं जाती थी। हर एक आदमी के गुण और दोषों की खरी आलोचना की जाती थी। कप्तान फोयले सब लोगों की सलाह सुनता था पर आखिरी फैसला करने का अखतियार उसने अपने ही हाथ में रखा था। उसे भरोसा था कि समय पड़ने पर सब लोग उसके हुक्म को बिना उज्र के मान लेंगे।

हमला करने के लिये राष्ट्रीय सेनावालों की तरकीब यह थी कि बारह या चौदह आदमियों का एक दल एक छुपे हुये मुकाम पर हमेशा बैठा रहता था। बाकी लोग थोड़ी दूर पर पहाड़ियों के बीच में छुपे रहते थे। कुछ घंटे के बाद एक नया दल भेजा जाता था, जो पहिले दल को आराम के लिये भेज कर उसी मुकाम पर छुप कर बैठ जाता था। हर एक आदमी के जिम्मे अलग अलग काम बटा हुआ था। एक ऊंची और छुपी हुई

जगह पर एक आदमी बैठा हुआ दूरबीन से चारों तरफ़ शत्रुओं की सेना के आने जाने को देखता रहता था। यह दूरबीन भी अंगरेज़ी सिपाहियों से छीनीं गई थी।

पर अब सरकारी सेना पहाड़ियों की तरफ़ आने की हिम्मत बहुत कम करती थी। उसका ज़ोर मैदान में बसे हुये गांवों में ही था और वहीं पर अंगरेज़ सिपाही लोगों को पकड़ते धकड़ते रहते थे इसके सिवा वे गांव वालों को बेगार में पकड़ कर टूटी हुई सड़कों और तारों की मरम्मत भी कराते थे। आज कल वे लोग अक्सर बड़ी तादाद में ही बाहर निकलते थे, कभी कभी कुछ लोग मोटर गाड़ी में बैठ कर भी चले जाते थे।

फोयल का इरादा था कि इस तरह की किसी अकेली मोटर पर हमला किया जाय। पर ऐसा मौका कितने ही दिनों तक हाथ न लगा। वालंटियर लोग घंटों तक छुपे पड़े रहते थे और उनके कपड़े ओस से तर होजाते थे। उनके सामने से दुश्मन की सेना के दल के दल निकल जाते थे, पर उनमें से ऐसा कोई न होता था जिसे वे लोग हमला करके जीत सकते। फोयल चाहता था कि हमारा पहला हमला व्यर्थ न जाय। अगर इस हमले में कामयावी होती और कुछ सामान हाथ लगता तो इससे वालंटियरों की हिम्मत बढ़ जाती और वे दूसरी बार उससे बड़ा हमला कर सकते।

जैसे जैसे दिन गुजर रहे थे नाउम्मेदी बढ़ती जाती थी। वालंटियर भी कुछ नाराज होने लगे थे। नेडगैनन जो एक पारटी

का मुखिया था, बार बार गुस्से के साथ कहा करता कि- "कप्तान, इस तरह पड़े रहना तो अच्छा नहीं लगता। कभी कभी इन बदमाश सिपाहियों पर दोचार गोली चलादी जाया करें तो जरा खून तो गर्म रहे।"

पर कप्तान अपने इरादे पर जमा हुआ था। अंत में एक दिन उसके मन के माफिक मौका आया। मेलार्न से आने वाली सड़क पहाड़ी के पास आकर दो हिस्सों में बँट जाती थी। एक रास्ता पुलनमोर के कस्बे को जाता था और दूसरा बैलून के कस्बे को। जहां पर ये दोनों सड़कें फटती थीं वहीं पर पहाड़ी के ऊपर एक पुराने किले का खण्डहर था। इस जगह से पास ही एक घना जङ्गल था जिसमें छुपने का बड़ा सुभीता था।

उस दिन करीब चार बजे शाम को राष्ट्रीय सेना के पहरे वाले ने दूरबीन से देखा कि एक मोटरलारी मेलार्न की तरफ से चली आरही है। उस समय वहां पर सिर्फ दस वालंटियर मौजूद थे। फौरन सब लोगों को अलग अलग हिस्सों में बांट दिया गया। एक आदमी लौटने के रास्ते की रखवाली करने को नियत किया गया, तीन आदमी किले के ऊपर चढ़ गये और बाकी आदमी एक लम्बी कतार बनाकर पेड़ों के पीछे छुप गये। कप्तान फोयले के हाथ में एक बम का गोला था और वह उसे चला कर लड़ाई का इशारा देने वाला था।

इतने में मोटरलारी पास आपहुंची। वह फौजी ढंग की गाड़ी थी और उसमें एक मशीनगन लगी हुई थी। जब गाड़ी

बिलकुल सामने आगई तो फोयले ने उसमें बम फेंक कर मारा, और उसी समय तमाम वालंटियर गोलियों की वर्षा करने लगे। अंगरेज सिपाही फौरन मोटर की दीवार की आड़ में छुप कर मशीनगन चलाने लगे और मोटर की चाल खूब तेज हो गई। फोयले ने समझा कि यह मौका हाथ से गया और उसे इतना दुःख हुआ कि वह जहां का तहां पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा रह गया। इतने में उसने देखा कि मोटर सड़क को छोड़ कर एक किनारे की तरफ जारही है। दूसरे ही क्षण में वह बड़े जोर से एक पेड़ के साथ टकराई और एक तरफ गिर पड़ी। वालंटियर कुछ देर तक ठहरे रहे, पर जब उन्होंने देखा कि मोटरलारी में से कोई बाहर नहीं आता तो वे उसके पास पहुंचे।

वहां जाकर उन्होंने बड़ा भयंकर दृश्य देखा। मोटर हांकने वाला बिलकुल मुर्दा था और उसके सिर में गोली लगने से खून बह रहा था। चार आदमी मरे हुये जान पड़ते थे और तीन कराह रहे थे। यद्यपि कई महीने से लड़ते भिड़ते रहने के कारण वालंटियरों के दिल कुछ सख्त हो गये थे, पर इन घायलों को देखकर उनको बड़ी दया आई। इतने में फोयले ने चिल्ला कर हुक्म दियाः—

"जल्दी से बंदूकों और दूसरी चीजों को लेजाओ। गैनन, तुम्हारे जिम्मे मशीनगन को लेजाने का काम है। जरा भी देर मत लगाओ, आध घंटे के भीतर सरकारी सेना आ पहुंचेगी।"

दस मिनट के भीतर वे लोग तमाम चीजों को उठाकर जंगल के भीतर ले गये। बीस मिनट के बाद सरकारी सेना की दूसरी मोटरें घटनास्थल पर आगईं। सिपाहियों ने उस मुकाम को चारों तरफ से घेर लिया और वे जंगल के भीतर घुसकर वालंटियरों को पकड़ने की कोशिश करने लगे। थोड़ी देर में अंधेरा हो गया और राष्ट्रीय सेना के वालंटियर अपने दूसरे साथियों से जा मिले। फायल और उसके साथियों को उस मुकाम की एक एक इंच जमीन का पता था और वे ऐसी जगह छुपकर बैठ गये जहां उनको कोई नहीं देख सकता था। उन्होंने लूटी हुई बन्दूकों और मशीनगन को वहीं पर छुपा दिया। सरकारी सेना बन्दूकें और मशीनगन चलाती हुई आरही थी पर वे चुपचाप बैठे रहे। थोड़ी देर बाद जब सिपाही बिलकुल पास आगये तो वालंटियर कई हिस्सों में बँट कर दूर दूर चले गये और बारी बारी से गोलियां चला कर और सिपाहियों को धोखा देकर इधर उधर दौड़ाने लगे। अंत में उन्होंने पीछे की तरफ से सरकारी सेना पर हमला किया और साफ बच कर निकल गये।

रात के दो बजे के बाद जब सरकारी सेना वालों ने देखा कि तमाम पक्षी जाल में से उड़ गये तो सब लोग रंजीदा होकर लौट गये। उनके बहुत से आदमी घायल हुये थे और कुछ मरे भी थे। राष्ट्रीय सेना का केवल एक आदमी गिरने से पैर में चोट लग कर घायल हुआ था।

मशीनगन को पाकर राष्ट्रीय सेना वालों को बड़ी खुशी हुई उस जिले के सेनापति ने दो तीन दिन में ही एक ख़ास अफ़सर उसकी जांच करने और उसे काम के लायक बनाने को भेजा। वह अफ़सर भी इस काम को पाकर बड़ा खुश हुआ। क्योंकि अबतक उस जिले की राष्ट्रीय सेना के पास एक भी मशीनगन नहीं थी और उस अफ़सर को इस बात की खुशी थी कि अंत में उसको भी एक काम मिला।



राष्ट्रीय सेना का घेरा



अंग्रेजी सेना पर छापा मारने की घटना सरकारी सैंसर के फंदे से निकल कर आयरलैण्ड के तमाम अखबारों में प्रकाशित हो गई। अंगरेज अफ़सरों ने अपनी रिपोर्ट में दो सिपाहियों का मरना और दो का घायल होना मंजूर किया था। पर मेलार्न के आस पास रहने वाले इस रिपोर्ट को बिलकुल गलत बतलाते थे और कहते थे कि उन्होंने अपनी आंखों से तीन मोटरलारियां मुर्दों से भरी देखी थीं। पर असल में सरकारी रिपोर्ट और लोगों में फैली हुई ख़बर दोनों में से एक भी बात ठीक न थी।

सब लोगों में इस बात का डर फैला हुआ था कि इस घटना के बदले में सरकारी सेना वाले मेलार्न निवासियों को बहुत तंग करेंगे। मजा यह था कि यह डर घर में ठहरे हुये लोगों को उतना ज्यादा न था जितना कि पहाड़ियों में छुपे हुये लोगों के था। जब किसी किसान का घर आग लगा कर जला दिया जाता तो वह चुपचाप खड़ा हुआ तमाशा देखता रहता था, और अंगरेजों के लिये उसका गुस्सा और घृणा दुगनी होजाती थी।

अंगरेजी सिपाहियों ने हमले के मुकाम के पास रहने वाली कैफरी नामक बुढ़िया का झोंपड़ा जला दिया। उस बहादुर स्त्री ने इसकी कुछ परवा न की और अंगरेज अफसरों को उनके मुंह पर ही ऐसी खरीखोटी सुनाई जो उनको सदा याद रहा होगा। फौज वाले मेलार्म के डिनी मोरेन नामक दर्जी को पकड़ लेगये और फौजी अदालत में मुकदमे का तमाशा करके उसे गोली से मारने की सजा देदी। यद्यपि मोरेन का राष्ट्रीय सेना वालोंसे कुछ ताल्लुक न था, तभी अंगरेजों की निन्दा करने में उसकी जबान सदा कैंची की तरह चलती रहती थी। मौत की सज़ा को सुनकर वह घृणा और बेपरवाही के साथ हँसने लगा। गोली मारने वाले जब उसकी आंखों पर पट्टी बांधने लगे तो उसने इससे इनकार कर दिया और वह इस तरह हँसते हुये मरा जैसे कोई बड़ा मजाक हो रहा हो। पहाड़ियों में रहने वाले वालंटियरों की जीत की खुशी इन जुलमों की ख़बरों से कुछ कम पड़ गई। उनको अंगरेजी सिपाहियों के ऊपर बड़ा गुस्सा आता था और जब कभी मौका लगता था वे उन पर गोलियां चला कर बदला लेते थे।

जो मशीनगन उन लोगों के हाथ लगी थी उसको कुछ वालंटियरों के साथ जिले के हेडकार्टर में भेजा गया। थोड़े ही दिन में वे लोग उसको काम में लाना सीख आये और उन्हीं दिनों में एक अंगरेजी सेना से भरी हुई रेलगाड़ी पर उससे खूब गोलाबारी की गई।

× × ×

इस समय कप्तान फोयले को मालूम हुआ कि अंगरेजी अफसर किसी बड़े हमले की तैयारी कर रहे हैं। यह ख़बर उसको अपने ही आदमियों से नहीं मिली थी, वरन् उस जिले के राष्ट्रीय सेनापति ने भी समाचार भेजा कि आस पास के मुकामों में सरकारी सेना बहुत बड़ी तादाद में इकट्ठी हो रही है। शुरू में तो यह एक मामूली बात जान पड़ी, पर धीरे धीरे खतरा बढ़ता गया। मालूम हुआ कि अंगरेजी सेना पहाड़ियों के उस तमाम सिलसिले को चारों तरफ से घेरती चली आती है। वह घेरा तीस मील से भी ज्यादा फैला हुआ था, और इसके भीतर मेलार्न वालों के सिवा राष्ट्रीय सेना के कई दल थे। इस तीस मील के बीच में जितने कस्बे और गांव थे उन सब में अंगरेजी सेना के जबर्दस्त अड्डे कायम किये गये। कुछ भीतर की तरफ चलकर फौजी चौकियों का एक घेरा बनाया गया, जिससे पहाड़ियों में से बाहर निकलने के तमाम रास्ते बन्द हो गये। इन चौकियों से आगे बढ़कर दूसरी नई चौकियां कायम की जाती थीं। इस तरह धीरे धीरे सेना का एक ऐसा जाल बनाया गया जिसके बीच से कोई बचकर न निकल सके।

शुरू में ही गांव और कस्बों के रहने वाले तमाम मर्द पकड़ लिये गये। उनमें से कुछ तो तलाशी और जांच करने के बाद छोड़ दिये गये और बहुत से सरकारी सेना की छावनी में भेज दिये गये, जहां उनका फैसला बाद में किया जाने वाला था।

घेरे की खबर मिलते ही राष्ट्रीय सेना वालों ने अपने उन तमाम साथियों को जो बीमारी या कमजोरी के कारण ज्यादा तकलीफ नहीं उठा सकते थे, रात के समय गांवों में भेज दिया। घायल आदमियों को ऐसे मुकामों में भेजा गया जहां वे हर तरह से सुरक्षित रह सकें। अब पहाड़ियों में सिर्फ चुने हुए और पक्के आदमी रह गये, जो दुश्मन का मुकाबला करने को हर तरह से तैयार थे।

इसके बाद जब घेरा आगे बढ़ने लगा, पर अधूरी हालत में और छितरा हुआ था, उस समय राष्ट्रीय सेना के कई दल उसको तोड़कर बाहर निकल गये। सरकारी सेना ने उनका पीछा किया, पर उसका मुकाबला करने को राष्ट्रीय वालंटियरों का एक दल रास्ते में छुपा बैठा था और उसने ऐसे जोर से हमला किया कि सिपाहियों को भागना ही पड़ा।

पर मेलार्न वालों की हालत कुछ दूसरी तरह की थी। उनके दक्खिन और उत्तर दोनों तरफ के रास्ते इस तरह रोक दिये गये थे कि बाहर निकल सकना बिलकुल नामुमकिन था। चारों तरफ अंगरेजी फौज की चौकियां क़ायम थीं और हर रोज नई नई चौकियां बनाई जाती थीं। हर जगह मशीनगनें लगी हुई थीं और जरा भी शक होने पर गोलियां चलने लगती थीं। रात के समय चारों तरफ सर्चलाइट की रोशनी फिरती रहती थी जिसे देखकर मज़बूत से मज़बूत आदमी का कलेजा भी दहल जाता था।

दिन पर दिन अंगरेजी सेना का घेरा छोटा होता जाता था और पास आ रहा था। राष्ट्रीय सेना वालों ने अपने आदमियों को कई जगहों में बांट दिया और उनको बार बार अपना मुकाम बदलना पड़ता था। जगह जगह पर दुश्मन के घेरे की जांच की जाती थी कि कहां पर उसे तोड़ा जा सकता है। हर रोज राष्ट्रीय सेना वालों की कमेटी होती थी, जिसमें घेरे से बाहर जाने की तरकीब सोची जाती थी। इसी बीच में जिले के सेनापति का भेजा हुआ एक साहसी वालंटियर सरकारी सेना के घेरे में होकर भीतर घुस आया। सेनापति ने मेलार्न वालों को घेरा तोड़ने की एक तरकीब बतलाई थी और आग्रहपूर्वक कहलाया था कि जहां तक हो सके जल्दी सब लोग आकर उसकी सेना में शामिल हों।

सेनापति का संदेशा पाने से मेलार्न वालों को बहुत संतोष हुआ। वे खुद भी इस बात का इरादा कर चुके थे कि अब इस हालत में पड़े रहना ठीक नहीं। एक बार घेरे को तोड़ कर बाहर निकलने की कोशिश की जाय, फिर चाहे उसका नतीजा अच्छा हो या बुरा। उन्होंने देखा कि जैसे जैसे दुश्मन का भीतरी घेरा मजबूत हो रहा है और नजदीक आता जाता है; बाहरी घेरा कमजोर पड़ता जाता है और उसकी चौकियां एक दूसरे से दूर होती जाती हैं। वालंटियरों का विश्वास था कि अगर एक बार हम भीतरी घेरे को तोड़ कर निकल गये तो बाहरी घेरे से बचना ज्यादा मुशकिल नहीं है। इस समय अंगरेजी सिपाही पहाड़ियों पर चलते चलते थक भी गये थे और उनमें वह लापरवाही का

भाव भी पैदा होगया था जो एक बड़ी सेना को किसी छोटे दल के बारे में हुआ करता है। इन सब बातों पर विचार करके उन्होंने अगली रात को बाहर निकलने का पक्का इरादा किया और अपना तमाम ढंग और इंतजाम सेनापति के वालंटियर को समझा कर उसे वापस भेज दिया।

राष्ट्रीय सेना वालों ने बाहर निकलने का जो रास्ता सोचा था वह एक जंगली दलदल के बीच में होकर जाता था। शुरू में अंगरेजी सेना ने इस दलदल की तरफ काफी इंतजाम किया था। पर जब सिपाही लोग घुटने घुटने तक कीचड़ में फँस गये और कई मुकामों पर पानी से भरे गड्ढों में गिर गये, तो उन्होंने समझ लिया कि कुछ मुकामों को छोड़ कर इस दलदल में होकर बाहर आ सकना नामुमकिन है। इन मुकामों पर मजबूत चौकियां कायम करदी गई थीं। पर असल में वह दलदल वैसा भयंकर नहीं था जैसा अंगरेज सिपाहियों ने उसे समझ लिया था। खास कर एक ऐसे आदमी के वास्ते जो अपनी जान बचाने के लिये सब कुछ करने को तैयार हो और जिसकी तमाम उम्र उसी जङ्गल में फिरते फिरते बीती हो, उसका पार कर सकना कुछ भी मुशकिल न था। कप्तान फोयले और उसके साथी उस जङ्गली दलदल की इंच इंच भर जमीन को अच्छी तरह से जानते थे।

दूसरे दिन रात के समय जब काफी अंधेरा होगया मेलार्न के चालीस वीर धीरे धीरे अंगरेजी सेना के घेरे की तरफ चले। जब वे अँगरेजी सिपाहियों से दो तीन सौ गज दूर रह गये तो

चौकियां बाकी थीं। धीरे धीरे वालंटियरों का पहिला दल उस घेरे के भी बाहर निकल आया और एक पहाड़ी टीले की ओट में जा पहुंचा। इस समय कहीं दुश्मन का पता न था। इतने में टामी मुलन पीछे से दौड़ता हुआ आया और उसके पीछे वालंटियरों का दूसरा दल था। दुश्मन के घेरे से बाहर आजाने की खुशी में मुलन होशियारी से चलना भूल गया और सरकारी सिपाहियों ने सर्चलाइट की रोशनी से उसे देख लिया। उसी समय मशीनगन की भयंकर तड़तड़ाहट सुनाई दी और टामी मुलन विना मुँह से आवाज निकाले गिर कर मर गया।

अब वालंटियरों के दूसरे दल को रास्ते में ही रुकना पड़ा। वे पहिले तो कुछ घबड़ाये, पर दूसरे ही क्षण छिपने के लिये आसपास की चट्टानों की तरफ दौड़े। अगर उनको छिपने में ज़रा भी देर हो जाती तो शायद एक भी आदमी जिन्दा न बचता। क्योंकि उसी समय दुश्मन की सेना उस मुकाम पर बंदूकों और मशीनगनों से गोलियों की वर्षा करने लगी। इन लोगों ने दुश्मन को जवाब देना चाहा, पर उनके छुपने की जगह ऐसी खराब थी कि वहाँ से उनकी गोलियों का सिपाहियों तक पहुंच सकना मुशकिल था। अब खतरा बहुत बढ़ गया और बचने की एक उम्मेद सिर्फ यही थी कि कप्तान फोयले लौट कर उनकी मदद करेगा। इसी उम्मेद पर उन्होंने अखीर तक जम कर लड़ने का पक्का इरादा कर लिया।

सरकारी सेना की गोलियां बहुत देर तक चलती रहीं। यकायक एक चट्टान के पीछे से किसी अजनबी शख्श की आवाज आईः-

"भाइयो, मैं तुम्हारा एक दोस्त हूँ। कैरट, इन दो मिनटों के भीतर मैं तुम पर दस बार निशाना लगा सकता था। अब तुम अपनी मशीनगन का निशाना उस सफेद टीले पर लगाओ और जोरों से गोलियों की वर्षा करो। मैं भी तुम्हारे पास आ रहा हूं, पर उस सफेद टीले के पास खड़े सिपाही मुझ पर निशाना लगा रहे हैं, इस लिये तुम फौरन उन पर मशीनगन चलाओ।"

जरा देर के लिये जेम्स केसी भौचक्का सा रह गया। पर उसकी यह हालत ज्यादा वक्त तक न रही और उसने समझ लिया कि इन शब्दों का कहने वाला शख्श कोई भी हो, वह हमारा दोस्त है। क्योंकि सचमुच वह उस तरफ से, जिधर से आवाज आई थी, कुछ दिखलाई पड़ता था। उसी समय सरकारी सेना की वर्दी पहिने हुये एक शख्श उनकी तरफ आता दिखलाई दिया। उसके एक कंधे पर मशीनगन रखी थी और दूसरे कंधे में बंदूक लटक रही थी। वह जल्दी जल्दी एक जगह से दूसरी जगह कूदता और छिपता हुआ उनके पास आ रहा था। केसी सोचने लगा कि आखिर यह शख्श कौन है और इसका मतलब क्या है? तोभी उसने अपने संदेह को दबा कर

सफेद टीले की तरफ मशीनगन चलाई। पर उसका दिल धड़क रहा था कि कहीं यह धोखा न देता हो।

उस अजनबी ने फिर कहा—"अब तुम लोग दौड़ कर उस बड़े टीले की तरफ जाओ। मैं सिपाहियों पर गोली चला कर तुम्हारा बचाव करूंगा। जब तुम किसी हिफाजत की जगह में पहुंच जाओ तो सरकारी सेना पर गोली चला कर मेरा बचाव करना। याद रखना कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।"

इसी समय सफेद टीले की तरफ से सरकारी सेना की मशीनगन चलने की आवाज आई। अब केसी को उस अजनबी की बात पर कुछ शक बाकी न रहा और उसने अपने आदमियों को बड़े पहाड़ी टीले की तरफ दौड़ कर जाने का हुकुम दिया। कुछ ही मिनट में वे लोग सकुशल उस टीले के पीछे जा पहुँचे। वहां पर कप्तान फोयले उनकी राह देख रहा था। केसी ने जल्दी से उसको दो एक बातें समझाईं और वे सब मिल कर सरकारी सेना की तरफ गोली चलाने लगे। दो तीन मिनट के बाद ही वह अजनबी दौड़ता हुआ उनके पास चला आया।

इस वक्त किसी को इतनी फुरसत न थी कि उस अजनबी से कुछ पूछताछ की जाती। क्योंकि सरकारी सेना गोलियां चलाती हुई बराबर पीछा कर रही थी। इस लिये राष्ट्रीय सेना वाले तेजी के साथ आगे बढ़े। इस रास्ते का पता अपने वालंटियर के जरिये बड़े सेनापति को लग चुका था, और उसने जगह

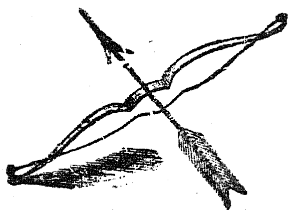
जगह मेलार्न वालों की मदद के लिये अपने आदमी छुपा रखे थे। जैसे ही सरकारी सेना पीछा करती कुछ दूर निकल आई इन छुपे हुये लोगों ने हर तरफ से उस पर गोली चलाना शुरू किया। करीब आध घंटे तक लड़ाई होती रही जिसमें अंगरेजों के कितने ही सिपाही मरे और घायल हुये। तब वे लोग भाग खड़े हुये।

इधर कप्तान फोयले और उसके साथी पहाड़ियों और जङ्गलों में होकर आगे बढ़ते गये। कुछ घंटे बाद वे कारिङ्ग नामक मुकाम पर, जहां इस समय जिले के सेनापति का हैडकार्टर उठकर चला आया था, जा पहुंचे। यहां पर उनका स्वागत करने को सेनापति खुद मौजूद था और खाने पीने का बहुत अच्छा इंतजाम किया गया था। वह अजनवी भी मेलार्न वालों के साथ था और सब लोग उसे बड़े ताज्जुब की निगाह से देख रहे थे। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि उस दिन उसकी मदद से ही उन पंद्रह वालंटियरों के प्राण बच सके थे। इसके सिवा और भी कुछ बात ऐसी मालूम हुई जिनसे सबको एतबार हो गया कि वह एक विचित्र आदमी है। दूसरे दिन जब सेनापति वहां आया तो वह उसके सामने फौजी कायदे से खड़ा हो गया और सलाम करके बोलाः-

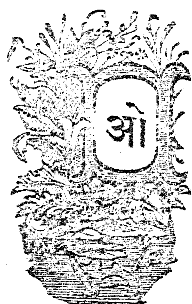
"मैं समझता हूँ कि आप इस फौज के कर्नल हैं। मैं भी इस झुण्ड में शामिल होना चाहता हूं। आप महरबानी करके कार्टर-मास्टर से कहदें कि वह मेरे लिये एक बर्दी तैयार करदे। मेरी बर्दी यहां के लायक नहीं है।" कुछ ठहर कर उसने फिर कहा-

आप रजिस्टर में मेरा नाम ओहारा लिख सकते हैं, मैं कार्क जिले का रहने वाला हूं।"

उधर अंगरेजी सेना पहाड़ियों का घेरा डाले पड़ी थी। दूसरे दिन जब सिपाही तलाश करने लगे तो देखा कि वहां एक बच्चा भी नहीं है। केवल चालीस जोड़े जूते, कुछ कपड़े और भोजन का थोड़ा सा सामान उनके हाथ लगा।



ओहारा की वीरता।



हारा के बारे में राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों में बड़ी चर्चा होती रहती थी। किसी को उसका असली हाल मालूम न था। वे सिर्फ इतना जानते थे कि वह अंगरेजी फौज में से भाग कर आया है। कुछ लोग यह भी कहते थे कि फौज में से आते समय उसने एक गोलंदाज को मार कर उससे मशीनगन छीन ली थी। पर ओहारा अपने बारे में बहुत कम बात करता था और उसने अपना पूरा हाल सिर्फ बड़े सेनापति को ही बतलाया था। सेनापति ने सब बातें लिख कर डबलिन के हैडक्वार्टर में भेज दीं। डबलिन के नेताओं ने उसको राष्ट्रीय वालंटियरों में शामिल करने की मंजूरी दे दी और वह कप्तान फोयले की आधीनता में सिपाही बना दिया गया।

इसी बीच में ओहारा वालंटियरों में सर्वप्रिय हो गया था। खास कर फादर एमन के साथ धर्म के विषय में उसकी बहुत बहस हुआ करती थी। फादर एमन उसकी बातों को बहुत गौर के साथ सुना करता और उसके अजीब अजीब सवालों का यथा-

शक्ति पूरा उत्तर देने की कोशिश करना था। उसने अनुभव किया कि अगर्चे ओहारा एक अनपढ़ सिपाही है और उम्र भर लड़ने भिड़ने के कारण उसके कोमलता और दया के भाव बिलकुल नष्ट होगये हैं, तो भी उसमें सचाई कूट कूट कर भरी है, वह एक बालक की तरह निष्पाप है और बराबर इंसाफ के रास्ते पर चलने की कोशिश करता रहता है।

वालंटियर भी उसको बड़ी इज्जत की निगाह से देखते थे। वह सदा हर एक काम करने को तैयार रहता था, कभी लगी लिपटी बात नहीं करता था और उसमें डर का नाम भी न था। सब कोई उसे आयरलैण्ड का रहने वाला ही समझते थे, अगर्चे बातचीत करते समय वह कितने ही देशों के मुहावरे बोलता जाता था। एक बार उसने अपनी जिन्दगी का कुछ हाल इस तरह बतलाया:—

"मैं करीब नौ बड़ी बड़ी लड़ाइयों में हिस्सा ले चुका हूं। मेरा बाप आयरलैण्ड के कार्क जिले का रहने वाला था। वह छै बड़ी बड़ी लड़ाइयों में लड़ कर मैक्सिको में मारा गया। मेरे तीन भाई जर्मनी की लड़ाई में अंगरेजों की तरफ से लड़ते हुये काम आये। मैं भी जर्मनी की लड़ाई में कितने ही महीनों तक सफेद और काले आदमियों से लड़ा था। मैं चीन में भी अंगरेजों की तरफ से लड़ा था। उसके बाद मैंने रूस वालों के साथ मिल कर जापानियों से युद्ध किया। उत्तरी अफ़रीका की लड़ाई में भी मैं शामिल था और कुछ दिनों तक अमरीका की फौज में काम

कर चुका हूँ । मेरी तमाम उम्र युद्ध करने में ही खत्म हुई है और विना लड़े मुझे चैन नहीं पड़ता । पर इतना ख़याल मुझे जरूर रहता है कि मैं न्याय और सचाई का पक्ष लूं । मैं जुआ नहीं खेलता, न शराब पीता हूं और न कभी औरतों के झगड़े में पड़ता हूं । मैं आयरलैंण्ड में अंगरेजों की तरफ से लड़ने को क्यों आया इसमें भी एक भेद है । सन् १९१९ में मैंने अमरीका की फौज में से नाम कटा लिया और आयरलैंण्ड आकर यहां की राष्ट्रीय सेना में भरती होने की कोशिश करने लगा । पर इस काम में मुझे कामयाबी न हो सकी । राष्ट्रीय सेना वालों ने मुझे संदेह की निगाह से देखा । मुझे उनकी यह बात बहुत बुरी लगी और मैं रंजीदा होकर इंगलैंण्ड लौट गया । वहां मुझे कुछ पुराने साथी मिले और उनके कहने से मैं अंगरेजी सेना में भरती होगया । कुछ समय बाद हमारी पलटन आयरलैंण्ड को भेजी गई । हमारा हैड-कार्टर पुलनमोर में था । शुरू में मुझे राष्ट्रीय सेना वालों पर बड़ा गुस्सा था और मैंने उनको अच्छी तरह से मारने का इरादा कर लिया था । पर जब मैंने इन लोगों के कामों और हिम्मत को देखा तो मेरा ख़याल बदलने लगा । खासकर जब हमारी पलटन ने मेलार्न पर हमला किया और वहां का स्कूल मास्टर, जिसका चेहरा कागज की तरह सफेद था, अंगरेजी सिपाहियों को मार कर भाग गया, तब मेरे ऊपर बड़ा असर पड़ा । उस वक्त मैं पास ही खड़ा था और चाहता तो भागते समय उसको मार सकता था । पर उस दिन अपनी तमाम उम्र में पहिली बार मैंने

एक सिपाही की हैसियत से अपना फर्ज अदा नहीं किया। मैंने जान बूझ कर आठ दस फैर ग़लत किये। इसके बाद जैसे जैसे सरकारी सेना वालों के दुष्कर्म मेरे सामने आते गये और आम लोगों पर मैंने उनको हद दरजे का जुलम करते देखा तो उनसे मुझे बड़ी नफ़रत हो गई। तब मैंने समझा कि मैं अन्याय का पक्ष लेकर लड़ रहा हूं। अन्त में जिस दिन मैंने दर्जी मोरेन को हँसते हुए गोली से मरते देखा उस दिन मैंने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो मुझे राष्ट्रीय सेना में शामिल होना चाहिये। यद्यपि मैं आयरलैण्ड में पैदा नहीं हुआ, पर मेरा बाप यहीं पर पैदा हुआ था और मैं आयरलैण्ड को ही अपना देश मानता हूं। अब मेरी इच्छा पूरी हो गई और मैं तुम लोगों के पास मौजूद हूं।"

सचमुच इस समय वह बहुत संतुष्ट और खुश था। वह रात दिन कड़े से कड़ा काम करने को तैयार रहता था और साथ ही चुटकियां लेकर और मजाक करके सबको हँसाता भी रहता था। वह हमेशा शांत रहता था और कैसा भी ख़तरा क्यों न आजाय कभी घबड़ाता न था।

× × ×

अब फोयले का दर्जा बढ़ा दिया गया और उसका दल भी पहिले से बड़ा और हथियारों से लैस हो गया। कुछ दिनों बाद वे अपने जिले में लौट आये और फिर अपना पुराना काम करने लगे। ये लोग सड़कों को बराबर काटते रहते थे या इस तरह रोक देते थे कि उन पर सफर कर सकना नामुमकिन हो जाता

था। तार बार बार काट डाले जाते थे, डाक लूट ली जाती थी और जरा सा मौका लगते ही सरकारी सेना के इधर उधर जाते हुये सिपाहियों पर गोलियां चलाई जाती थीं। सरकारी फौज की चौकियों पर हमला करना भी एक मामूली बात थी। राष्ट्रीय सेना वालों का जोर यहां तक बढ़ा कि अंत में सरकारी सेना वाले धीरे धीरे उस जिले को छोड़ने लगे। इन वालंटियरों का मुख्य सिद्धान्त यह था कि हर तरह से अंगरेजी सेना को तंग करना और उसे नुकसान पहुँचाना, पर सामने जमकर कभी न लड़ना। क्योंकि बाकायदा सामने लड़कर अंगरेजों से जीत सकना इन लोगों के लिये नामुमकिन था।

इस समय राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों को बहुत ज्यादा मिहनत करनी पड़ती थी और उनमें से कितने ही अधिक परिश्रम के कारण बीमार पड़ गये। घायलों और बीमारों की देख रेख करना और मरने वालों को गाड़ना भी एक बड़ा काम था, और कभी कभी कठिनाइयां इतनी बढ़ जाती थीं कि पक्के से पक्का आदमी भी नाउम्मेद होकर बैठ जाता था।

पर दुश्मन की हालत इससे भी ख़राब थी। धीरे धीरे अंगरेजी सिपाहियों की हिम्मत टूटती जाती थी। इधर बराबर तकलीफें सहने के कारण उस जिले के तमाम निवासी पक्के हो गये और अब वे सिपाहियों के हमलों और जुल्मों से जरा भी न डरते थे। इस समय उस जिले की तमाम रैयत एक दिल से छुपे तौर पर राष्ट्रीय सेना वालों की मदद करती थी।

४

कुछ ही दिनों में सरकारी सेना का एक बड़ा हिस्सा मेलार्न और आस पास के गावों को छोड़कर दूसरे जिलों में चला गया जहां उनको कामयाबी की ज्यादा उम्मेद थी। अब सिर्फ पुलनमोर की छावनी में अंगरेजी सेना का जोर था, जहां से जरूरत पड़ने पर वे मेलार्न भेजे जा सकते थे। मेलार्न की पुलिस चौकी में भी थोड़े से अंगरेज और आयरिश सिपाही रहा करते थे। पर अब वे राष्ट्रीय सेना वालों से ऐसा डरते थे कि दिन के वक्त भी बहुत कम बाहर निकलते थे। पुलिस की चौकी को चारों ओर से कांटेदार तारों से घेर दिया गया था और उसका लोहे का मज़-बूत फाटक रात दिन बंद रहता था।

अब राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों को कुछ चैन मिला। वे कभी कभी अपने घर वालों से मिलने को भी जाने लगे। उनका जाहिरा उद्देश्य तो महीनों के बिछुड़े हुए घर वालों से मुलाक़ात करना ही होता था, पर भीतर ही भीतर वे दुश्मन की हालत का पता भी लगाते थे और जिन मुक़ामों में अभी सरकारी सेना की चौकियां क़ायम थीं उन पर हमला करने की तरकीब सोचते थे।

× × ×

उसी जमाने की बात है कि एक दिन जेम्स केसी कुछ वालं-टियरों के साथ मेलार्न की तरफ जा रहा था। ओहारा भी उनके साथ था। वे लोग गांव से कुछ दूर थे कि किसी के चीखने की आवाज उनको सुनाई दी। यह आवाज राष्ट्रीय सेना की चौकी की तरफ से आई हुई जान पड़ती थी। केसी ने अपनी दूरबीन

निकाल कर देखा, पर कुछ दिखलाई न दिया। उसने कहाः—"हमको पीछे लौट कर देखना चाहिये कि मामला क्या है। यह आवाज जान होरन की चौकी की तरफ से आई हुई जान पड़ती है।"

ओहारा ने कहा—"मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि जान होरन को किसी ने मार दिया है।"

वे सब तेजी के साथ चौकी की तरफ जाने लगे। वे चारों तरफ निगाह डालते जाते थे कि कहीं पर दुश्मन छिपे न हों। यकायक ओहारा ने कहा—"अरे! जल्दी से छुपो।" यह कहकर वह झटपट एक चट्टान के पीछे छिप गया। दूसरे लोग भी उसकी देखादेखी पत्थरों की आड़ में बैठ गये।

"मामला क्या है?" केसी ने पूछा।

ओहारा की आंखें पुलनमोर की सड़क की तरफ लगी हुईं थीं। उसने हाथ बढ़ाकर केसी से कहाः—

"जरा अपनी दूरबीन मुझे दीजिये। मैं जानता हूं कि यह लंगड़ा कर चलने वाला आदमी सिवा 'ब्लैक जैक' के और कोई नहीं है। तो भी मैं शक दूर कर लेना चाहता हूं।"

केसी ने ताज्जुब से कहाः— "ब्लैक जैक! अच्छा मैं देखता हूं।" उसने दूरबीन से देखा कि एक आदमी काला लबादा ओढ़े हुये झाड़ियों में होकर सड़क की तरफ जा रहा है। उसने कहा—"ओहारा, तुम गलती करते हो। ध्यान देकर देखो वह कोई पादरी है।" यह कहकर उसने दूरबीन ओहारा के हाथ में देदी।

ओहारा ने कुछ सैकिण्ड तक दूरबीन में होकर देखा और फिर उसे केली को लौटाते हुये कहाः– "पादरी है! खाक धूल।"

जब तक केसी उसकी इस बेक़ायदे बात का जवाब दे तब तक ओहारा ने अपनी बंदूक उठाकर बड़ी सावधानी के साथ एक के बाद एक तीन फैर किये। फिर उसने कहा– "निशाना ठीक लगा है। वह यहां से ढाई सौ गज की दूरी पर गिरा है। पर तुम लोग अभी बाहर मत निकलना।"

केसी उठकर खड़ा होने लगा और ओहारा को झिड़क कर कहने लगा "देखो ओहारा··· ······।" उसकी बात पूरी भी न हुई थी कि उसके कान के पास से एक गोली सनसनाती हुई निकल गई। केसी डर के मारे तुरन्त जमीन पर लेट गया। इसी समय ओहारा ने फिर गोली चलाई। तब उसने कहा– "वह मेरी पहली गोली से नहीं मर सका था। पर मैंने आप से छुपे रहने को कह दिया था। यह शख्श आवाज के ऊपर निशाना मारने वाला था और घायल होने पर भी उसने ऐसा सच्चा निशाना लगाया यह कम तारीफ की बात नहीं है। पर मेरी अखीर की गोली ने उसका काम तमाम कर दिया और अब हम खुशी से बाहर निकल सकते हैं।"

जब तक ओहारा उठकर कुछ गज तक नहीं चला गया तब तक दूसरे वालंटियरों को शक बना ही रहा। अगर्चे अब तक के तजुरबे से मालूम हो गया था कि ओहारा का निशाना अचूक

होता है और वह यह भी जान जाता है कि उसकी गोली का क्या असर हुआ ।

जब ये लोग जान होरन की चौकी पर पहुंचे तो उसका बिलकुल मुर्दा पाया । किसी ने उसकी खोपड़ी उसीकी बंदूक से तोड़ दी थी । देखने से साफ मालूम पड़ता था कि उसके जेबों की अच्छी तरह तलाशी ली गईहै । बहुत कोशिश करने पर भी यह मालूम न होसका कि उस पादरी के से कपड़े पहिने हुये शख्श ने उसको किस तरह बेकाबू कर दिया । उसी रात को उन लोगों ने जान होरन को दफना दिया ।

थोड़ी दूर पर 'ब्लैक जैक' भी मरा पडा था । उसका असली नाम कप्तान एडविज था और अंगरेजी सरकार ने जिन बदमाशों को आयरलैण्ड के गरीब लोगों पर जुलम करने और सतानेके लिये छोड़ रखा था उनमें यह शख्श सब से ज्यादा भयंकर था । ओहारा ने बतलाया कि वह मैक्सिको का रहने वाला था, और उसने आपस के झगड़ों में बीसियों लोगों को जान से मार दिया था । अंगरेजी सेना में वह एक खास आदमी समझा जाता था । वह कुछ लंगड़ा कर चलता था और उसकी चाल के सबब से ही ओहारा ने उसको दूर से पहिचान लिया था । अपने ऐसे भयंकर दुश्मन के अचानक मारे जाने से राष्ट्रीय सेना वालों को बड़ी खुशी हुई और वे जान होरन के मरने का दुख बहुत कुछ भूल गये ।

× × ×

अब राष्ट्रीय सेना वालों का इरादा मेलार्न की पुलिस चौकी पर कवजा करने का था। पर यह काम सहज न था। यह चौकी गाँव से डेढ़ सौ गज दूर थी। उसका मकान काले पत्थर का बहुत मजबूत बना हुआ था। उसमें लड़ाई और बचाव का बहुत बढ़िया इंतजाम किया गया था। उसके चारों तरफ कांटेदार तारों का जाल लगा हुआ था। हर एक खिड़की के सामने लोहे की चादरें लगादी गई थीं, जिनमें बंदूक चलाने के लिये छेद बने हुये थे। यह बात भी अच्छी तरह मालूम थी कि चौकी में कम से कम बीस आदमी हैं जिनके पास काफी गोली बारूद और दो मशीनगन हैं।

चौकी को उड़ाने के लिये राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर ने एक सुरंग भेजने का वायदा किया था। पर किसी सबब से वह न आ सकी और उसके बजाय बहुत से बम भेज दिये गये। यह साफ जाहिर था कि चौकी पर हमला धोखा देकर ही किया जा सकता है। पर सवाल यह था कि धोखा किस तरह दिया जाय। अखीर में ओहारा ने एक तरकीब बतलाई और बहुत सोच विचार कर सब ने उसको मंजूर कर लिया। क्योंकि अब सब लोगों को इस पुराने सिपाही पर पूरा एतबार होगया था।

जिस दिन हमला किया जाने वाला था उससे पहिली रात को मेलार्न आने वाली तमाम सड़कें पत्थर और कटे हुये पेड़ डाल कर रोक दी गईं और उन पर रात भर पैरगाड़ियों पर चढ़े हुये वालंटियर गश्त लगाते रहे। मेलार्न से छै मील की दूरी पर बारबरो

नाम का एक फौजी अड्डा था । उसके पास वालंटियरों का एक दल छुपा कर बैठा दिया गया। गांव के एक बाग के भीतर एक मोटरगाड़ी छुपा दी गई और उसका ड्राइवर भी पास ही किसी घर में जा सोया। सुबह होने के पहिले ही कुछ वालंटियर धीरे धीरे चल कर चौकी के पीछे छुप गये। सामने और बगल में जगह जगह बन्दूक चलाने वाले छुपा कर बैठा दिये गये। चौकी के दरवाजे के ठीक सामने करीब दो सौ गज की दूरी पर एक गढ़े में मशीनगन रखदी गई।

सुबह होते ही ओहारा अपनी पुरानी अंगरेजी फौज की वर्दी पहिन कर और भरी हुई बन्दूक हाथ में लेकर पुलिस चौकी के दरवाजे पर पहुंचा। उससे थोड़ी दूर पर दो देहाती लड़कियां शाल ओढ़े और हाथों में दूध का वर्तन लिये हुये आपस में बातें करती हुई आ रहीं थीं।

ओहारा ने चौकी के दरवाजे को जोर से खटखटाया। भीतर से कोई बोलाः-"आज सुबह ही सुबह कौन कमवख्त आ मरा।" उसके बोलने से मालूम होता था कि उसने खूब शराब पी रखी है।

ओहारा ने जवाब दियाः-"मैं एक दोस्त हूं। मैं बारबरो की छावनी का सिपाही हूं। मुझे भीतर आने दो।"

भीतर से आवाज आईः-"दोस्त! झूंठा कहीं का! इस तरफ हमारा कोई दोस्त नहीं है।"

कुछ देर तक ओहारा चकराया हुआ वहीं पर चुपचाप खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद कुछ खड़खड़ाहट की आवाज आई और दरवाजे का एक छोटा सा छेद खुला। ओहारा ने देखा कि दो लाल लाल आंखें उस छेद में होकर देख रहीं हैं।

उस लाल आँखों वाले ने पूछाः-"इतने सवेरे तू इस तरफ क्यों फिर रहा है।"

ओहारा ने जवाब दियाः-"भाई, पहिले मुझे भीतर आजाने दो जिससे राष्ट्रीय सेना वालों का डर जाता रहे। पीछे म तुमको सब हाल बतलाऊँगा।"

वह आदमी बोला- "जरा देर सब्र करो।" यह कह कर उसने सामने की सड़क पर इधर उधर अच्छी तरह देखा। उसे सिवा उन दो देहाती लड़कियों के जो धीरे धीरे आ रही थीं और कुछ दिखलाई न दिया।

उसने ओहारा से कहाः-"तू बड़ा गधा आदमी जान पड़ता है, जो इस वक्त अपने मुकाम को छोड़ कर इधर उधर मारा मारा फिर रहा है। मालूम पड़ता है कि औरतों के चक्कर में पड़ा हुआ है।"

अब उसने किवाड़ों को खोलने के लिये पीछे की तरफ ढका दिया और जोर से जंजीर खोल दी। उसने दरवाजे को जरासा खोला था कि उसको ओहारा का तर्ज देख कर कुछ शक हुआ और उसने चाहा कि दरवाजा फिर से बंद करदूं। पर ओहारा ने शेर की तरह झपट कर उसकी गर्दन में संगीन मारी जिससे वह

बिना आवाज निकाले जमीन पर गिर गया। उसी वक्त कप्तान फोयले और जान होगन जो लड़कियां बने हुये थे अपनी शालें फेंक कर दौड़ते हुये वहां आ पहुंचे। पीछे की तरफ छुपे हुये वालंटियर भी बाहर निकल आये और चौकी के भीतर घुस गये। जरा देर में चारों तरफ से चौकी के ऊपर गोलियों की बरसा होने लगी।

बम और पिस्तौलों की आवाज सुन कर अंगरेज सिपाही घबड़ा कर उठे। वे सब शराब के नशे में चूर थे। अपने को चारों तरफ से घिरा देख कर उन्होंने बिना लड़े भिड़े हार मानली और अपने हथियार राष्ट्रीय सेना वालों के सुपर्द कर दिये। पर एक दूसरे कमरे में छै आयरिश पुलिस के सिपाही थे उन्होंने भीतर से दरवाजा बंद कर लिया और लड़ने लगे। उनके पास एक मशीनगन भी थी।

कुछ ही देर में मोटरगाड़ी चौकी के सामने आकर खड़ी होगई। वालंटियरों ने गोली चलाना बंद कर दिया और सिर्फ कुछ आदमी एक खिड़की की तरफ से पुलिस वालों से लड़ते रहे। जिन लोगों ने हार मानली थी उनको केसी की निगरानी में दूर ले जाकर खड़ा कर दिया गया। फोयले, बंदूकों, मशीनगन और गोली बारूद को मोटर पर लदाने लगा। गैनन को चौकी में आग लगा कर उन पुलिस वालों को उसी में जला देने का काम सुपर्द हुआ। पंद्रह मिनट के भीतर चौकी अच्छी तरह जलने

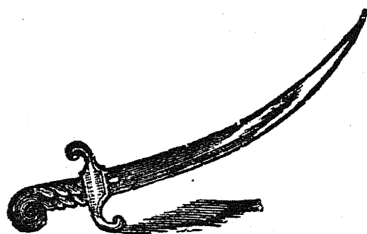
लगी और कुछ ही मिनट बाद वे छै पुलिस वाले बाहर निकल आये और हाथ ऊँचे उठा कर कहने लगे-"हम हार मानते हैं।"

इस समय आग बहुत बढ़ गई थी और चौकी के भीतर बराबर धड़ाके हो रहे थे। इस लिये फोयले ने हुक्म दिया कि कोई आदमी बचे हुये सामान को निकालने के लिये भीतर न जाय। इस तरह एक मशीनगन का नुकसान होने से गैंनन और ओहारा बड़े नाराज हुये और उन्होंने चाहा कि उन छै सिपाहियों को गोलियों से उड़ादें। पर दूसरे लोगों ने बड़ी मुशकिल से उनको रोका। फोयले ने उन पुलिस वालों की हिम्मत की बड़ी तारीफ की और कहा कि आगे चल कर वे लोग राष्ट्रीय सेना में मिल कर अपने देश के लिये लड़ें। कुछ देर बाद गुस्सा ठंडा हो जाने पर गैंनन भी अपने वर्ताव पर शरमिंदा हुआ। पर ओहारा बहुत देर तक इसी बात पर अड़ा रहा कि उन पुलिस वालों के साथ जरा भी मेहरबानी नहीं करनी चाहिये थी।

बम और बंदूकों की आवाज से दूसरे मुकामों की सरकारी फौज को मेलार्न की चौकी पर हमला होने का पता लग गया और वे फौरन मोटरलारियों में मेलार्न की तरफ रवाना हुये। पर तमाम रास्ते बंद थे और जगह जगह राष्ट्रीय सेना वाले उन पर हमला करने को छुपे बैठे थे। इस लिये उनको मेलार्न तक पहुंचने में कई घंटे लग गये। अखीर में जब वे वहां पहुंचे तो उनको सिवा एक टूटे फूटे मकान के कुछ न मिला। इसी

मकान में दो बीस सिपाही परेशान हालत में आधे नंगे और डरे हुये बैठे थे। उनके पास एक लाश भी पड़ी थी।

सरकारी सेना दिन भर वालंटियरों को ढूंढती हुई फिरती रही। आसपास के गांवों के कितने ही लोग संदेह में पकड़े गये। पर इसकी परवा न करके उस रात को मेलार्न के कितने ही घरों में खुशी मनाई गई और सब लोगों ने फादर एमन के साथ प्रार्थना पढ़कर ईश्वर को धन्यवाद दिया। लोगों के दिल आत्म-गौरव से भरे हुये थे और वालंटियरों के लिये, जो उनके ही भाई, बेटे थे, सब की आंखों से प्रेम के आंसू बह रहे थे।



डबलिन–यात्रा।





मेलार्न की पुलिस चौकी के जलाये जाने और कप्तान एडबिज के मारे जाने की ख़बरों से सरकारी अफसरों में बड़ी खलबली मच गई। उस जिले का सेनापति तो गुस्से के मारे पागल हो रहा था। खास कर कप्तान एडबिज का मारा जाना बड़ी भारी बात समझी जाती थी। कप्तान एडबिज अंगरेज़ी सेना के जासूसी महकमे का एक खास आदमी था और उसने कई जिलों में घूम फिर कर बड़ी चालाकी से वहां के राष्ट्रीय सेना दलों का पूरा पूरा भेद मालूम कर लिया था। इस सबब से डबलिन में रहने वाले बड़े हाकिम भी उसकी इज़्ज़त करते थे। सब लोग समझते थे कि जब वह लौट कर आवेगा तो उसके अख़तियार बहुत बढ़ा दिये जांयगे और सेना को उसी की राय से काम करना पड़ेगा। ज़्यादातर फौजी अफसर दिल से उसके खिलाफ़ थे। क्योंकि ओहदे में छोटा होने पर भी उसका ताल्लुक सीधे डबलिन के हाकिमों से रहता था। इसके सिवा वे लोग उसके स्वभाव से भी डरते थे और जब तक वह पास रहता था किसी की हिम्मत खुल कर बात करने की नहीं होती थी।

पर इन बातों के साथ ही स्थानीय अफसरों और डबलिन के हाकिमों को उसकी लियाकत पर पूरा भरोसा था और वे जानते थे कि वह हर एक भले और बुरे उपाय से राष्ट्रीय सेना वालों को वर्बाद करने को तैयार रहता है। इसलिये जब उन्होंने उसकी लाश को देखा जिसकी छाती और सर में गोलियों के घाव थे तो उनको बड़ा रंज हुआ और गुस्सा भी आया। फिर जब मेलार्न के थाने के जलाये जाने की ख़बर आई तब तो उनके गुस्से का पारा बहुत ऊपर चढ़ गया। सरकारी सिपाही इन घटनाओं का बदला लेने को उतावले होने लगे। पर अफ़सरों ने उनको कड़ा हुक्म देकर जल्दवाजी करने से रोका। पर 'ब्लैक एण्ड टैंस' (कृष्ण घातकों) के दल को रोक सकना नामुमकिन था। दिन के वक्त तो वे जैसे तैसे चुपचाप रहे पर रात होते ही उन्होंने मेलार्न पर हमला किया और कितने ही खलिहानों, मकानों और दुकानों में आग लगादी। राष्ट्रीय सेना वालोंने पहिले से ही सब लोगों को होशियार कर दिया था और सिवा एक बुढ़िया और एक अपाहिज आदमी के सब लोग पहाड़ियों में भाग गये थे। सिपाहियों ने उस बेकसूर अपाहिज को संगीनों से मार डाला।

सिपाहियों ने घरों में से लूटी हुई शराब दिल खोल कर उड़ाई। वे ऐसे बदहवास हो गये थे कि अगर उनकी तादाद बहुत ज्यादा न होती तो एक भी आदमी का राष्ट्रीय सेना वालों के हाथ से बच कर जा सकना मुशकिल था। जब वे लोग लौट

कर अपनी छावनी को जाने लगे तो उन्होंने एक जगह देखा कि राष्ट्रीय सेना वालों ने बड़े बड़े पत्थर डाल कर सड़क को रोक दिया है। जैसे ही वे पत्थरों को हटाने के लिये मोटरलारियों से बाहर आये कि राष्ट्रीय सेनावालों ने पहाड़ी पर से उन पर गोलियां चलानी शुरू कीं। नेड गैलन ने चट्टान के पीछे से एक बम ऐसा फेंका कि एक गाड़ी बिलकुल चूर चूर हो गई और दूसरी टूट फूट गई। इस टूटी हुई गाड़ी के सिपाहियों पर फोयले और उसके साथियों ने बन्दूकों और मशीनगन से खूब गोलियां चलाईं। उधर ओहारा अकेला एक ऊंची जगह पर बैठा हुआ चुन चुन कर निशाना लगा रहा था। अंगरेजी सिपाहियों ने राष्ट्रीय सेना वालों का जम कर मुकाबला करने की हिम्मत न की और ज्योंही सड़क साफ हुई वे लोग टूटी हुई मोटरलारी को छोड़ कर बड़ी तेजी के साथ भाग गये। मालूम नहीं कि जब सरकारी अफसरों को अपने घायल और मारे गये लोगों की तादाद मालूम हुई होगी तो वे उस रात की कार्रवाई पर कैसे खुश हुये होंगे? डबलिन के हाकिमों के पास यह खबर खूब घटा कर और बदल कर भेजी गई थी।

राष्ट्रीय सेना वालों के भी कुछ आदमी मरे और घायल हुये थे। पर इसके लिये किसी को ज्यादा रंज न था, क्योंकि सब को मालूम था कि अंगरेजी सेना के हम से बहुत ज्यादा आदमी मरे हैं। बाद में उन्हों ने अपने दोनों मुर्दों को दफना दिया। पर इस बार उन को चोरी से रात में नहीं दफनाया गया, बल्कि

दिन में खुल कर यह काम किया गया। उस मौके पर राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों ने फौजी कायदे के मुताबिक उनकी इज्जत करने के लिये बन्दूकों की बाढ़ दागीं।

× × ×

कुछ दिनों बाद राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर की तरफ से उस जिले के सेनापति के पास खबर आई कि वह एक ऐसे जिम्मेवार शख्स को डबलिन भेजे जो सेलार्न के वालंटियर दल की कार्रवाइयों का पूरा हाल बतला सके। सेनापति ने इस काम के लिये जेम्स केर्सी को सब से अच्छा आदमी समझा। क्योंकि उसने तमाम लड़ाइयों में हिस्सा लिया था और वह काफी पढ़ा लिखा और समझदार आदमी था। सेनापति ने डबलिन जाने का तमाम इंतजाम उसको बतला दिया। उसने केर्सी से कहाः—

"तुम एक सौदागर के एजंट के रूप में डबलिन जाओ। ये तुम्हारे बेचने की चीजों के नमूने और कागज पत्र हैं। तुम इन सब को अच्छी तरह पढ़ कर समझ लेना। तुम अपना नाम राबर्ट हेयर बतलाना।"

उस रात को वह चुपके से मोटरगाड़ी में बैठ कर एक दूसरे कस्बे में चला गया और वहां एक होटल में जाकर ठहरा। दूसरे दिन उसे डबलिन जाने की रेल मिली। अचानक उसने देखा कि उसके डिब्बे में एक बुड्ढा सौदागर बैठा है जिससे एक साल पहिले वह पुलनमोर में मिला था। उसका नाम एडवर्ड चिङ्गली था और वह एक बड़े कारखाने की तरफ से एजंट का काम

करता था। राजनैतिक विचारों की निगाह से उसे सब लोग नर्म दल वाला समझते थे। केसी नहीं चाहता था कि चिंगली उसे पहिचाने या उससे बातचीत करे। पर वह ख़ुद उठ कर उसके पास आ बैठा और हँस कर बोलाः—

"कहिये जनाब,क्या हाल है? बहुत दिनों बाद आपसे मुलाकात हुई।"

दोनों में बहुत देर तक मामूली बातचीत होती रही। अखीर में देश की मौजूदा हालत का ज़िक्र छिड़ा। चिङ्गली ने कहाः—

"बड़ी खराब हालत है। न मालूम इस देश की क्या दशा होने वाली है। व्यापार रोजगार तो चौपट हो गया। चारों तरफ तबाही ही तबाही नजर आती है।"

केसी ने भी चिङ्गली की बात का समर्थन किया, पर उसके दिल में बड़ी धुकड़ पुकड़ होरही थी। जब मिस्टर चिङ्गली राष्ट्रीय सेना वालों के कामों की बुराई करने लगे तो केसी को बड़ा डर लगा। पर थोड़ी देर बाद बातचीत का रुख दूसरी तरफ फिरा और केसी का डर जाता रहा।

आगे चल कर जब एक जंकशन पर गाड़ी बदली जा रही थी तो केसी ने देखा कि सरकारी सेना के सिपाही सब लोगों की तलाशी ले रहे हैं और उनसे सवाल जवाब कर रहे हैं। उसको डर लगा कि कहीं मेरा भेद न खुल जाय। अभी सिपाही कुछ दूर ही थे कि मि० चिङ्गली ने जल्दी से पूछाः—

"तुम्हारा नाम मि० केसी है या और कुछ? अगर कोई झगड़ा पैदा होगा तो मैं सब ठीक कर दूंगा। नाम क्या है?"

केसी के ताज़ुब का ठिकाना न रहा। वह जैसे तैसे अपने को सम्हाल कर बोला—"मेरा नाम राबर्ट हेयर है और मैं मैकफैरिस कम्पनी का एजण्ट हूं।"

"ठीक है" चिंगली ने शांतिपूर्वक कहा। इसी समय एक फौजी अफसर वहां आ पहुंचा। चिङ्गली ने बड़े तपाक के साथ उससे हाथ मिलाया और कहने लगा:—

"कहिये मेजर साहब, आपकी लड़ाई का क्या हाल है? मुझे पूरा यकीन है कि आप कुछ ही दिनों में इन बागियों को पूरी तरह से दबा देंगे।"

वह अपना हैण्डबेग हाथ में लेकर बड़े दोस्ताना तरीके से मेजर के साथ बातचीत करने लगा। उधर दूसरा अफ़सर केसी के कागज पत्रों और सामान की जांच कर रहा था। उस अफसर को केसी के जवाबों पर एतबार न हुआ और उसने साफ तौर पर अपना शक जाहिर किया। घबराहट के कारण केसी के मुंह से कोई बात न निकली। इतने में बात करते करते मि० चिङ्गली ने पीछे की तरफ मुड़ कर कहा:-

"मेजर साहब, मैं अपने दोस्त मि० राबर्ट से आपकी पहिचान कराना चाहता हूं। राबर्ट उठ कर मेजर टिसडन से हाथ मिलाओ। ये बगावत के दबाने में बड़ा काम कर रहे हैं।"

मि० चिङ्गली के कहने में कुछ ऐसा असर था कि जांच करने वाले अफसर ने बिना ज्यादा बातचीत किये केसी के कागज पत्र मेजर के हाथ में दे दिये । मेजर ने उन पर एक निगाह डाली और फिर उन्हें केसी को लौटा कर उससे बड़ी खुशी से हाथ मिलाया ।

कुछ देर ठहर कर मि० चिङ्गली ने कहाः-"अच्छा मेजर साहब, अब हम गाड़ी पर सवार हों । अच्छी तरह रहना ।"

वे दोनों एक खाली डिब्बे में जाकर बैठ गये । थोड़ी देर बाद जब गाड़ी चलने लगी तब मि० चिंगली ने कहाः-"अच्छा मि० राबर्ट, अब मेरे बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

केसी ने अहसान का भाव दिखलाते हुये कहाः-"अब मुझे कुछ नहीं कहना है ।"

चिङ्गली कहने लगेः-"क्या तुम समझते हो कि मैं तुमको नहीं पहिचानता ? मुझे सब बातें मालूम हैं । तुम पहिले मेलार्न गांव में स्कूल मास्टर थे और अब राष्ट्रीय सेना में एक अफ़सर हो। मैं भी तुमको अपने बारे में एक छुपी हुई बात बतलाना चाहता हूं । मैं राष्ट्रीय सेना में शामिल हूं । अगर्चे मैं लड़ने भिड़ने के काम में हिस्सा नहीं लेता; पर मैं ऐसे ऐसे गुप्त कागज पत्र एक जगह से दूसरी जगह लेजाता हूं जिनके बदले में अंगरेजी सरकार लाखों रुपये दे सकती है । इसके सिवा मैं और भी कई तरह के काम करता हूँ । मैं चालीस साल तक तमाम देश में सफर करता रहा हूं और जहां कहीं जाता हूं वहां सरकारी अफ़सरों से

दोस्ती कर लेता हूं। मेरी यह दोस्ती इन दो सालों में बड़े काम की चीज साबित हुई है। तुमको ताज्जुब होगा कि मैं ये सब बातें तुमको क्यों बतला रहा हूँ। पर मुझे तुम्हारा भेद अच्छी तरह मालूम है और मैं जानता हूं कि तुमसे बातचीत करने में किसी बात का खटका नहीं है। फिर मेरे जैसे बूढ़े बातूनी आदमी के लिये कभी कभी मन की बात खोल कर कह देना जरूरी है, नहीं तो बहुत भेद इकट्ठा हो जाने से पेट फट जाने का डर रहता है !"

उसकी बातों से यह भी मालूम हुआ कि उसने केली को कई बार पुलनमोर में राष्ट्रीय सेना के अफ़सरों के साथ देखा था। वह उसे पहिले से जानता था, इस लिये उसे इस बारे में पूछ-ताछ करने की इच्छा हुई और एक दोस्त से सब बातें मालूम हो गईं।

जब गाड़ी समुद्र के किनारे पहुंची तो मि० चिगली ने केली के साथ होटल में खाना खाया। उनकी बातचीत से केली को जान पड़ा कि उनको आयरलैंण्ड के प्रति अपार प्रेम है। पिछले पचास सालों से आयरलैण्ड के देशभक्त अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिये जो बलिदान कर रहे हैं उसका जिक्र करते करते चिगली की आंखों में आंसू भर आये। वे एक दार्शनिक विचारों के पुरुष थे और हमेशा ठंडे मिजाज से बातचीत करते थे। पर जब वे गरीब आयरलैंण्ड वासियों पर हर रोज किये जाने वाले जुलमों की याद करते थे तो कभी कभी उनके दिल में बड़ा गुस्सा पैदा होता था। उस वक्त वे

क्रोध में भर कर कहते थे कि-"जब कभी मैं इन बदमाश 'ब्लैक एण्ड टैंस' दल वालों की करतूतों को सुनता हूं तो मेरे मन में ऐसा आता है कि उनको गला दबा कर मार डालूं और उनकी बोटी बोटी काट कर फेंक दूं। हरामजादे, विना कसूर हमारे गरीब भाइयों पर जुलम कर रहे हैं।" फिर वे रंज भरी हँसी के साथ कहते- "पर मैं हमेशा अपनी इस इच्छा को दबा देता हूं।"

जब वे दूसरे जंकशन पर पहुंचे तो फिर उनकी तलाशी ली गई। पर यह तलाशी नाममात्र की थी, क्योंकि तमाम फौजी अफसर मि० चिंगली को पहिचानते थे और उनके रौनकदार तथा गम्भीर चेहरे को देख कर किसी को उन पर शक नहीं होता था। मि० चिङ्गली जाहिर में बड़ी राजभक्ति दिखलाते थे और जब फौजी बैण्ड बाजा अंगरेजों का जातीय गीत बजाता तो बड़ी खुशी जाहिर करते थे। उनकी इन बातों को देख कर किसी को सुपने में भी यह खयाल नहीं आता था कि यह शख्स बागियों से मिला होगा।

जब ये लोग डबलिन के स्टेशन पर पहुंचे और अलग होने लगे तो मि० चिंगली ने केसी को अपना प्राइवेट कार्ड दिया और हाथ मिलाते हुये कहाः-"मि० राबर्ट जब तक तुम इस शहर में हो अगर फुरसत मिले तो कभी कभी मुझसे मिलते रहना। तब तक के लिये-सलाम।"

थोड़ी देर बाद केसी एक होटल में जाकर ठहर गया। इसी होटल में ठहरने की उसको हिदायत की गई थी। अगर्चे जाहिर में उससे किसी ने कुछ नहीं कहा, पर वहां के रंग ढंग से वह समझ गया कि मैं दोस्तों के बीच में हूं। शाम के वक्त उसे एक आफिस में जाने के लिये बतलाया गया था, पर जब वह वहां पहुंचा तो उसे बंद पाया। मालूम हुआ कि उसके खुलने में अभी दो घंटे की देर है। केसी सोचने लगा कि इस बीच में क्या काम किया जाय। उसे याद आया कि पास ही में एक थियेटर है, जहां आज एक बहुत अच्छा देशभक्ति पूर्ण नाटक होने वाला है। जब वह थियेटर में पहुंचा तो खेल शुरू हो चुका था। नाटक दरअसल बहुत ऊंचे दर्जे का था और खेलनेवाले भी बड़े होशियार थे। पर केसी को जान पड़ा कि उसके आस पास के लोग नाटक को न देख कर किसी दूसरी चीज को देख रहे हैं और बड़े जोश में मालूम पड़ते हैं। पहिले तो वह कुछ न समझ सका, पर कुछ देर बाद उसने दो नौजवानों को चुपके चुपके बात करते सुना। एक ने दूसरे से धीरे से कहा "वह काले बालों वाला आदमी जो खम्भे के दाहिनी तरफ बैठा हुआ है।" दूसरे ने हँसते हुये जवाब दिया "वह बड़ा आदमी है।" इसी वक्त दूसरा सीन शुरू हुआ और रोशनी बुझादी गई। इससे केसी उस आदमी को अच्छी तरह न देख सका। जब इंटरवेल हुआ तब वह उस आदमी को अच्छी तरह देख पाया। वह एक हट्टा कट्टा, कटी हुई मूछों वालों हँसमुख नौजवान था। उसके बदन

में फुरती कूट कूट कर भरी हुई थी। वह अगर्चे लापरवाही के साथ बैठा था, पर उसके बैठने का ढंग ऐसा था जैसे कि एक बैठा हुआ शेर मौका पड़ते ही झपटने को तैयार रहता है।

केसी ने अपने पास बैठ हुये नौजवान से पूछाः-"वह शख्श कौन है ?"

नौजवान ने रूखेपन से कहाः- "माफ कीजिये, मैं नहीं जानता।"

रंगढंग से केसी समझ गया कि उसका सवाल आस पास के लोगों को बहुत बुरा लगा है। इससे उसकी उत्सुकता और ज्यादा बढ़ गई। उसे यह भी मालूम होगया कि ज्यादातर तमाशबीन उस आदमी को पहिचानते हैं, पर अब किसी से इस बारे पूछताछ करना बेवकूफी थी।

पर उस नौजवान शख्श का खयाल केसी के दिल से किसी तरह दूर न हो सका। इसलिये जब थियेटर खत्म हो गया तो उसने उसके पास जाने की कोशिश की। पर लोगों की धक्कम-धक्का में आगे बढ़ सकना बिलकुल नामुमकिन था। जब वह थियेटर के बाहर आया तो फिर तेजी से उस शख्श की तरफ बढ़ा। इतने में किसी ने उसके मुंह पर ऐसे जोर से घूंसा मारा कि वह चक्कर खाकर वहीं खड़ा रह गया। थोड़ी देर बाद जब वह सम्हला तो उसकी उत्सुकता को बढ़ाने वाला नौजवान निगाह से ओझल हो गया था। उस भीड़ में मारने वाले का पता लगा सकना भी नामुमकिन बात थी। इसलिये वह चुपचाप अपने

होटल की तरफ चला आया। आज की घटना से उसे दुनियां के ढंगों का एक नया तजुर्बा हुआ।

वह रात भर आराम से सोता रहा। बीच में कभी कभी बंदूकों के चलने की आवाज सुनाई दे जाती थी। सुवह नाश्ता करने के बाद वह फिर उस आफिस की तरफ चला। इस बार भी उसे बहुत देर तक बाहर ठहरना पड़ा। अखीर में उसे एक वृद्ध सज्जन के सामने पेश किया गया जिसके चेहरे से दया और मिलनसारी का भाव साफ झलक रहा था। उसने बड़े गौर से केसी के प्रमाणपत्रों की जांच की। ये काग़ज़ात अभी तक केसी की कमर में छुपे हुये थे। इसके बाद उसने एक नौजवान शख्श को बुलाया और केसी से कहा:- "आप इनके साथ जाइये, ये आपका इंतजाम कर देंगे।"

कई दिन तक केसी तरह तरह के कामों में लगा रहा। इस बीच में उसने हर एक महकमे के अफ़सर से बातचीत की, खास खास नेताओं के साथ उसकी मुलाकात कराई गई और कई लैकचरों को उसने सुना। इन लैकचरों में बतलाया गया था कि हम किन तरकीबों से दुश्मन का मुकाबला अच्छी तरह कर सकते हैं। इन्हीं दिनों में एक बार नई चाल की थाम्पसन मशीनगन की जांच करके दिखलाई गई और बतलाया गया कि किस तरह उसको अलग अलग हिस्सों में कर लिया जाता है और फिर किस तरह तुमाम हिस्सों को जोड़ा जाता है। यह मशीनगन अब तक की दूसरी मशीनगनों से बहुत भयंकर थी।

इन नेताओं में केसी उस नौजवान शख्श से भी मिला जिसे थयेटर में देख कर वह इतना उत्सुक होगया था। जब उसने केसी के मुंह से उस दिन का हाल सुना तो वह खिलखिला कर हँसने लगा। उसने केसी को बतलाया कि मुझे इस बारे में किसी बात का पता नहीं है।

केसी को सबसे ज्यादा खुशी यह देखकर हुई कि राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर का काम बड़े कायदे के साथ होता है। एक तरफ तो सरकारी फौज हैडक्वार्टर के काम करने वालों को पकड़ने के लिये छोटी छोटी गलियों और शहर के बाहर बसी हुई वस्तियों पर हमला करती फिरती थी और दूसरी तरफ राष्ट्रीय सेना के नेता बीच बाजार में बने हुये किसी बड़े मकान में अपना काम करते रहते थे। सरकारी अफ़सरों को इस बात का खयाल भी न था कि राष्ट्रीय सेना वाले ऐसी आम जगहों अपनी कमेटी और दूसरे काम करते होंगे। इन मुकामों में वे लोग हमेशा नियमपूर्वक अपना काम करते थे जिनके नाम अब इतिहास में लिखे जा चुके हैं और जिनकी गिरफ्तारी या मौत के लिये अंगरेजी सरकार मुंह मांगा इनाम देने को तैयार थी। ये लोग शाम के वक्त खुले तौर पर बाजार में निकलते थे जहां हजारों आदमी उनको पहिचानते थे, पर कभी किसी ने इस भेद को जाहिर नहीं किया।

× × ×

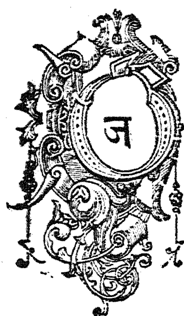
जिन दिनों केसी डबलिन में था उस समय मेलार्न में उसके साथी बराबर अपना काम कर रहे थे । उस जिले के राष्ट्रीय सेनापति ने एक बार मेलार्न से पुलनमोर तक की तमाम छोटी छोटी पुलिस की चौकियों पर हमला किया। अगर्चे इन हमलों में ज्यादा कामयाबी नहीं मिली, पर सरकारी अफसर समझ गये कि मेलार्न के गांव में अब उनके क़दम जम नहीं सकते । इसलिये उन्होंने वहां से अपने सिपाही बिलकुल हटा लिये और इस तरह यह गांव बहुत बरसों के बाद अंगरेजी हकूमत के बंधन से छूट कर आजादी की हवा में सांस लेने लगा।

× × ×

केसी खुशी खुशी अपना काम ख़तम करके मेलार्न में वापस आ गया। लौटते समय रास्ते में कोई खास घटना नहीं हुई । दो जगह सरसरी तौर पर उसकी तलाशी ली गई। एक बार सरकारी सिपाहियों द्वारा और दूसरी बार राष्ट्रीय सेना की हद में घुसने पर ।



युद्ध और प्रेम।



ब मेलार्न से सरकारी सेना की चौकी उठाली गई तो वहां पर सरकारी कानून का जोर भी नहीं रहा। सिवा उन मौकों के जब कि फौज का कोई बड़ा दल आकर लोगों को तंग करता था, कोई अंगरेजों की हकूमत को नहीं मानता था।

इस समय सब लोगों के दिलों में एक नये उत्साह और प्रसन्नता का भाव पैदा हो रहा था। अब तक राष्ट्रीय दल वालों की अदालत अपना काम छुप कर करती थी। अब सरकारी फौज के हट जाने से उसमें खुल्लमखुल्ला हर तरह के मुकदमों का फैसला किया जाने लगा। लोग समझते थे कि इस वक्त इंसाफ का काम पहिले से अच्छी तरह चलाना हमारा फर्ज है। इसलिये हर खयाल के आदमी इस काम में राष्ट्रीय दल वालों की मदद करते थे। राष्ट्रीय दल वाले भी इस बात की बड़ी कोशिश करते थे कि किसी के साथ बेइंसाफी न हो और लोग गैरकानूनी तरीके से न चलने लगें।

जो लोग इस बड़ी जिम्मेवारी के काम को करने के लिये चुने गये थे, वे बड़े लायक और ईमानदार आदमी थे। इनमें

फादर एमन भी शामिल था, जिसे सरकार ने कुछ दिनों तक कैद रख कर छोड़ दिया था। उसकी मिहनत से राष्ट्रीय अदालत का इंतजाम बड़ा अच्छा रहता था।

जिस दिन यह राष्ट्रीय अदालत मेलार्न में खोली गई उस दिन बड़ा जलसा किया गया। सब लोग उम्मेद करने लगे कि अब एक नया युग आने वाला है जब कि परदेशी लोग किसी तरह की बेईसाफी या जुलम नहीं कर सकेंगे। कुछ घरों में लड़ाई में अपने रिश्तेदारों के मारे जाने या सम्पत्ति के नष्ट होजाने के लिये रंज भी जाहिर किया जाता था। पर साथ ही इस खयाल से कि हमारे तकलीफ उठाने से देश की आजादी में मदद मिली है, वे लोग एक तरह का गर्व अनुभव करते थे।

उस दिन शाम को जब राष्ट्रीय सेना के तमाम वालंटियर फौजी कायदे के साथ कंधों पर बंदूकें रख कर निकले, तो जोश का तूफान आगया। छोटे छोटे लड़के गला फाड़ कर चिल्ला रहे थे। बड़ी उम्र के आदमियों की आंखें हर्ष और अभिमान से चमक रही थीं और बहुत दिनों के बाद आज वे खुल कर मन की बातें कह रहे थे। वालंटियरों में किसी का लड़का, किसी का भाई, किसी का रिश्तेदार और किसी का दोस्त था। सब लोग उनको देख देख कर प्रेम के आंसू बहा रहे थे और उनकी मंगल कामना कर रहे थे।

रात के वक्त उस शुभ दिन की खुशी में नाच का जलसा किया गया, जिसमें वालंटियर सुबह तक अपनी प्रेमिकाओं के

साथ नाचते रहे। उस दिन जलसे में कितनों ही की ब्याह शादी पक्की हुआ और कितनों ही की मामूली जान पहिचान प्रेम के रूप में बदली। अखीर में जब गांव के पुराने मास्टर जेम्स केसी ने 'सिपाहियों का गाना' गाया और सब वालंटियर भी उसके सुर में सुर मिला कर गाने लगे तो वहां एक भी आदमी ऐसा न था जिसके दिल में आयरलैण्ड और राष्ट्रीय सेना वालों के लिये श्रद्धा का भाव न पैदा हुआ हो। अगर कोई आदमी ऐसा होगा भी तो उस समय उसने अपने मन का भाव जाहिर नहीं किया।

फोयले और केसी भी उस जलसे में शामिल हुये थे और बड़े खुश दिखलाई पड़ते थे। पर उनकी खुशी में कुछ रंज का भाव भी छुपा हुआ था जो दूसरे लोगों को मालूम नहीं पड़ता था। इस रंज का एक खास सबब था। जब से ये लोग राष्ट्रीय सेना के काम से बार बार पुलनमोर जाने लगे थे, उनका दो नवयुवतियों से प्रेम होगया था। इन में से एक का नाम था कैथलीन और दूसरी का एली। ये दोनों मिसेज हेनली नामक विधवा की लड़कियां थीं। मिसेज हेनली की एक कपड़े की दुकान थी जो खूब चलती थी। आज उन दोनों ने वायदा किया था कि हम अपने भाई टाम के साथ जलसे में आयेंगी। पर किसी सबब से वे न आ सकीं और यही केसी और फोयले के रंज का सबब था।

फोयले ने केसी से कहाः-"मालूम होता है कि उनके न आ सकने का सबब टाम ही है। वह शराब के नशे में चूर होगया होगा और इसी लिये उनको न लासका।"

यहां पर टाम हेनली के बारे में भी कुछ बतलाना जरूरी है। करीब एक साल पहिले तक वह पुलनमोर का सबसे मशहूर फुटबाल खेलने वाला और ताकतवर नौजवान था। राष्ट्रीय सेना से भी उसका ताल्लुक था और वह इस काम में काफी मदद दिया करता था। उसका स्वभाव बड़ा हँसमुख था और सब लोग उसे प्यार करते थे। उस समय तक उसके चालचलन में किसी तरह का ऐब न था। इसके बाद वह यकायक शराब की तरफ झुका और उसमें पड़ कर सब कामों को भूल गया। कुछ लोग कहते थे कि उसके इस बदलाव का सबब यह था कि उसका अपनी प्रेमिका नेली बरनन से झगडा हो गया था। पर इस बात में बहुत कम सचाई थी। आज कल वह हद से ज्यादा शराब पीकर अपनी तन्दुरस्ती और घर के पैसे को बर्बाद कर रहा था। उसके सबब से उसकी मा का कारबार भी चौपट हो रहा था। फोयल और केसी जब कभी अपनी प्रेमिकाओं से मिलने जाते, तो उनको ऐसा मालूम होता था कि टाम के सबब से उसका तमाम घर बड़ी तकलीफ में है। उसकी मा और बहिनें इस बारे में बाहरी लोगों से बातचीत करना पसंद नहीं करती थीं और जब टाम को समझाया जाता तो वह चिल्ला कर कहने लगता थाः-"तुम लोग अपना काम देखो।"

× × ×

दूसरे दिन फोयले और केसी अपने वालंटियरों को पहाड़ी के भीतर छावनी में भेज कर पैरगाड़ी पर पुलनमोर की तरफ़ रवाना हुये। उनको सेनापति से कुछ जरूरी बातें करनी थीं और साथ ही मिसेज हेनली के घर जाने का भी इरादा था। कस्बे में पहुंच कर उन को पता लगा कि सेनापति से शाम के वक्त मुलाकात हो सकेगी। इस लिये दोपहर के वक्त वे मिसेज हेनली के यहां पहुंचे। उस वक्त दुकान खरीदारों से भरी हुई थी और कैथलीन दूसरे नौकरों के साथ सौदा बेचने का काम कर रही थी। उससे बातचीत कर सकना नामुमकिन देख कर वे एली से मिलने के लिये रसोई घर में गये। पर वहां भी सिवा एक बुड्ढी नौकरानी के और कोई न था। उस नौकरानी ने बतलाया कि–"आज मा की तबियत कुछ खराब है और एली ऊपर के कमरे में उस की सेवा में लगी हुई है।"

थोड़ी देर बाद ऐली नीचे आई और कुछ संकोच के साथ बात करने लगी। जब फोयले ने उस से पूछा कि वह रात को नाच के जलसे में क्यों नहीं आई, तो वह कुछ जवाब न दे सकी और उसके चहरे से बड़े दुःख का भाव जाहिर होने लगा। यह देख कर फोयले ने केसी से कहाः-"केसी, तुम इस वक्त जाओ। मैं तुम से कुछ देर बाद मैथ्यू के मकान पर मिलूंगा। मैं एली से अकेले में कुछ बात करना चाहता हूं।"

दुकान से जाते समय केसी, कैथलीन से मिला और कहाः-"जब फ़ुरसत होगी तो मैं फिर तुमसे मिलने आऊंगा।"

घंटे भर बाद फोयले भी आ पहुंचा। वह बड़े गुस्से में था। केसी के पूछने पर उसने कहाः-"मैंने एली को तमाम बात साफ साफ कहने के लिये बहुत दबाया। उससे मुझे मालूम हुआ कि यह तमाम खराबी उस बदमाश टाम के सबब से है। पिछले महीने से उसका शराब पीना बहुत बढ़ गया है और वह हर रोज रात को शराब पीकर घर में बड़ा दंगा फसाद मचाता है। वह रुपये के लिये घर वालों को बहुत तंग करता है और उसके कामों से तीनों मा बेटी बड़ी दुखी हो रही हैं। कल वह दुकान की संदूक में से तमाम रुपया निकाल लेगया। जब मा उसको समझाने लगी तो टामने उसे एक संदूक पर ढकेल दिया। अगर्चे एली ने शर्म के मारे मुझसे नहीं कहा, पर मेरा अंदाज है कि उसने मा को मारा भी है। उसको चोट ज्यादा नहीं लगी है पर वह शर्म और बदनामीके सबबसे बिस्तर पर पड़ी है। यही हालत एली और कैथलीन की है। टाम अभी तक शराब की खुमारी में ऊपर पड़ा सो रहा था। मैं चाहता था कि उसके कमरे में जाकर दस बीस लातें लगाऊं। पर एली ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया।"

वे दोनों बड़ी देर तक इस मामले पर गौर करते रहे। ऐसी मुसीबत के समय अपनी भावी पत्नियों के कुटुम्ब की मदद करना उनका फर्ज था। पर बहुत कुछ गौर करने पर भी कोई ऐसी तरकीब न सूझी जिससे उनका मतलब पूरा हो सकता।

साथ ही एली और कैथलीन की राय लेना भी जरूरी था, क्योंकि वे बड़ी स्वाभिमानिनी और अपने घरकी इज्जत का खयाल रखने वाली लड़कियां थीं। इस लिये वे फिर मिसेज हेनली के मकान पर गये और उन दोनों बहनों से इस बारे में बातचीत की। पर उस वक्त भी कोई तरकीब न निकल सकी। उनको यह भी जान पड़ा कि इस मामले में ज्यादा बातें करने से एली और कैथलीन को दुःख होता है। टाम में सब कुछ ऐब होने पर भी वे अपने भाई को दिल से प्यार करती थीं और कोई ऐसी बात उनको मंजूर न थी जिससे टाम को तकलीफ हो। वे सिर्फ यह चाहती थीं कि वह किसी तरह शराब पीना छोड़दे और पहिले की तरह रहने लगे।

शाम के वक्त फोयले और केसी सेनापति से मिलने गये। वहां से लौटते वक्त केसी के दिमाग में एक नई तरकीब आई जिसे फोयले ने भी पसंद किया। उनका इरादा था कि टाम को नशे की हालत में पकड़ कर पहाड़ी के भीतर ले जांय और वहां ढंग के साथ उसकी शराब छुड़ाई जाय। वे बड़ी देर तक इस बारे में बातें करते रहे। फिर उन्होंने एली और कैथलीन को भी अपना इरादा कुछ घटा बढ़ा कर सुनाया और समझा बुझा कर उनको राजी कर लिया।

उस दिन रात के वक्त जब टाम मेगर का शराबखाने से झूमता झामता आ रहा था तो रास्ते में उसकी मुलाकात केसी और फोयले से हुई। वे भी शराबी की तरह लड़खड़ा कर चल

रहे थे। उनकी यह हालत देख कर टाम खूब हंसने लगा, क्योंकि उसके सामने वे लोग बड़े परहेजदार बना करते थे। वह खुशी से उनके साथ एक छोटी सी गली में चला गया। वहां पर फोयले ने खूब तेज शराब की एक बोतल निकाली। उन दोनों ने धोखा देने के लिये बोतल मुंह से लगाई, पर एक बूंद भी शराब नहीं पी। इसके बाद उन्होंने बोतल टाम को देदी और वह पूरी बोतल गटक गया। वह केसी और फोयले की यह 'उदारता' देख कर बड़ा खुश हुआ और उनके साथ एक मोटर-गाडी में बैठ गया। मोटर तेजी के साथ मेलार्न की तरफ चली और हवा लगने से टाम गहरी नींद में सो गया। मेलार्न पहुंच कर उसको मोटर से उतारा गया और एक चारपाई पर लिटा कर कुछ वालंटियरों की मदद से पहाड़ी के भीतर पहुंचा दिया गया। वहां उसे एक खलिहान के भीतर जहां वालंटियरों का पड़ाव था, रखा गया।

सुबह दस बजे टाम को होश आया। उसने देखा कि पास ही फोयले खड़ा हुआ मुसकरा रहा है। वह बड़ी देर से उसके जगने की राह देख रहा था। टाम को जगा हुआ देख कर वह बोला:-"टाम, तबियत कैसी है?"

टाम ने खुमारी की हालत में जवाब दिया:-"बहुत खराब है।" फिर वह चारों तरफ देख कर बोला:-"अरे, मैं यहां कहां से आ गया?"

फोयले ने हँसते हुये कहाः—"अपनी कसम जो मुझे कुछ भी मालूम हो। हम सब लोग नशे में थे और तुमने हमारे साथ आने की जिद् की थी। खैर, तुम्हारे लिये शराब हाजिर है।"

टाम ने ताज्जुबसे कहा—"सचमुच।" इतने में फोयले ने उसके सर के पीछे रखी हुई आलमारी में से एक बोतल निकाल कर उसका डाट खोला। जब टाम ने बोतल को मुँह से लगा लिया तब उसको एतबार हुआ कि फोयले उसके साथ मजाक नहीं कर रहा है। जब उसने देखा कि फोयले ने दूसरी बोतल निकाल कर उसका भी डाट खोल डाला तब तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

फोयले ने दूसरी बोतल को टाम के पास रख कर कहाः—"मुझे एक काम से बाहर जाना है। यहां पर अभी शराब की कई बोतलें रखी हैं, तुम खुशी से जितना चाहो पी सकते हो।"

फोयले के बर्ताव से टाम को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह गुन-गुना कर कहने लगाः—"फो-फो-फोयले बड़ा अच्छा आदमी है।" वह दूसरी बोतल भी पी गया और तीसरी के लिये हाथ बढ़ाया। जब वह चार बोतलें खतम कर चुका तब वह बहुत खुश होकर खड़ा हो गया। इस समय उसे कुछ भूख भी मालूम हुई। बाहर जाकर पूछने पर पता लगा कि सब लोग सुबह का खाना खा चुके हैं और अब कुछ नहीं बचा है। इन वालंटियरों में से कितने ही उसके पहिचान वाले भी थे। उसने फोयले के लिये पूछा तो कहा गया कि वह बाहर गया है। इधर उधर को

कुछ बातें करके वह अपने कमरे में वापस आगया और धीरे धीरे शराब की कई बोतलें खाली करदीं। इतने में बाहर से खाना पकने की सुगंध आई। पहले तो उसका खयाल था कि जब भोजन तैयार हो जायेगा तब मुझे बुला लिया जायेगा। पर जब उसने देखा कि तमाम वालंटियर घास पर बैठ कर खाना खाने लगे तो वह दौड़ता हुआ उनके पास पहुंचा और बोलाः-"क्या खाना शुरू कर दिया?"

केसी ने जवाब दियाः-"हां, हम लोग भोजन कर रहे हैं।"

टाम ने फोयले की तरफ देख कर कहाः-"मुझे बड़ी भूख लगी है, बैठने को थोड़ी जगह दो।"

फोयले ने बड़ा रंज जाहिर करते हुये कहाः-"टाम, हम लोगों के पास खाने का सामान बहुत कम है।" इसी समय उसने कोई आधसेर का एक मांस का टुकड़ा खाने के लिये उठाया।

अब फोयले के बारे में टाम की राय कुछ बदल गई। उसको कुछ गुस्सा भी आया और उसने नाराज होकर वालंटियरों से पुलनमोर का रास्ता पूछा। कई लोगों ने हाथ उठा कर उसे रास्ता दिखला दिया। वह बिना किसी से बातचीत किये उस रास्ते पर चल पड़ा। दो फरलांग जाने के बाद एक पहरेदार मिला जिसने उससे परवाना मांगा। टाम ने गुस्से से जवाब दियाः-"परवाना किस बात का? फोयले और केसी कल रात

को मुझे यहां ले आये थे और अब मैं अपने घर वापस जा रहा हूं।"

पहरे वाले वालंटियर ने कहाः-"मुझे हुक्म दिया गया है कि कोई आदमी कप्तान फोयले के परवाने के बिना बाहर नहीं जा सकता। अगर तुम मेरी बात न मान कर आगे बढ़ने की कोशिश करोगे तो मैं गोली मार दूंगा।"

पहरेदार के गम्भीर चेहरे और रूखी बातों से टाम को एतवार हो गया कि वह मजाक नहीं कर रहा है। इस लिये वह लाचार होकर बड़बड़ाता हुआ फिर वापस आगया। इस समय वालंटियर खाना खतम कर चुके थे और बहुत सा सामान बचा रखा था। उसने पहरेवाले की बातें फोयले को सुनाईं। फोयले ने जवाब दियाः-"मैं लाचार हूं। आज सुबह ही सेनापति ने मेरे पास खबर भेजी है कि जब तक वह यहां का मुआयना न कर जाय तब तक कोई आदमी यहां से बाहर नहीं जा सकता। उसके आने में दस पंद्रह दिन की देर है; तब तक मैं किसी को बाहर जाने का परवाना नहीं दे सकता।"

अब टाम कुछ घबड़ाया और कहने लगाः-"तो अब मैं घर कैसे पहुंचूंगा। अगर घर वालों को खबर न हुई कि मैं यहां हूं तो उनको बड़ा फिकर होगा।"

फोयले ने जवाब दियाः-"इतना काम मैं कर सकता हूं। तुम घर वालों के लिये जो चिट्ठी लिखोगे वह उनको पहुंचा दी जायगी। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कर सकता।"

टाम को बड़ा गुस्सा आ रहा था। पर कुछ जोर चलता न देख कर वह अपने कमरे में लौट गया और शराब की दो बोतलें खतम कर डालीं। इस समय बाहर सन्नाटा था। तमाम वालंटियर कहीं चले गये थे और सिर्फ एक आदमी सफाई करने के लिये वहां रह गया था। टाम के पेट में भूख के मारे चूहे दौड़ रहे थे। अखीर में उससे न रहा गया और बाहर जाकर मांस का एक टुकड़ा उठा लिया। फौरन ही किसी ने पीछे से आकर उसके गाल पर एक चपत मारी और डाट कर कहा:–"इसको रखो। इस छावनी के भीतर लूट मार नहीं हो सकती।"

चपत लगने से टाम बड़े ताव में आया। उसने सर फिरा कर देखा कि एक बदसूरत शकल का बुड्ढा सिपाही खड़ा हुआ है। टाम ने उससे कहा:--"तुम्हारी उम्र मुझसे लड़ने लायक नहीं है। पर अगर तुमने मुझको फिर हाथ लगाया तो तुम्हारे हाथ पैर तोड़ कर रख दूंगा। मुझे बड़ी भूख लगी है और मैं यह मांस का टुकड़ा जरूर लूंगा।"

बुड्ढे सिपाही ने मुंह बना कर कहा:–"अरे बेटा, तुम मरना तो नहीं चाहते। तेरे जैसा शराबी आदमी पांच मिनट भी मेरे सामने नहीं ठहर सकता। अपना कोट उतार डालो, और अगर तुम पांच मिनट तक मेरे मुकाबिले में डटे रहो तो जितना चाहो खा लेना। जानते हो, मेरा नाम ओहारा है।"

एक वक्त ऐसा था जब कि पुलनमोर के पहलवानों में टाम सब से अच्छा घूंसेबाज समझा जाता था। उसे अब भी अपनी ताकत

का वैसा ही घमण्ड था। ओहारा की जली कटी बातें सुन कर वह उस पर टूट पड़ा। दो मिनट तक दोनों कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ते रहे। इस दरम्यान ओहारा ने बीस पच्चीस ऐसे जोर के घूंसे मारे कि टाम होश भूल गया और जमीन पर गिर पड़ा।

यह देख कर ओहारा बोला:-"क्यों बड़ी बातें बना रहा था। तू एक छोटे लड़के से भी नहीं जीत सकता।"

टाम चुपचाप ओहारा की फटकार सुनता रहा। अपनी कमजोरी पर उसे बड़ी शरम मालूम हो रही थी। वह उठ कर बिना कुछ कहे अपने कमरे में चला गया और कांपते हुये हाथों से शराब की बोतल खोल कर एक गिलास भरा। पर उसके पीने की हिम्मत उसे नहीं हुई। वह गिलास को हाथ में लेकर कुछ देर तक देखता रहा और फिर यकायक भरे गिलास को जमीन पर फेंक दिया। वह कहने लगा:-"इस कमबख्त शराब ने ही मेरे शरीर को मिट्टी कर दिया। एक साल पहले मैं दो चार घूंसों में ही उसका कचूमर निकाल सकता था। एक बुड्ढे आदमी ने मुझे गिरा दिया-कितने शरम की बात है।"

वह दो घंटे तक वहीं पड़ा रहा। उसका मन घृणा निराशा, और क्रोध के समुद्र में गोते खा रहा था। इसके बाद फिर उसका हाथ अपने आप शराब की बोतल की तरफ बढ़ा। आधी रात के वक्त उसने वहां से निकल भागने की कोशिश की, पर पहरे-दार की ललकार सुनकर चुपचाप लौट कर पड़ रहा। वह रात

टाम को उम्र भर याद रही होगी । भूख के सबब से उसे जरा भी नींद नहीं आई और तमाम वक्त सोच विचार और बेचैनी में कटा। सबेरे सात बजे उसकी आंख जरा लगी।

जब वह उठा तो देखा कि आलमारी में शराब की दूसरी बोतलें रखी हुई हैं। पर आरजू, मिन्नत, खुशामद सब कुछ करने और गालियां देने पर भी कोई खाने की चीज उसे न मिल सकी। अखीर में उसने फोयले को पकड़ लिया।

फोयले ने कहाः-"टाम, हम अपने खाने का सामान किसी बाहरी और बेकार आदमी को नहीं दे सकते। इसके सिवा जो तुम्हारा सब से जरूरी भोजन है, उस शराब को हम तुम्हें काफी दे देते हैं। अगर तुम उसके अलावा कुछ और चाहते हो तो उसके लिये छावनी के भंडारी के पास जाओ। पर यह याद रखो कि भोजन के बदले में वह तुमसे काम करायेगा।"

पर भंडारी के पास जाने की टाम को इच्छा न हुई। क्योंकि यह वही शख्श था जिसने कल उसे पीटा था। अखीर में शाम के वक्त जब भूख के सबब से उसकी बुरी हालत हो गई और जान बचाने का कोई उपाय दिखलाई न दिया तो वह भंडारी के पास पहुँचा। ओहारा ने उसको पाखाने के लिये एक लम्बी नाली खोदने का काम दिया। रात के दस बजे तक टाम नाली को खोदता रहा और तब उसे खाने का सामान दिया गया। इसके बाद वह इतना थक गया कि शराब की तरफ उसका खयाल भी नहीं गया और पड़ते ही खुर्राटे भरने लगा।

उस दिन से टाम कड़ी मिहनत करके अपनी रोटी कमाने लगा। ओहारा उससे गुलामों की तरह रात दिन काम कराता था। एक हफ्ते के भीतर टाम की हालत बिलकुल बदल गई अब वह ओहारा की सख्ती से बहुत तंग आ गया था और उससे लड़ने को तैयार हो गया। दोनों में फिर घूंसेबाजी शुरू हुई और पंद्रह मिनिट तक बड़े जोर की लड़ाई होती रही। अखीर में ओहारा ने टाम को गिरा दिया, पर वह खुद भी हांफने लगा और उसकी एक आंख में भी कुछ चोट लगी।

जब टाम का होश ठिकाने आया तो ओहारा ने कहा-"अब की बार तुमने कुछ बहादुरी दिखलाई। मैं इतना बुड्ढा हो गया, पर आज तक कोई आदमी मुझसे घूंसेबाजी में नहीं जीता। पिछली बार तो मैंने तुमको खड़े होते ही गिरा दिया था। पर अब की बार मैं खुद मुशकिल से बच सका। मालूम पड़ता है कि अब तुम आदमी बनते जाते हो।"

ओहारा की जबान से अपनी तारीफ सुन कर टाम को बड़ा संतोष हुआ। फिर कभी उसने ओहारा के हुक्म को मानने से इनकार नहीं किया और काम को बड़ी मिहनत और शौक से करने लगा। तीन चार दिन बाद वह फोयले से मिला और बोलाः-"कप्तान, तुम कब तक मुझे यहां रखना चाहते हो?"

फोयले ने नरमी के साथ कहाः-"जब तुम यह दिखला दोगे कि तुम एक मर्द की तरह बर्ताव करते हो और खराब लोगों

की संगत में पड़ कर अपने शरीर और घर को बर्बाद नहीं करोगे, उसी समय तुम यहां से जा सकते हो।"

टाम ने कुछ शरम के साथ जवाब दिया-"फोयले, मैं तुम्हारा बड़ा अहसानमंद हूं। मैं सचमुच बर्बादी की तरफ जा रहा था। पर अब मैं कभी इस रास्ते पर कदम नहीं रखूंगा। तुम जिस तरह चाहो मेरी जांच कर सकते हो।"

दो तीन दिन बाद फोयले और केसी के साथ टाम हेनली अपने घर पहुंचा। अब वह बिलकुल नया आदमी बन गया था और उसकी मा और बहिनों ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया। कुछ ही समय में राष्ट्रीय सेना और खेलने के क्लब के साथ फिर उसका ताल्लुक हो गया। सब से ज्यादा अचम्भे की बात यह हुई कि नेली बरनन फिर उसकी प्रेमिका बन गई।

टाम हमेशा ओहारा की बड़ी इज्जत करता रहा। वह बातचीत करते समय कितनी ही बार अपने दोस्तों से कहा करता था:-"तुम ओहारा को जानते हो? वह एक असली आदमी है!"



काल के मुंह में से निकल आये।



लार्न और उसके पास की फौजी चौकियों के हटाने के कई सबब थे। एक सबब यह था कि पुलनमोर के पास मंस्टर जिले में राष्ट्रीय सेना वालों का जोर बहुत बढ़ गया था और वहां की सरकारी सेना के लिये उनका दबा सकना नामुमकिन हो गया था। इस लिये अंगरेजी अफसरों ने तय किया कि मेलार्न से सेना को हटा कर मंस्टर वालों की मदद के लिये भेजा जाय। इस पर राष्ट्रीय सेना वालों ने निश्चय किया कि अब पुलनमोर की छावनी पर ही छोटे मोटे हमले किये जाय और उनके कामों में हर तरह से रुकावट डाली जाय जिससे वे मंस्टर की सेना की मदद न कर सकें।

इस सबब से फोयले और उसके वालंटियरों को मेलार्न छोड़ना पड़ा। उनके जिम्मे यह काम रखा गया कि वे पुलनमोर और बालून नामक कस्बों के बीच में रेल, तार और सड़कों को खराब करते रहें और इस तरह सेना के आने जाने में रुकावट डालें।

फोयले ने अपने वालंटियरों को छोटे मोटे कई हिस्सों में बांट दिया। इस वक्त भी उनका हैडकार्टर पहाड़ी के भीतर था पर

उनका कार्य-क्षेत्र इतना फैला हुआ था कि कई कई दिन तक उनको बाहर ही रहना पड़ता था। इन दिनों में वे या तो मैदान में किसी छुपी हुई जगह में रहते थे या इक्के दुक्के किसानों की झोंपड़ियों का सहारा लेते थे। इन किसानों को वालंटियरों से बड़ा प्रेम था और उनको इस बात का अभिमान था कि वे वालंटियरों की खातिर करने को चौबीसों घंटे तैयार रहते हैं। वालंटियरों के बहुत इनकार करने पर भी ये किसान उनको अपने बिस्तरों पर सुलाते थे और आप जमीन पर पड़ रहते थे। अक्सर यह देखा जाता था कि सफेद बालों वाली बुढ़ियाएँ वालंटियरों को आराम पहुंचाने के लिये अपना खाना, सोना भूल जाती थीं और उनकी निगरानी के लिये रात रात भर जागती रहती थीं।

एक दिन केसी के मातहत दल ने वालून के पास एक रेल के पुल को उड़ा दिया। इस पुल पर से फौजी सिपाहियों की एक गाड़ी निकलने वाली थी। अपना काम पूरा करने के बाद ये लोग तेजी के साथ एक पास वाले जंगल में लौट गये। इस जंगल में एक छोटा सा मकान बना हुआ था जिसमें पहिले एक अंगरेज साधू रहता था। पर जब से राष्ट्रीय दल और सरकार में लड़ाई होने लगी थी तब से वह उस बंगले को छोड़ कर इंगलैण्ड को चला गया था। इस वक्त राष्ट्रीय सेना वालों ने उसको अपना अड्डा बना रखा था और वे अक्सर उसमें ठहरा करते थे। यह मकान बहुत एकान्त में था और इस लिये वालं-

टियर इसे बहुत हिफाज़त की जगह समझते थे। यह मकान सड़क से तीन मील दूर था और एक टेढ़ी मेढ़ी पगडंडी वहां तक जाती थी जो इस समय बड़ी खराब हालत में थी। इस जगह को आस पास के देहाती लोग 'डेविल्स बेंण्ड' (शैतानी चक्कर) के नाम से पुकारते थे।

केसी के साथ नौ पिस्तौल वाले और दो बंदूक वाले, सब मिला कर ग्यारह वालंटियर थे। ये लोग रात को दस बजे उस मकान में पहुंचे। इनको पिछली दो रातें जागते हुवे बीती थीं। इस लिये झटपट कुछ खा पीकर सब लोग कम्बल ओढ़ कर जमीन पर सो रहे। सिर्फ़ दो आदमी मकान के सामने और पीछे की तरफ पहरा देने को जागते रहे। ये पहरे वाले घंटे घंटे में बदले जाते थे।

× × ×

अब थोड़ी देर के लिये इन वालंटियरों को इस मकान में सोता हुआ छोड़ कर हमको बाहर निकलना चाहिये। जब राष्ट्रीय सेना वाले इस मकान की तरफ आ रहे थे तो उनके पीछे पीछे क्लर्कों की सी पोशाक पहिने एक नौजवान शख्स भी चल रहा था। वह इन लोगों से इतने फासले पर था कि कोई उसे देख नहीं सकता था। जब वे लोग उस घने जङ्गल में जाकर निगाह से ओझल होगये और यह मालूम होगया कि वे उस मकान में ठहरने के लिये जा रहे हैं तो वह नौजवान आदमी पीछे लौट आया।

सड़क पहुंच कर वह झाड़ियों के भीतर छुपाई हुई अपनी पैरगाड़ी को ढूंढने लगा। पर बहुत देर तक मिहनत करने पर

भी उसका पता न लगा। तब वह बकता झकता हुआ पैदल ही वालून की तरफ रवाना हुआ और करीब साढ़े ग्यारह बजे सरकारी फौज की छावनी में पहुंचा। वह तुरंत फौज के बड़े अफसर मेजर स्मिथ के सामने हाजिर हुआ।

मेजर स्मिथ उसे देखते ही बोलाः-"कहो कप्तान ओकूले, तुम यहां कहां से आ पहुंचे? क्या तुम भी पुल के उड़ने की आवाज सुन कर वालून आये हो? मालूम होता है कि हम लोगों के इतनी कोशिश करने पर भी ये कंगले फिर से निकल भागे।"

ओकूले ने जवाब दियाः-"मेजर साहब, मैं किसी दूसरे ही काम के लिये आपसे मिलने आ रहा था। पुल के उड़ने का धड़ाका होने के थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि दस ग्यारह बागी मुझ से थोड़ी दूर पर खेतों के बीच से दौड़े हुये जा रहे हैं। उनमें से दो एक आदमियों ने मुझे देख लिया और इससे मैं बहुत डरा। पर उनको मेरे ऊपर शक न हुआ और वे अपने रास्ते चले गये। मैंने सोचा कि जरा इनके पीछे चल कर देखूं कि ये कहां जाते हैं। अपनी पैरगाड़ी झाड़ियों में छुपा कर मैं चुपके चुपके उनके पीछे चला। मैं ने देखा कि वे 'डेविल्स बैण्ड' वाले मकान की तरफ जा रहे हैं। हमने इस मकान पर कभी शक ही नहीं किया था। मुझे पूरा भरोसा है कि आज रात को वे उसी मकान में ठहरेंगे और अगर हम उनको सोते हुये घेर लें तो बड़ा काम बन जाय। मैं उस जगह को अच्छी तरह जानता हूं, क्योंकि जर्मनी की लड़ाई के पहिले मैं छुट्टियों

में अक्सर वहां पर झील में मछलियों का शिकार करने जाया करता था। अगर होशियारी से काम किया जाय तो उस मकान से बीस गज के फासले तक मजे से छुप कर पहुंचा जा सकता है। अगर जरूरत हो तो मैं भी आप लोगों के साथ चलने को तैयार हूँ।"

कप्तान ओकूले की बात सुन कर मेजर साहब खुशी के मारे उछल पड़े। वे बोले:-"शाबास! शाबास!! मि० ओकूले, तुम सचमुच बड़े चतुर आदमी हो। तुम को जरूर हमारे साथ चलना होगा। हम उन लोगों के इस तरह साफ बच कर निकल जाने से बड़े रंज में थे और सोच रहे थे कि देखें बड़े सेनापति साहब कैसी खरीखोटी सुनाते हैं। इस पुल के उड़ने की आवाज पुलनमोर तक पहुंची थी और वहां से बहुत सी सेना हमारी मदद के लिये आई थी। पर बागियों का कुछ पता न लगा और हमारे ज्यादातर सिपाही नाउम्मेद हो कर लौट आये। बचे हुये लोग भी अब आते ही होंगे। तब तक हम एक जगह बैठ कर हमला करने का कोई ढंग सोचलें। अगर हम उन सूअरों को पकड़ सकें तो बहुत कुछ संतोष हो सकेगा!"

मेजर स्मिथ ने एक घंटी बजाई और थोड़ी देर में ही तमाम फौजी और जासूसी महकमे के अफसर एक बड़ी मेज के चारों तरफ बैठ कर उस मुकाम का नकशा सामने रख कर आपस में सलाह करने लगे। कप्तान ओकूले उसी जिले का निवासी था और आजकल अंगरेजी सेना के जासूसी महकमे में काम करता

था। मेजर को उस पर सब से ज़्यादा भरोसा था। अखीर में उन लोगों ने हमला करने का ढंग पूरी तरह से तय कर लिया।

करीब एक बजे रात को अंगरेजी सेना के तीन बड़े बड़े दल मशीनगनों और बंदूकों से सज कर 'डेविल्स बैण्ड' की तरफ़ रवाना हुये। इनमें से एक दल पैरगाड़ी वालों का था जिनका मुखिया कप्तान ओकूले बनाया गया था। यह दल बहुत सा चक्कर काट कर धीरे धीरे उस मकान के पीछे की तरफ चला। बाकी दो दल मोटरलारियों में सवार थे। पगडंडी के पास पहुंच कर उन्होंने अपनी गाड़ियों को मजबूत पहरे में छोड़ दिया और पैदल सिपाही होशियारी के साथ उस मकान की तरफ रवाना हुये। चांदनी रात होने के सबब से रोशनी बहुत काफी थी, पर वे लोग आवाज होने के डर से बहुत धीरे धीरे चल रहे थे।

सब से पहिले कप्तान ओकूले का दल उस मुकाम पर पहुंचा। उस वक्त करीब ढाई बज चुके थे। ये लोग मकान से तीस गज की दूरी पर एक नाली में छुप कर बैठ गये। वे बिलकुल चुपचाप थे और जोर से सांस भी नहीं लेते थे। उस नाली में कीचड़ बहुत था और उससे उनको बड़ी तकलीफ होरही थी। पर जब तक दूसरे लोग न आ जाय तब तक वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। उनको पूरी उम्मेद थी कि आज हमको कामयाबी होगी और इस खुशी में वे तमाम तकलीफों को धीरज के साथ सह रहे थे। उनको इस हालत में करीब आधे घंटे तक बैठना पड़ा, जब

कि दूसरे दोनों दल वहां आ पहुंचे। कुछ देर बाद उस मकान में से धीरे धीरे बात करने की आवाज आई। यह देख कर सरकारी फौज वाले कुछ घबड़ाये, और अगर अचानक कोई नई बात हो जाय तो उसके लिये तैयार होकर बैठ गये। पर कुछ देर बाद आवाज आना बंद हो गया और फिर सन्नाटा छागया।

× × ×

करीब तीन बजे राष्ट्रीय सेना वालों का पहरा बदला। टाम नोलन और ओहारा आंखें मलते हुये पहरे की जगह पर खड़े हुये और पहिले दोनों वालंटियर सोने लगे। इन्हीं की बातचीत बाहर खड़े हुये सिपाहियों ने सुनी थी। उस मकान में दो बैठने के कमरे, एक सोने का कमरा और एक रसोई घर था। मकान के ऊपर छत की जगह फूस का छप्पर था। मकान के आगे और पीछे के दरवाजे मजबूत लकड़ी के बने थे। पीछे के कमरे में एक खिड़की थी और सामने वाले में दो। टाम नोलन पीछे के कमरे में जाकर पहरा देने लगा, पर अभी नींद के सबब से उसकी आखें पूरी तरह न खुली थीं। ओहारा सामने वाले कमरे में था और वह अपनी आदत के माफिक चारों तरफ निगाह गढ़ा गढ़ा कर देख रहा था।

थोड़ी देर तक कोई खास बात न हुई। अचानक उसके चेहरे का भाव बदला और उसने अपनी बंदूक उठाकर एक मुकाम पर निशाना लगाया। वह अपने मन में कहने लगाः-"कुछ समझ में नहीं आता। मुझे तो यह कोई अंगरेजी फौज का

आदमी जान पड़ता है।" उसे यह मालूम न था कि उस वक्त वह मकान चारों तरफ से सरकारी फौज वालों से घिरा हुआ था।

थोड़ी देर बाद उसे अच्छी तरह मालूम हो गया कि अंगरेजी फौज वाले उस मकान के पास आ पहुंचे हैं। एक हवलदार धीरे धीरे खिसकता हुआ बंगले के पास आ रहा था। एक बार गलती से उसका सिर जरा ऊंचा हो गया। उसी समय ओहारा ने एक गोली से उसका काम तमाम कर दिया। बंदूक की आवाज सुन कर तमाम वालंटियर जग पड़े।

ओहारा ने चिल्ला कर कहाः-"होशियार हो जाओ। दुशमन आ पहुंचा है।"

ओहारा के गोली चलाते ही सरकारी फौज भी उस मकान पर मशीनगनों और बंदूकों से गोलियों की बौछार करने लगी। आफत को सर पर आया देख कर राष्ट्रीय सेना के वालंटियर जहां तक हो सका जल्दी बचाव के मुकामों पर खड़े हो गये। कुछ लोगों ने इधर उधर पड़े हुये ईंट पत्थरों को लाकर खिड़कियों के सामने रख दिया और उनकी आड़ में से दुशमन पर गोलियां चलाने लगे। इतने में केसी ने हुकम दिया :-

"तुम लोग ज़्यादा गोलियां मत चलाओ। हमारे पास सामान थोड़ा है और न मालूम कब दुशमन हम पर हमला बोल दे।"

असल में सरकारी फौज वालों का इरादा यह था कि कुछ लोग मकान की बगल में होकर जायें और खिड़कियों में से भीतर बम फेंक कर चले आवें। पर वे ओहारा की निगाह से न बच सके और उनका इरादा रद्दी हो गया।

वालंटियरों को गोली चलाना बन्द करते देख कर मेजर स्मिथ की हिम्मत बढ़ी। तो भी उसको शक था कि राष्ट्रीय सेना वाले किसी तरह की चालाकी कर रहे हैं। उसने अपने आदमियों को भी गोली चलाने से रोक दिया और बड़े घमण्ड के साथ चिल्ला कर राष्ट्रीय सेना वालों से कहाः-

"तुम लोग हार मान कर बाहर आ जाओ। हमने तुमको चारों तरफ से घेर लिया है और अब तुम सिवा हार मानने के किसी तरह अपनी जान नहीं बचा सकते।"

केसी ने भीतर से जवाब दियाः-"अच्छा, जरा देर ठहरो। हम लोग आपस में सलाह करलें।"

मेजर स्मिथ ने तेजी के साथ कहाः-"ठीक है। पर जल्दी करो। मैं सलाह करने के लिये तुमको दो मिनट का वक्त देता हूं।"

केसी ने अपने साथियों को एक जगह इकट्ठा करके कहाः- "भाइयो, तुम क्या चाहते हो? हम लोग चारों तरफ से घिरे हुये हैं और बचने का कोई रास्ता नहीं है। तुम में से अगर कोई आदमी हार मान कर दुशमन की शरण में जाना चाहे तो मैं उसे रोकना नहीं चाहता। पर मैं तो अपनी जग[illegible] नहीं सकता

और अखीर दम तक लड़ कर मरूंगा । जो लोग हार मानना चाहते हों वे हट कर दूसरी तरफ खड़े हो जायें ।''

अगर्चे सैकड़ों सरकारी सिपाहियों के मुकाबले में इन बारह वालंटियरों का लड़ सकना नामुमकिन था और थोड़ी ही देर में सब का मारा जाना निश्चित था । तोभी कोई आदमी अपनी जगह से नहीं हटा; न कोई कुछ बोला । अखीर में ओहारा ने अपनी बन्दूक में नया कारतूस भरते हुए कहाः-

"हार मानने की बात को चूल्हे में जाने दो । मैं तो सिवा यमराज के और किसी के सामने हार मानना नहीं जानता । यह सच है कि मुझे भी मरना पड़ेगा, पर जब तक मेरे अंदर जरा भी जान बाकी रहेगी तब तक मैं, अगर हथियार न होगा तो खाली हाथों और दांतों से ही लड़ूंगा ।''

केसी ने तमाम लोगों पर फिर एक बार निगाह डाल कर कहाः-"अच्छा, सब लोग अपनी अपनी जगह पर खड़े हो जाओ। जब तक जिन्दगी है तब तक उम्मेद भी है । अपनी गोली बारूद होशियारी से खर्च करो । भगवान् हमारी मदद करेंगे ।''

इसी समय मेजर स्मिथ की जोरदार आवाज फिर सुनाई दीः—"वक्त खतम होगया । तुम लोगों ने कुछ फैसला किया ?"

केसी ने कहाः-"हां, तुम हमला करो । हम तैयार हैं ।''

मेजर ने चिल्ला कर कहाः-"अच्छा, तुम्हारी मरजी । पर मैं तुमको फिर जताये देता हूं कि अगर तुम फौरन हार मान कर हथियार नहीं डाल दोगे तो तुम में से एक भी आदमी इस

मकान में से जिन्दा न निकल सकेगा। हम मशीनगनों से एक एक को उड़ा देंगे।"

ओहारा ने ताने के साथ जवाब दियाः-"अजी मेजर साहब, जरा आगे तो बढ़ो। हम लोग सरकारी सेना वालों के चाचा हैं। तुम तो हमको उड़ाने की बात कर रहे हो; पर जरा मेरी निगाह से बच कर रहना, वरना तुम खुद ही उड़ जाओगे।"

इस पर फिर गोलियां चलने लगीं। सरकारी फौज वालों ने कई बम भी फेंके जो उस मकान की दीवार से टकरा कर बाहर ही फूट गये। सिपाहियों ने सामने के दरवाजे की तरफ दो मशीनगनें लगादीं और कुछ ही मिनटों में दरवाजा टुकड़े टुकड़े हो गया। पांच छै हिम्मत वाले सिपाही बन्दूकों की आड़ लेकर मकान के पास बम फेंकने को चले, पर या तो वे वालंटियरों की गोलियों से मारे गये या पीछे लौट आये। गुस्से में आकर मेजर स्मिथ ने तीसरी मशीनगन भी सामने की तरफ मंगा ली और तीनों मशीनगनें टूटे हुये दरवाजे और खिड़कियों की तरफ चलाई जाने लगीं।

वालंटियरों में से दो चार आदमी घायल हुये थे, पर उनके घाव बहुत भारी नहीं थे। वे लोग किसी तरह वक्त निकाल रहे थे, पर उनको अब तक बचने की कोई सूरत नजर नहीं आती थी। सब लोग मौत का निश्चय कर चुके थे और उसकी राह देख रहे थे। पर इससे उनके दिलों में बजाय डर के एक निराले आनन्द का भाव पैदा हो रहा था। वे लोग मौत के खयाल में

यहां तक चूर थे कि जब सिपाहियों ने मकान के छप्पर में आग लगा दी और चारों तरफ लपटें फैल गईं तब भी किसी ने उसका ज्यादा खयाल न किया।

केसी सोच रहा था कि देखें अंत की घड़ी किस तरह आती है। बाहर से सिपाहियों के चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं:- "अरे कुत्तो, बाहर आ जाओ, नहीं तो जिन्दा जल मरोगे।" पर इन बातों का किसी पर कुछ असर न पड़ा।

यकायक ओहारा ने केसी का हाथ जोर से पकड़ कर कहा:- "देखो, पीछे की तरफ बड़ा धुंवा फैल रहा है। इसमें होकर हम अच्छी तरह भाग सकते हैं। यह भगवान की ही कृपा है।"

सचमुच उस भीगे हुये छप्पर के जलने से बेहद धुंवा निकल रहा था और हवा के जोर से मकान के पीछे की तरफ जा रहा था। उसके सबब से पचास गज तक ऐसा अंधेरा हो रहा था कि कोई भी चीज दिखलाई नहीं पड़ती थी। यह घटना सब लोगों को एक दैवी आश्चर्य की तरह जान पड़ी।

केसी ने कहा:-"भाइयो, यह हमारे बचने का एकमात्र उपाय है। हमको धुंवे के बीच में होकर निकल चलना चाहिये और जब तक जान रहे किसी तरह न रुकना चाहिये। हम लोग मेलार्न की पैहाड़ी की तरफ चलेंगे। दरवाजा खोलो और मेरे पीछे एक कतार में चले आओ।"

वे मकान के बाहर निकल कर बाईं तरफ को भागे। उधर से दुशमन के कुछ सिपाही भी धुंवे में होकर मकान के भीतर

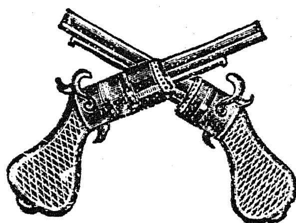
बम फेंकने को आ रहे थे। अंधेरे के सबब से उनमें से कई आदमी राष्ट्रीय सेना वालों से टकरा गये। पर वालंटियर लोग पिस्तौल, घूंसे, लात वगैरह हर तरह से उनको मारते हुये आगे बढ़ गये। राष्ट्रीय सेना वालों का असली इरादा समझने में दुशमन को कुछ देर लगी और उस हलचल में वे लोग काफी दूर निकल गये।

पांच सात मिनट बाद जब असली बात सरकारी सेना वालों की समझ में आई और मेजर स्मिथ को मालूम हुआ कि उसके तमाम शिकार धुंवे में होकर भाग गये तो वह सन्न रह गया और उसने फौज को उनका पीछा करने का हुकम दया। पर अब मौका निकल गया था और सरकारी सिपाही बिना सोचे समझे इधर उधर गोलियां चलाते हुये दौड़ने लगे। उनको दौड़ते दौड़ते सुबह हो गई और तब उन्होंने देखा कि वे एक पहाड़ी में आ फँसे हैं। उस समय राष्ट्रीय सेना के आठ आदमी सकुशल मेलार्न की पहाड़ी में अपने पुराने मुकाम पर जा पहुंचे थे। तीन आदमी दूसरे दिन तलाश करने पर जंगल में छुपे हुये मिल गये। वे लोग थकावट और घावों में से खून निकल जाने के कारण बड़े कमजोर हो गये थे और दूसरे लोगों के साथ न चल सकने के सबब से चुपके से किसी छुपे हुये मुकाम में पड़ रहे थे। वे लोग अपने साथियों की सेवा शुश्रूषा के फल से थोड़े ही अरसे में बिलकुल चंगे हो गये। चौथा आदमी मरा हुआ पाया गया। उसका शरीर गोलियों से चलनी हो गया था। साफ मालूम पड़ता था कि वह अंगरेजी फौज

वालों के हाथ में पड़ गया था और सब ने अपना गुस्सा उसी पर निकाला था।

पर दुशमन का नुकसान राष्ट्रीय सेना वालों की बनिस्वत बहुत ज्यादा हुआ था। उनके सात आदमी मारे गये थे और नौ सख्त घायल हुये थे। मरने वालों में कप्तान ओकूले भी शामिल था। उसके बारे में लोग कहते थे कि वह राष्ट्रीय सेना वालों का पीछा करते समय एक सरकारी अफसर की गोली से ही मारा गया था। मालूम नहीं कि गोली अचानक लग गई थी या जान बूझ कर मारी गई थी।

इस घटना का जो हाल सरकारी फौजी महकमे की तरफ से अख़बारों में छापने के लिये भेजा गया वह बिलकुल गलत था। पर उस जगह के गांव वाले आज भी 'डेविल्स बैण्ड' की लड़ाई का जिक्र बड़े ताज्जुब के साथ किया करते हैं।



एक निरपेक्ष डाक्टर।





लून में फ्रांसिस ओग्रीन नामका एक मशहूर डाक्टर रहता था। उसकी उमर करीब ५५ वर्ष की थी और वह शरीर का बड़ा लम्बा चौड़ा और हट्टा कट्टा था। उसका जन्म एक मामूली किसान के घर में हुआ था, पर वह अपनी लियाकत के सबब से तरक्की करते करते इस बड़े ओहदे पर पहुंच गया था। उसका बाप पक्का देशभक्त था और आयरलैंण्ड की आजादी उसको प्राणों से प्यारी थी। पर डाक्टर ओग्रीन राजनीति से सदा दूर रहता था। बालून के रहने वाले उसे जिले भर में सब से बड़ा डाक्टर समझते थे। अगर्चे उसकी रोजी उस कस्बे के निवासियों की बदौलत ही चलती थी पर वह उनके साथ बड़ी लापरवाही और घमण्ड का बर्ताव करता था। उसका चरित्र बड़े ऊंचे दर्जे का था, वह सदा खरी बात कहता था और उसकी शकल सूरत ऐसी रुआबदार थी कि सब लोग उसको बड़ी इज्जत की निगाह से देखते थे और साथ ही डरते भी थे। उसके दिमाग़ में कुछ खब्त भी था और कभी कभी वह बहुत गाली गलौज बका करता था। बालून में वह सिर्फ एक आदमी

को अपनी बराबरी का मानता था। वह था उस कस्बे का एक मात्र वकील। उन दोनों की दोस्ती भी बड़े अजीब ढंग की थी। गरमी, सरदी, बरसात कुछ भी क्यों न हो वे हर रोज बालून के बीच बाजार में एक दूसरे से मिलते थे और घंटे दो घंटे तक बातचीत करते हुये इधर उधर फिरते रहते थे। उनकी बात-चीत ऐसे जोर से होती थी कि हर एक राहगीर दूर से ही उसे सुन सकता था। उनका सलाम बंदगी का कायदा निराला था। डा० ओग्रीन झपट कर अपने दोस्त की तरफ जाता और चिल्ला कर कहताः-"ओ बदमाश, सलाम।"

वकील भी उसी तरह कड़ी आवाज में कहता-"ओ हत्यारे, सलाम।"

फिर डाक्टर कहता-"अच्छा, झूठे-डाकू।"

वकील फौरन जवाब देता-"अच्छा, कसाई,जहर देने वाले।"

इसके बाद वे दोनों दिल खोल कर हँसते और तब दूसरी बातचीत शुरू होती।

सन् १९१४ में जब जर्मनी की लड़ाई शुरू हुई तो ज्यादा उमर हो जाने पर भी डा० ओग्रीन अंगरेजी सेना में काम करने को चला गया और चार साल तक बालून के निवासियों ने उसकी शकल भी नहीं देखी। जब वह लौटा तो फिर अपना धंधा करने लगा। इन चार सालों में सिवा इसके कि उसकी रीछ की सी काली डाढी कुछ सफेद होगई थी, उसमें कुछ भी बदलाव न हुआ था। पर अब वह लड़ाई का बड़ा विरोधी बन

गया था और जब कभी बातचीत चलती तो कहता था:-"अगर मैं फिर कभी लड़ाई में जाऊं तो ईश्वर उसी दिन मुझे मार डाले। लड़ाई सिर्फ लालच, बेरहमी और खून की प्यास को बुझाने के लिये की जाती है। यह आदमियों का नहीं, जानवरों का काम है।"

अब भी स्थानीय वकील के साथ उसकी दोस्ती थी, पर अब वे पहिले की तरह एक दूसरे को गालियां नहीं देते थे। जब आयरलैण्ड में अंगरेजों और शिनफीनरों में लड़ाई होने लगी तो डाक्टर राजनीति से और भी दूर रहने लगा। इसी समय उसके दोस्त वकील को अंगरेजी अफसरों ने गिरफ्तार कर लिया। अगर्चे डाक्टर को मालूम होगया कि उसके दोस्त का छुपे तौर पर राष्ट्रीय दल वालों से ताल्लुक था तो भी इस तरह उसकी गिरफ्तारी से उसके दिल को बड़ी चोट लगी। अब वह लोगों की आंखों से और ज्यादा दूर रहने लगा। वैसे भी अब कस्बे की हालत बहुत बदल गई थी। जिस वक्त डाक्टर लड़ाई पर गया था उस वक्त कस्बे में जो लोग मुखिया या बड़े आदमी समझे जाते थे अब उनकी जरा भी पूछ न थी। अब जनता की बागडोर नये नये नौजवान लोगों के हाथ में थी और ये ही उस जगह की म्युनिसपैलिटी के कर्ताधर्ता थे। ये नौजवान बुजर्ग लोगों की बहुत ज्यादा इज्जत नहीं करते थे।

शुरू में राष्ट्रीय दल वाले और अंगरेजी अफसर दोनों समझते थे कि डाक्टर अगर उनका दोस्त नहीं है तो दुशमन भी नहीं है।

पर डाक्टर को खरी बात कहने की आदत थी और वह दोनों दलों पर तरह तरह के ऐब लगाया करता था। इस लिये कुछ समय बाद दोनों तरफ वाले उसे शक की निगाह से देखने लगे। पर डाक्टर को इस बात का कुछ खयाल न था। वह उन लोगों में से था जो किसी के खुशी या नाराज होने की परवा नहीं करते।

पर जैसे जैसे दोनों दलों का झगड़ा जोर पकड़ता गया डाक्टर की मुशकिल भी बढ़ती गई। एक दिन कुछ राष्ट्रीय वालंटियर लाठी और पिस्तौल लेकर उसके घर में हथियारों के लिये घुस गये। डाक्टर ने गुस्से में आकर उनको मारने के लिये एक कुरसी उठाई और सब को भगा दिया। पिस्तौल वाले वालंटियर ने डाक्टर को डराने की कोशिश की पर क्योंकि वह खाली थी इससे उसका कुछ असर न हो सका। जब यह खबर बालून के फौजी अफसर मेजर स्मिथ के पास पहुंची तो उसने कुछ सिपाहियों को डाक्टर के यहां से हथियार ले आने को भेजा। मालूम नहीं कि डाक्टर के यहां हथियार थे या नहीं, पर सिपाहियों को कुछ नहीं मिल सका। डाक्टर की रूखी बातों से सिपाही बहुत बिगड़े और मुमकिन था कि वे डाक्टर को बेइज्जत करते। पर मेजर स्मिथ ने उनको सख्त हुक्म दे रखा था कि डाक्टर को किसी तरह की तकलीफ न हो।

राष्ट्रीय सेना के अफसर को अपने वालंटियरों के पीटे जाने पर कुछ भी गुस्सा न आया। वरन् वे लोग इस बात पर खूब

हँसे और डाक्टर की हिम्मत की तारीफ करने लगे। उनका इरादा था कि एक बार डाक्टर के यहां फिर कोशिश की जाय, पर इसके दो ही दिन बाद एक ऐसा मामला हुआ जिससे उनको अपना इरादा छोड़ देना पड़ा।

उस दिन वालून में बाजार का दिन था। उसी दिन दोपहर को वहां होकर चार पांच सरकारी वालंटियरों की लाशों का जलूस निकलने वाला था। ये वालंटियर पहाड़ियों में राष्ट्रीय सेना वालों के हाथों मारे गये थे और उनकी लाशों को दफन करने के लिये डबलिन भेजा जा रहा था। लाशों के जलूस के साथ सेना का एक बड़ा दल भी था। जब यह जलूस निकल रहा था तो सिपाही जबर्दस्ती तमाम लोगों की टोपियां उतरवाते जाते थे। डाक्टर ओग्रीन उस समय बाजार में होकर कहीं जा रहा था। भीड़ के सबब से उसको रास्ते में ठहर जाना पड़ा। जब लाशों का जलूस पास आया तो उसने सभ्यता के कायदे के मुताबिक खुद ही अपनी टोपी उतार ली और जब लाशें निकल गईं तो फिर टोपी को सर पर रख लिया। बदकिस्मती से ज्योंही उसने टोपी सर पर रखी कि एक सिपाही उसके पास आ पहुंचा। यह सिपाही दो दिन पहिले डाक्टर के घर हथियार लेने गया था और शायद उसके रूखे बर्ताव की बात को अब तक न भूल सका था। उसने अपने हाथ से डाक्टर की रेशमी टोपी को उतार कर दूर फेंक दिया। घायल शेर की तरह गरज कर डाक्टर ने उस सिपाही के मुंह में एक घूंसा मारा जिससे वह

सड़क पर गिर पड़ा। यह देख कर दूसरे सिपाहियों ने डाक्टर पर हमला किया और उसे सड़क पर गिरा कर लातों से मारने लगे। एक अफसर ने जो सब के पीछे चल रहा था इस घटना को देखा और सिपाहियों को मारने से रोक कर डाक्टर को गिरफ्तार कर लेने का हुकम दिया। इस तरह डाक्टर की जान तो बच गई पर उसके कई दांत टूट गये, नाक में चोट लग गई, और चेहरा कई जगह से कट गया।

डाक्टर को ज्यादा देर तक हवालात में नहीं रखा गया। मेजर स्मिथ और दूसरे बड़े अफसर इस मामले से नाखुश थे और उन्होंने जहां तक हो सका जल्दी इसे रफा दफा कर देने की कोशिश की।

डाक्टर एक महीने तक लंगड़ाता रहा। पर उसने अपना काम बन्द नहीं किया। वह वालून के रहने वालों, सरकारी सिपाहियों राष्ट्रीय सेना के वालंटियरों वगैरह सब का इलाज उसी निरपेक्ष भाव से करता था। उसने अपनी बातचीत या किसी काम से यह हरगिज जाहिर नहीं होने दिया कि वह दोनों में से किसी दल को अच्छा समझता है। ज़्यादातर सरकारी सिपाहियों का खयाल था कि डाक्टर भीतर ही भीतर राष्ट्रीय सेना वालों से मिला है। पर दोनों तरफ के बड़े अफसरों को अब पूरी तरह विश्वास हो गया था कि डाक्टर जरूरत से ज्यादा निरपेक्ष है। अगर वह कोई मामूली आदमी होता तो मुमकिन था कि कोई उसकी तरफ खयाल नहीं करता। पर अब

उसे तरह तरह से तंग होना पड़ता था। अंगरेजी फौज के सिपाही उसकी मोटर को अक्सर रास्ते में रोक कर उसकी तलाशी लिया करते थे और उससे बार बार पैटरोल का हिसाब पूछा जाता था।

× × ×

राष्ट्रीय सेना वालों ने इस घटना के बाद उसको सिर्फ एक बार तंग किया। बात यह थी कि बालून के एक जमींदार का लड़का वहां से जासूसी महकमे का मुखिया था। जब सरकारी सेना ने राष्ट्रीय सेना से हमदरदी रखने वालों के मकान जलाये, तो राष्ट्रीय वालंटियरों के सेनापति ने निश्चय किया कि इसके बदले में सरकारी सेना वालों और उनसे सहानुभूति रखने वालों के मकान जलाने चाहिये। जेम्स केसी को बालून में उस जमींदार के मकान को जलाने का हुक्म दिया गया। पर यह काम आसान न था, क्योंकि इस मकान के बिलकुल पास ही सरकारी फौज की एक बड़ी चौकी थी। इसके सिवा मकान को उड़ाने के लिये बम और दूसरे मसाले जो हैडक्वार्टर से आने वाले थे वे समय पर नहीं आये। तोभी केसी ने निश्चय किया कि जिस तरह हो सके वह मकान जरूर जलाना चाहिये। इस काम के लिये इधर उधर से बहुत सा पैटरोल इकट्ठा करके डाक्टर ओब्रीन के बाग में छुपा दिया गया। यह बाग उस मकान की चारदीवारी से बिलकुल लगा हुआ था। जब रात कुछ ज्यादा हो गई तो वालंटियर चुपके से डाक्टर के मकान में घुस गये

और वहां रहने वाले तमाम आदमियों को बांध दिया। इसके बाद उन्होंने अपना काम शुरू किया। पहिले बहुत सी बोतलों में पेंटरोल भर कर उनमें कपड़े का पलीता लगा दिया गया। फिर धीरे धीरे उन बोतलों और पेंटरोल के दूसरे डिब्बों को उस जमींदार के मकान के पास पहुंचाया गया। जब वालंटियर ये चीजें ले जा रहे थे उस वक्त एक बड़े शिकारी कुत्ते ने उन पर हमला किया। पर एक वालंटियर ने उसके सर में बन्दूक के कुन्दे की ऐसी चोट मारी कि वह उसी जगह ढेर हो गया। जब सब सामान ठीक हो गया तब वे लोग एक खिड़की को तोड़ कर मकान के भीतर घुसे। वालंटियरों का एक दल कमरों में पेंटरोल छिड़कने लगा और दूसरे दल ने मकान के तमाम लोगों को पिस्तौलों से डरा कर और बाहर ले जाकर अस्तबल में बंद कर दिया। हर एक कमरे में पेंटरोल की दो चार बोतलें डाल दी गईं और तमाम जल सकने वाली चीजों को पेंटरोल से अच्छी तरह भिगो दिया गया। यह तमाम काम खतम करने पर वालंटियर लोग दो एक कमरों में जलता हुआ कपड़ा फेंक कर जल्दी से बाहर निकल आये और बिना हल्लागुल्ला मचाये पहाड़ियों की तरफ चलते बने।

आग कुछ ही लगी थी कि चौकी के सिपाहियों ने उसे देख लिया। वे लोग फौरन मौके पर पहुँचे और उनको पूरा भरोसा था कि हम अभी आग को बुझा देंगे। वे एक खिड़की में होकर भीतर जाने की कोशिश कर रहे थे कि पेंटरोल की एक बोतल

बड़े जोर से फूटी। फिर एक के बाद दूसरा धड़ाका होने लगा।

सिपाहियों के अफसर ने चिल्ला कर कहाः-"पीछे चले आओ, मकान में बम रखे हुये हैं। पर इस हुक्म के पहिले ही सिपाही अपनी जान बचाने के लिये भागने लग गये थे। अब धड़ाके और भी जोर से हो रहे थे और उनके सबब से किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि मकान के पास जाने की कोशिश करे। उस कस्बे में आग बुझाने का और कोई उपाय न था अखीर में जब सुबह हुई तो तमाम मकान और उसका सामान जल कर कोयलों और ईंट पत्थरों का ढेर हो चुका था।

सुबह होते ही सरकारी सिपाही राष्ट्रीय सेना वालों को ढूंढ़ने के लिये आस पास के मकानों की तलाशी लेने लगे। उनका खयाल था कि शायद अभी वे लोग यहीं किसी जगह छुपे होंगे। उन्हीं में से कुछ सिपाही डाक्टर के यहां पहुंचे और उसको अपने नौकरों के साथ बंधा पाया। इस घटना के सबब से डाक्टर के दिल पर बड़ी चोट लगी। पर दूसरे दिन उसको राष्ट्रीय सेना के सेनापति का खत मिला जिसमें उसे बांधने के लिये माफी मांगी गई थी। इस खत से डाक्टर का रंज बहुत कुछ कम हो गया।

उधर अंगरेजी सिपाहियों का यह शक कि डाक्टर भीतर ही भीतर बागियों से मिला है, इस मामले से और भी मजबूत हो गया। वे लोग उसको बहुत तंग करते पर मेजर स्मिथ ने

उनको ऐसा करने से रोक दिया। इन सब बातों से डाक्टर को बड़ा गुस्सा आता था और वह कभी एक दल को और कभी दूसरे दल को गालियां दिया करता था। उसने इस बात की कसम खाली थी कि वह किसी दल की तरफदारी नहीं करेगा।

× × ×

कुछ दिन बाद फोयले के पास खबर आई कि सरकारी सेना का एक दल सुबह होने से पहिले पुलनमोर से बालून की तरफ जाने वाला है। जब से राष्ट्रीय सेना का जोर बढ़ा था तब से सरकारी फौज वाले अंधेरे में सफर करने की हिम्मत बहुत कम करते थे। इसलिये फोयले ने इस मौके पर चूकना ठीक न समझा। दिन के वक्त भी पहाड़ियों के ऊपर से सरकारी फौज पर गोलियां चलाई जा सकती थीं। पर ऐसा न करने का सबब यह था कि आज कल वालंटियरों के पास गोली बारूद की कमी थी और उनकी मशीनगन भी किसी दूसरे जिले में मांगी हुई गई थी। फोयले चाहता था कि गोली बारूद के लिये सेना-पति के पास आर्डर भेजने के पहिले कोई बड़ा काम कर दिखाना चाहिये। इस लिये उसने अंगरेजी सेना के इस दल पर हमला करने का निश्चय कर लिया। उसी दिन शाम को सेनापति के यहां से उसके पास दो सुरंगें आई थीं। उनमें से एक सुरंग को आधी रात के वक्त बालून से छै मील के फासले पर सड़क के एक मोड़ पर गाड़ दिया गया। उस जगह से पचास गज की दूरी पर एक बड़ी चट्टान के पीछे एक आदमी बैठाया गया

जिसके हाथ में सुरंग को चलाने के लिये बिजली की बैटरी और तार था। उससे कुछ दूर पर पहाड़ों के ऊपर जगह जगह वालंटियरों के दल बंदूकें लेकर छुपे हुये थे। पर उस रात को अंगरेजी सिपाहियों का कोई दल उस रास्ते से नहीं गुजरा। दिन निकल आने पर वे लोग वहां से उठ गये और खा पीकर और कुछ आराम करके फिर अपनी जगह आ बैठे। जब उनको यह मालूम हुआ कि उनके पीछे से सिपाहियों का एक छोटा दल उनकी सुरंग पर होकर बेखटके चला गया तो उनको बहुत रंज हुआ। फिर भी वे धीरज के साथ बैठे हुये किसी दूसरे सेना दल की राह देखने लगे।

× × ×

उस दिन शाम को अंधेरा हो जाने पर डाक्टर ओग्रीन एक मरीज को देख कर अपनी मोटर पर बालून को लौट रहा था। सड़क के मोड़ पर जहां राष्ट्रीय सेना वालों की सुरंग गड़ी हुई थी उसको सरकारी सेना की दस मोटरलारियां बालून की तरफ से आती मिलीं। सिपाहियों ने डाक्टर की मोटर को रोक लिया और उससे तरह तरह के सवाल करने लगे। अखीर में सिपाहियों के अफसर ने उसको हुकम दिया कि-"अपनी मोटर बीच में करलो और हमारे साथ चलो।"

डाक्टर ने धीरे से कहा:-"जनाब, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे घर जाने दें। मैं इन झगड़ों से किसी तरह का ताल्लुक नहीं रखता। मेरा काम लोगों को तकलीफ से छुड़ाना

है। मैं मारकाट करने वालों के साथ हरगिज शामिल होना नहीं चाहता।"

अफसर ने झल्ला कर कहाः—"मैं तुम्हारी ये बेमतलब की बातें सुनना नहीं चाहता। तुम अपने को गिरफ्तार समझो, और अगर ज्यादा गड़बड़ करोगे तो अभी खतम कर दिये जाओगे। बस, सीधी तरह अपनी मोटर को लारियों के बीच में करके हमारे साथ चले आओ।"

डाक्टर ने जोर के साथ जवाब दियाः—"मैं आपका हुकम नहीं मान सकता। मैं एक बिलकुल आजाद आदमी हूं और मुझे आपके साथ चलना सख्त नापसंद है। इसलिये जब तक आप मुझे जबर्दस्ती पकड़ कर न ले जांय तब तक मैं आपके साथ नहीं जाऊंगा।"

अफसर जरा देर तक उसकी तरफ ताकता रहा और तब बोलाः—"सारजंट, तुम इस शख्स को अपनी हिरासत में ले लो और उसका कोई उज्र मत सुनो।" फिर उसने एक ड्राइवर को हुकम दिया—"तुम डाक्टर की खाली मोटर को हांक ले चलो।"

डाक्टर सड़क पर खड़ा हुआ गुस्से के मारे कांप रहा था। इसी समय आगे वाली मोटरलारी जरा आगे बढ़ी और ठीक उस जगह जा पहुँची जहां पर राष्ट्रीय सेना वालों की सुरंग गड़ी हुई थी। सारजंट ने अपना हाथ डाक्टर के कंधे पर रखने के लिये बढ़ाया ही था कि यकायक वज्र के समान शब्द हुआ।

आगे वाली मोटरलारी एक दम ऊपर उठ गई और चूरचूर होकर सड़क पर गिर गई। डाक्टर और दूसरे सिपाही जो उसके पास खड़े थे उछल कर दूर जा गिरे। मिनट भर के लिये चारों तरफ सन्नाटा छा गया। सब से पहिले डाक्टर को होश आया और वह छुपने के लिये चट्टानों की तरफ भागा।

उसी वक्त पहाड़ी पर से मोटरों पर गोलियां चलने लगीं। सिपाहियों ने भी जवाब में अपनी मशीनगन चलाई। दो घंटे तक दोनों दलों में घमासान लड़ाई होती रही। इसके बाद बहुत सरकारी फौज अपने साथियों की मदद को आ पहुंची और तमाम पहाड़ी सर्चलाइट की रोशनी से जगमगा उठी। यह देख कर राष्ट्रीय सेना वालों ने गोली चलाना बन्द कर दिया और अपने मुकाम की तरफ चल दिये। अंगरेजी फौज ने कुछ दूर तक पीछा किया पर उन पहाड़ियों में रात के वक्त उनको पकड़ सकना नामुमकिन था। कई घंटों के बाद सरकारी फौज थकी और चिढ़ी हुई अपनी छावनी को वापस चली गई।

× × ×

जब सवेरा हुआ तो लोगों ने देखा कि डाक्टर का मुर्दा शरीर पहाड़ी के नीचे पड़ा है। न मालूम किस तरफ की गोली से वह मारा गया था। क्योंकि वह भाग कर दोनों दलों के बीच में जा पड़ा था और दोनों तरफ वाले उसे दुशमन समझ कर मार सकते थे।

मरने के वक्त भी डाक्टर ओग्रीन निरपेक्ष ही बना रहा!

युद्ध के दावपेच।





प्तान निकलसन वालून की अंगरेज़ी वालंटियर सेना में नौकर था। ज़ाहिर में वह बड़ा सीधासाधा मालूम पड़ता था, पर जो लोग उसका पिछला हाल जानते थे उनको मालूम था कि उसके जैसा बदमाश और चालाक आदमी उस तमाम पलटन में मिलना मुशकिल था। निकलसन, मिडशायर (इंगलैंण्ड) के एक बड़े जमींदार का लड़का था। उन्नीस साल की उमर में ही वह पक्का गुंडा बन गया और उसने एक बुड्डे मालदार की औरत को फँसा लिया। उसके इस काम की चारों तरफ बुराई होने लगी और मा बाप ने नफरत के साथ उसको घर से निकाल दिया। जब बुड्ढे शख्श को अपनी औरत के चालचलन का पता लगा तो उसने शरम के मारे आतमहत्या करली। निकलसन कुछ दिन तक उस औरत के साथ रहा और बाद में मौका पाकर उसका वेशकीमत मोतियों का हार और कुछ दूसरे जेवर लेकर भाग गया। उसके इस वर्ताव से औरत के दिल पर बड़ी चोट लगी और वह अपने बुड्ढे पति के लिये बड़ा शोक करने

लगी। कुछ सोच समझ कर उसने इस मामले को यों ही रहने दिया और पुलिस को खबर नहीं दी।

इसके बाद छै साल तक निकलसन इधर उधर लोगों को ठग कर अपना काम चलाता रहा। कई बार उसके फँसने का मौका आया पर वह बार बार नाम बदल कर बच गया। उसकी अक्ल तेज थी और उसे सभ्य समाज में मिलने के कायदे खूब आते थे, इस लिये वह बिना कुछ काम किये दूसरे लोगों के भरोसे चैन करता था। वह ताश खेलने में भी बड़ा होशियार था और हमेशा जुए में कुछ न कुछ जीत लेता था। इस तरह रहते रहते जर्मनी की लड़ाई का जमाना आ पहुंचा। जबर्दस्ती भरती के कानून के मुताबिक उसको भी फौज में शामिल होकर लड़ने को जाना पड़ा। यहां भी उसने अपने पुराने ढंग न छोड़े और वह जुआरी अफसरों के साथ ताश खेल कर उनका रुपया अपनी जेब में पहुंचाता रहता था। लड़ने के वक्त वह सब से पीछे रहता था, पर अपनी चालाकी से बड़े अफसरों को हर तरह से खुश रखता था। इस लिये सब से कम खतरा उठाने पर भी उसे दूसरों से ज्यादा बहादुरी के मेडल मिल गये।

जब लड़ाई खतम हो गई और निकलसन लौट कर इंगलैण्ड में आया तो उसे मालूम हुआ कि अब वहां का रंग बदल गया है। बेकारी के सबब से अब और भी बहुत से आदमी 'अकल' से गुजारा करने वाले पैदा हो गये थे और उन सब के मुकाबले

में कामयाबी हासिल कर सकना सहज काम न था। इस लिये बहुत सोच विचार कर उसने आयरलैण्ड की वालंटियर सेना नौकरी करना तय किया। इस काम में तनखाह बहुत काफी मिलती थी और इसी लिये उसने यह नौकरी पसंद की थी। बालून में आने के बाद वह कोई ऐसा तरीका तलाश करने लगा जिससे तनखाह के सिवा कुछ ऊपरी आमदनी भी हो सके। पर कुछ ही दिनों में उसे मालूम हो गया कि उसके साथी उससे भी ज्यादा चालाक हैं और वह ताशों के खेल में या दूसरी किसी तरकीब से उनसे कुछ नहीं पा सकता।

इसके बाद निकलसन इस बात की कोशिश करने लगा कि राष्ट्रीय सेना वालों के भेदों का पता लगा कर अंगरेजी सरकार से कुछ इनाम हासिल किया जाय। पर इस काम में भी वह नाकामयाब रहा। उसके लिये आयरलैण्ड वालों के तरीके और ढंगों को समझ सकना बिलकुल नामुमकिन बात थी। इसलिये उसकी खबरें सदा गलत निकलती थीं और कभी कभी तो उनके सबब से बड़ा नुकसान हो जाता था। एक बार उसने एक ऐसे शख्श के खिलाफ शिकायत की जो पक्का राजभक्त था। इस खबर के आधार पर सिपाहियों ने एक दिन रात के समय उस शख्श की मोटर को रास्ते में रोक लिया और पूछताछ करने लगे। इससे उस को इतना गुस्सा आया कि उसने मोटर रोकने वाले सिपाहियों को मार कर भगा दिया। जब इस घटना का पता मेजर स्मिथ को लगा तो उसे बड़ी नम्रता के साथ उस

शख्श से माफी मांगनी पड़ी। पर तो भी वह पूरी तरह से राजी नहीं हो सका।

अखीर में निकलसन ने सोचा कि राष्ट्रीय सेना वालों से मल कर आमदनी का कोई ढंग निकालना चाहिये। उसे न इंगलैण्ड से प्रेम था न आयरलैण्ड से घृणा। उसका उद्देश सिर्फ रुपया कमाना और मौज करना था। उसने देखा कि राष्ट्रीय सेना वालों को हथियार और गोली बारूद की बड़ी जरूरत रहती है। इस लिये अगर उनके एजंटों से ताल्लुक़ कर लिया जाय तो काफी आमदनी हो सकती है।

अपने इस इरादे को पूरा करने के लिये उसने एक तरकीब निकाली। एक दिन उसने अपने एक साथी अफसर का पिस्तौल और पचास कारतूस चुराये और उनको ले जाकर एक टूटे फूटे मकान में एक बड़े पत्थर के नीचे छुपा दिया। इन चीजों के साथ एक पुरजा भी था जिसमें लिखा थाः—"इन चीजों को तुम कितनी कीमत की समझते हो? बाद में और भी चीजें आने वाली हैं।" यह पुरजा उसने हाथ से नहीं लिखा था, बल्कि एक अखबार में से छपे हुये अक्षर काट कर उनको जोड़ कर बनाया था। वह थोड़ी देर तक वहां खड़ा रहा। कुछ देर बाद सामने वाले मकान में से एक आदमी बाहर निकला। उस मकान वाले पर सरकारी अफसरों को शक था और इस लिये उसे नजरबंद करके रखा गया था। निकलसन ने हाथ से पत्थर की तरफ इशारा किया,

और चुपचाप चला गया। दूसरे दिन उस जगह जाकर जब उसने पत्थर को हटाया तो उसके नीचे से तीन पौण्ड का एक नोट लिफाफे में रखा मिला। पंद्रह दिन के भीतर उसने पिस्तौलों को चुरा चुरा कर बीस पौण्ड पैदा किये। पिस्तौलों की चोरी से छावनी में बड़ी हलचल मची पर निकलसन ने अपने ऊपर किसी को शक नहीं होने दिया।

× × ×

एक रात को निकल्सन बालून के होटल में बैठा हुआ एक क्रिकेट खेलने वाले नौजवान से बातचीत कर रहा था। बातें होते होते पता चला कि वह राष्ट्रीय सेना वालों का एजंट है। पर उस दिन कोई मतलब की बात न हो सकी। जब ये लोग दूसरी बार मिले तो कुछ देर तक इधर उधर की बातें करने के बाद असली मतलब पर आये। वह नौजवान पुलनमोर का रहने वाला था और उसने अपना नाम हडसन बतलाया। निकलसन समझ गया कि इसने अपना नाम गलत बतलाया है तोभी उसको भरोसा था कि उसका काम सच्चा है। दोनों ने आपस में जरूरी शरतें तय करलीं। निकलसन ने इस बात का पूरा खयाल रखा कि वह किसी तरह से धोखे में न पड़ जाय या उसका भेद सरकारी अफसरों पर न खुल जाय।

अब की बार निकलसन का काम बहुत खतरनाक था। उसको दोनों तरफ जासूसी करनी थी। पर इस काम में फायदा

खूब था और दोनों तरफ से इनाम मिलने की उम्मेद थी। वह यह भी समझता था कि अगर मैंने किसी के साथ दगाबाजी की तो फिर जान नहीं बच सकती। सब बातों पर अच्छी तरह गौर करके अखीर में उसने इस काम को करने का पक्का इरादा कर लिया। वह एक तरफ की सुनी हुई बातों में से जितना हिस्सा मुनासिब समझता था दूसरी तरफ वालों को सुना देता था। राष्ट्रीय सेना वाले भी उसकी तरफ से बहुत चौकन्ने रहते थे और यकायक उसकी बात पर एतबार नहीं करते थे।

उसने पहली बार राष्ट्रीय सेना वालों को जो खबर दी वह बड़े काम की थी। पर उन लोगों ने बिना जांच किये उस पर अमल करना मुनासिब न समझा। बाद में पता लगा कि वह खबर दरअसल ठीक थी। इससे उनको निकलसन पर कुछ भरोसा हुआ और उन्होंने तय किया कि अब वह जो खबर दे उससे फायदा उठाने की कोशिश की जाय। पर बहुत दिनों तक ऐसा कोई मौका हाथ न लगा।

एक दिन शाम के वक्त कप्तान निकलसन पुलनमोर में हडसन के एक साथी से मिला। उसने बतलाया कि "कल सवेरे सात बजे की गाड़ी से सरकारी फौज के लिये बहुत सी पिस्तौलें और कारतूस आ रहे हैं। वे तीन बक्सों में भरे हुये हैं और उनके ऊपर 'लोहे का सामान' का लेबिल लगा है। ये बक्स कस्बे के एक मशहूर सौदागर के पते से आने वाले थे। सब से ज्यादा

ताज्जुब की बात यह थी कि उन पर पहरे का कोई इंतजाम न था। पर ज्योंही गाड़ी स्टेशन पर पहुंचेगी पुलनमोर की फौज के सिपाही उनको अपने कब्जे में ले लेंगे।" हडसन के साथी की उत्सुकता और जाने की जल्दी को देख कर उसने समझ लिया कि कल पुलनमोर के स्टेशन पर जरूर ही कोई मजेदार मामला होगा।

इस तरह विचार करता हुआ वह अपनी छावनी में पहुंचा। वहां उसने जासूसी महकमे के अफसर को खबर दी कि उसे कुछ लोगों की बातचीत से ऐसा मालूम हुआ है कि राष्ट्रीय सेना वाले कल या जल्दी ही कोई 'बड़ा काम' करने वाले हैं। वह 'बड़ा काम' क्या होगा यह उसने उन लोगों की समझ पर छोड़ दिया। इस खबर को पाकर उस रात को छावनी में बड़ी तैयारियां होती रहीं और लोग उत्सुकतापूर्वक दूसरे दिन की राह देखने लगे।

× × ×

उधर रात के एक बजे राष्ट्रीय सेना का सेनापति, फोयले और दूसरे खास २ काम करने वाले एक छुपी हुई जगह में बैठे हुये इस बात पर बहस कर रहे थे कि उन हथियारों को कैसे लूटा जावे। उनको पिस्तौलों और कारतूसों की बड़ी सख्त जरूरत थी और उनका पक्का इरादा था कि कैसे भी खतरे का सामना क्यों न करना पड़े, इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना

चाहिये। पुलनमोर के स्टेशन पर उनको लूट सकना नामुमकिन बात थी। इस लिये सिर्फ एक तरकीब यही थी कि रास्ते में गाड़ी को रोक कर हथियारों को निकाल लिया जाय। पर रेल की पटरी के आसपास हमेशा सिपाही गश्त लगाते रहते थे और अगर एक भी सिपाही उनको देख लेता और बंदूक चला कर अपने साथियों को खबरदार कर देता तो पंद्रह मिनट के भीतर तमाम रास्ते रोक दिये जा सकते थे। इसके सिवा और भी कितने ही सवाल थे; जैसे गाड़ी को कहां रोका जाय, हथियारों को किस तरह लाया जाय, गाड़ी को रोकने वाले किस तरह वापस आवें। सब लोगों की राय थी कि बिना मोटर के हथियार नहीं लाये जा सकते और गाड़ी रोकने वालों की हिफाजत का कोई खास इंतजाम करना चाहिये।

अखीर में उन लोगों ने इस काम के करने का एक उपाय निश्चित किया। यह तय हुआ कि फोयले दस पिस्तौल वाले वालंटियर लेकर गाड़ी को रोकने और हथियारों को छुड़ाने का काम करेगा और सेनापति के ऊपर उनकी हिफाजत की जिम्मेदारी रहेगी।

रेलगाड़ी को रोकने के लिये जो मुकाम सोचा गया था वह पुलनमोर से तीन मील दूर था। उससे आधी मील के फासले पर हिन्दुस्तान से लौटे हुये एक पेंशनयाफ्ता कर्नल का बंगला था। वह कर्नल पक्का राजभक्त था, अगर्चे फौजी महकमे के बड़े अफसरों के साथ उसका बहुत झगड़ा होता रहता था। वह

एक बुड्ढा आदमी था और उसका मिजाज चिड़चिड़ा था। पर राष्ट्रीय सेना वाले उसे बड़ा अच्छा आदमी समझते थे क्योंकि दो तीन महीने पहले वे उसके घर में घुस कर बहुत से हथियार उठा ले गये थे।

उस दिन सुबह छे बजे जब कि बुड्ढा कर्नल सो रहा था, कुछ वालंटियर उसके बंगले में घुसे और चुपके से उसकी मोटर को बाहर निकाल लाये। कुछ वालंटियर बंगले के भीतर पहरा देने लगे कि अगर कोई नौकर चाकर जग जाय तो उसको वहीं रोक दिया जाय। दो सरकारी सिपाही गश्त लगाते हुये रेल की पटरी के किनारे किनारे जा रहे थे। वालंटियरों ने पीछे से उनको जा पकड़ा और हथियार छीन कर बांध दिया। यह सब काम गाड़ी आने के आठ दस मिनट पहिले हो गया। अब फोयले और उसके दस साथी एक छुपी हुई जगह में बैठ कर गाड़ी की राह देखने लगे। जब गाड़ी आती दिखलाई दी तो एक आदमी पटरी के बीच में खड़ा होकर लाल झंडी हिलाने लगा। गाड़ी बड़ी खड़खड़ाहट के साथ झंडी दिखलाने वाले के ठीक सामने आकर रुक गई। फौरन एक वालंटियर पिस्तौल लेकर इंजन के ऊपर चढ़ गया और बाकी लोग पीछे के डिब्बों में हथियारों के संदूक तलाश करने लगे। सब मुसाफिरों को कह दिया गया कि वे चुपचाप बैठे रहें, किसीसे कुछ नहीं कहा जायगा। पांच मिनट के भीतर उन लोगों ने दूसरे सामान के नीचे से तीन बकस खींच कर निकाल लिये जो देखने में कप्तान

निकलसन के बताये मालूम पड़ते थे। बकस बहुत भारी थे और कुछ मुसाफिरों की मदद से उनको उठा कर मोटर में रखा गया। उसी वक्त फोयले को बंदूक की एक आवाज सुनाई दी जो कि उसे होशियार करने के लिये उसके साथियों ने चलाई थी। वह समझ गया कि अब देर करना खतरनाक है। इधर रेलगाड़ी फिर से स्टेशन की तरफ चली और उधर मोटर बड़े जोर से कर्नल के बंगले की तरफ दौड़ी। बंगले के अहाते के पास पहुंच कर उन्होंने ऊपर से ही उन बकसों को भीतर की तरफ डाल दिया। मोटर उसी तेजी से चलने लगी और कुछ ही मिनटों में पहाड़ी के नीचे पहुंच गई। उसे वहीं छोड़ दिया गया और वालंटियर पैदल पहाड़ी के भीतर घुस गये।

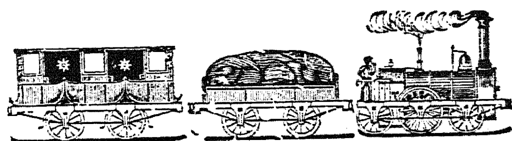
कर्नल के मकान में जो वालंटियर मौजूद थे उन्होंने हथियारों के बकसों को अस्तबल में सैकड़ों मन घास के ढेर के नीचे छुपा दिया। दो दिन तक वे बकस वहीं रखे रहे और तब थोड़ा थोड़ा करके उनमें रखे हथियारों को राष्ट्रीय सेना के भंडार में पहुंचा दिया गया।

सेनापति ने फोयले और उसके साथ वाले वालंटियरों के लौटने का बड़ा अच्छा इंतजाम किया था, जिससे वे लोग बिना किसी मुशकिल के साफ बच कर निकल गये। सड़कों के चौराहों और दूसरे खास मुकामों पर कटे हुये पेड़ और बिना पहियों की गाड़ियां डाल कर सरकारी सेना का रास्ता रोक दिया गया था। कई मुकामों पर राष्ट्रीय सेना के वालंटियर भी छुपे

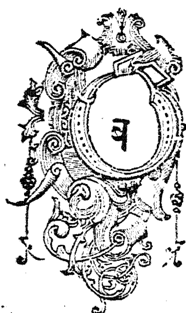
हुये थे जिन्होंने गोलियां चला कर सरकारी फौज वालों को वहुत देर तक अटका रखा ।

× × ×

उसी दिन कप्तान निकलसन किसी काम से बाहर जा रहा था । वह एक ऊंची मोटरलारी पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था कि अचानक उसकी पिस्तौल परतल्ले से निकल कर मोटर में गिर गई । उसी समय फैर होने की आवाज आई और पिस्तौल की गोली जमीन पर खड़े हुये निकलसन की छाती में बाईं तरफ लगी । लोग उसे उठा कर छावनी के अस्पताल में ले गये, पर उसके प्राण रास्ते में ही निकल गये ।



देशभक्ति का प्रमाण ।



हुत से लोग इस घटना पर एतवार नहीं करेंगे क्योंकि यह किसी अखबार या सरकारी गजट में प्रकाशित नहीं हुई। खैर, वे लोग इसे एक क़िस्से की तरह ही पढ़लें।

× ×

सन् १६२१ के अप्रेल महीने में राष्ट्रीय सेना का स्थानीय सेनापति पुलनमोर में अचानक पकड़ लिया गया। वह कस्बे के एक होटल में बैठा हुआ था कि सरकारी सेना ने उस मकान को चारों तरफ से घेर लिया। करीब दस बारह नौजवान पकड़े गये जिनमें सेनापति भी शामिल था। जब इन सब को सरकारी छावनी में लाये तो कुछ लोगों ने सेनापति को पहिचान लिया। इस बात से सरकारी अफसरों की खुशी का ठिकाना न रहा, तोभी उन्होंने इस बात को बिलकुल छुपा कर रखा। यह खबर डबलिन में रहने वाले बड़े सेनापति के पास भेजी गई और पूछा गया कि राष्ट्रीय सेना के सेनापति का क्या किया जाय ? लोगों का अंदाजा था कि सेनापति को डबलिन भेजा जायगा, जहां पर उसे फांसी दी जायगी या गोली से उड़ा दिया जायगा।

ये सब बातें राष्ट्रीय सेना वालों को अपने एक दोस्त से, जो सरकारी फौज वालों में मिला हुआ था, मालूम हुईं। इस खबर से उनको बड़ा धक्का लगा, क्योंकि सेनापति बड़ा होशियार आदमी था और सब लोग दिल से उसे प्यार करते थे। नायब सेनापति भी बहुत लायक आदमी था। पर वह ज़्यादा पढ़ालिखा और विचारक शख्श था। वीरता में वह किसी से कम न था और उसमें हर एक बात को समझने की अनोखी ताकत थी। सेनापति तमाम बातों का निश्चय उसकी सलाह से ही करता था।

बड़े सेनापति के पकड़े जाने से सब से ज्यादा मुशकिल नायब सेनापति के सामने पेश आई। अब उसकी जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई। उसके लिये सब से मुशकिल काम उन नौजवानों को कबजे में रखना था जो सेनापति के पकड़े जाने से अधीर हो गये थे और चाहते थे कि उसको छुड़ाने के लिये फौरन कोई भयंकर साहसपूर्ण काम करना चाहिये। उस रात का जब राष्ट्रीय सेना वालों की कमेटी हुई तो सिवा नायब सेनापति के हर एक शख्श बिना देर लगाये कुछ न कुछ करने के पक्ष में था। लोगों के इस जोश के सबब से नायब सेनापति को आगे का प्रोग्राम (कार्यक्रम) तय करने में बड़ी मुशकिल जान पड़ी। उसने कहा:—"हम लोग अब बड़े सेनापति के लिये कुछ नहीं कर सकते। जब हम लड़ाई कर रहे हैं तो इस तरह की घटनाओं का होना लाज़िमी बात है। अगर हम जल्दी में कोई उलटा सीधा

काम कर बैठेंगे तो उससे हमारी हालत और भी खराब हो जायगी।"

वह पंद्रह मिनट तक इस तरह लोगों को समझाता रहा। पर जब मामला बढ़ने लगा और दूसरे आदमी किसी तरह चुप रहने को राजी न हुये तो कप्तान फोयले बोलाः-

"मैं समझता हूं कि सब लोग विना देर लगाये कोई न कोई जोरदार उपाय करना चाहते हैं। इस लिये मेरी राय में सब को इस बारे में अपना अपना खयाल जाहिर करना चाहिये कि यह काम किस तरह किया जाय जिससे कामयाबी हो सके।"

नायब सेनापति ने कहाः-"यह ठीक है। सब लोग अपना प्रस्ताव अलग अलग पेश करो। सब से पहिले फोयले, तुम अपनी राय जाहिर करो।"

अब वादविवाद कुछ शांति के साथ होने लगा। करीब घंटे भर तक सब अपनी अपनी राय बतलाते रहे। इसी वक्त सरकारी छावनी से फिर उनके दोस्त ने खबर भेजी कि डबलिन से हुकम आ गया है और कल सवेरे सेनापति बड़े कड़े पहरे यहां से भेज दिया जायगा। अब लोगों का जोश और भी बढ़ गया और सब ने पक्का इरादा कर लिया कि चाहे फायदा हो या नुकसान, पर एक बार सेनापति को छुड़ाने की कोशिश जरूर की जाय। नायब सेनापति भी लोगों के जोश के साथ बह गया।

× × ×

अब इन लोगों को तो यहीं पर बहस करने और हमला करने का ढंग सोचने के लिये छोड़ दीजिये और पुलनमोर से बारह मील पर बसे हुये मोयवीन नामक गांव के हवाई जहाजों के अड्डे में चल कर टामी मैकफेट से मुलाकात कीजिये। उस वक्त वह अपने दोस्तों की मण्डली में बैठा हुआ आनन्द कर रहा था। उस दिन वहां महायुद्ध की किसी खास घटना की यादगार में एक जलसा किया गया था और सब लोग खा पीकर खूब मस्त हो रहे थे।

टामी मैकफेट हवाई जहाजों का काम करने वाला एक कारीगर था। वह महायुद्ध में जर्मनी वालों से लड़ा था, और एक बार बहुत घायल हुआ था। इससे वह लड़ने के नाकाबिल हो गया और उसे हवाई जहाजों की मरम्मत का काम दिया गया। वह इस काम में बहुत होशियार था, पर उस तोप के गोले की आवाज, जिससे वह घायल हुआ था, कभी कभी उसके दिमाग को खराब कर देती थी। अपने दिमाग की इस कमजोरी को दूर करने के लिये वह शराब पीने लगा और होते होते उसकी आदत यहां तक बढ़ गई कि दिन रात में एक घंटा भी बिना शराब के उसका काम नहीं चल सकता था।

टामी मैकफेट आयरलैण्ड का रहने वाला था और उसको आयरिश राज्यक्रांति से बड़ा प्रेम था। उसने कई बार आयरिश राष्ट्रीय सेना में भरती होने की कोशिश की। पर राष्ट्रीय सेना वालों ने कभी उसकी बातों का खयाल न किया। क्योंकि वे सम-

झते थे कि इस बातूनी और शराबी को अपने दल में शामिल करने से क्या फायदा ? टामी मैकफेट इस बात से बड़ा नाराज होता और कहता थाः-"मैं भी आयरलैण्ड का वैसा ही सच्चा पुत्र हूं जैसे कि तुम लोग। मैं दिल से पक्का बागी हूँ और अगर कभी मेरा दिमाग ठिकाने आ गया तो मैं अंगरेजों के ऊपर एक ऐसी जोरदार चोट जमाऊंगा कि तुम सब देखते ही रह जाओगे।"

पर उसकी इन 'बहादुरी' की बातों पर सिवा उसके शराबी दोस्तों के और कोई ध्यान नहीं देता था। राष्ट्रीय सेना वाले उसे एक सीधासाधा पागल समझते थे और दया की निगाह से देखते थे।

टामी मैकफेट ने आज के जलसे का निमंत्रण बड़ी खुशी के साथ मंजूर किया था; क्योंकि वहां पर मनमानी शराब मिलने का मौका था। पर एक बड़े ताज्जुब की बात यह थी कि उस दिन वह एक समझदार आदमी की तरह बातचीत कर रहा था। उसकी आंखों में एक खास तरह की चमक मालूम देती थी और वह अपने दांतों को बार बार इस तरह पीस रहा था जिससे मालूम होता था कि उसने किसी काम के करने का पक्का इरादा कर लिया है। आज टामी हर एक बात का जवाब ऐसी सावधानी और शांति से दे रहा था जैसा कि उसने बरसों से नहीं किया था। पर उसके इस बदलाव की तरफ किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि सब लोग खुशी मनाने, शराब पीने या सोने में लगे हुये थे।

टामी किसी बात का इंतजार करता मालूम होता था। अब सुबह के छैं बजने वाले थे। सोने वाले जग रहे थे और रात भर जलसे में जागने वाले सोने की तैयारी कर रहे थे। इतने में उस जहाजी अड्ड के दो बड़े अफसर चार्लस मैडफाक्स और जान समिट बाहर आये। दोनों अफसर खुश दिखलाई देते थे और उनके चेहरे से साफ मालूम पड़ता था कि उन्होंने रात को खूब शराब उड़ाई है। अफसरों ने टामी और दूसरे तीन चार आदमियों को अपने पास आने का इशारा किया। चार्लस ने टामी से कहाः-"तुम लोग जल्दी से एक छोटा और सबसे अच्छा जहाज ले आओ। हम थोड़ी देर के लिये सैर के वास्ते जाना चाहते हैं। यह भी देख लेना कि जहाज की तोपें पूरी भरी हुई हैं। क्योंकि हम पहाड़ियों की तरफ सैर करने को जायेंगे और वहां पर खुशकिस्मती से शायद हमको कुछ बागी मिल जायँ।"

टामी और दूसरे लोग लड़खड़ाते हुये और अफसरों को अपने दिल में बुरा भला कहते जहाजों के छप्पर के भीतर गये। उन्होंने जब तक जहाज को तैयार किया तब तक चार्लस साहब भी अपना चमड़े का कोट और हैमलेट (मुंह ढकने का टोपा जिसे हवाई जहाज वाले काम में लाते हैं) पहिन कर आगये। वे जहाज चलाने वाले की जगह पर बैठ गये और टामी से कहाः-"देखो, भीतर जाकर समिट साहब से कहो कि मैं तैयार हूं और उनका रास्ता देख रहा हूं।"

टामी बिना कुछ बोले भीतर चला गया। उस वक्त समिट साहब अपने कमरे में खड़े हुये चमड़े का कोट पहिन रहे थे और हैमलेट उनके पास पड़ा हुआ था।

टामी ने हैमलेट को उठा कर अपने सर पर रख लिया और गुर्रा कर बोलाः-"यह कोट भी मुझे दो।"

जान समिट ने गुस्से में भर कर कहाः-"हरामजादे, क्या बकता है! तेरी इतनी हिम्मत!"

उस वक्त टामी के चेहरे से पागलपन का भाव साफ जाहिर हो रहा था। जान समिट सोचने लगा कि इस पागल का क्या इलाज किया जाय। इतने में टामी ने जोर से उसके पेट में लात मारी और उसे नीचे गिरा कर दोनों हाथों से गला पकड़ कर दवाने लगा। इस अचानक हमले के सबब से समिट साहब अपना कुछ भी बचाव न कर सका और टामी ने एक ही मिनट में उसकी गर्दन तोड़ दी। उसने चमड़े का कोट समिट साहब के बदन से उतार कर खुद पहिन लिया और उसकी पिस्तौल अपने जेब में रखली। इसके बाद उसने जान समिट के मुर्दा शरीर को एक जीने के नीचे छुपा दिया और शांति के साथ बिना किसी तरह की घबराहट जाहिर किये वह हवाई जहाज के पास आया।

चार्लस साहब बिना पीछे की तरफ मुड़े पुकार कर बोलेः-"अरे, जल्दी से बैठो। तुम तो बड़ा वक्त खराब करते हो।"

दूसरे लोग जो हवाई जहाज के पंखों को पकड़ कर खड़े थे उन्होंने इस बात की तरफ कुछ खयाल नहीं किया कि जहाज में कौन बैठ रहा है। अगर्चे टामी का मुंह हैमलेट से बिलकुल छुपा हुआ था तो भी उसके बदन और चाल से साफ फर्क मालूम पड़ता था। पर उस वक्त सब लोग शराब के नशे में चूर हो रहे थे और चाहते थे कि किसी तरह यह बला दूर हो तो सोने को जायँ।

टामी पिछली बैठक में जाकर बैठ गया और जहाज धीरे धीरे ऊंचा उठने लगा। चार्लस साहब का ध्यान जहाज के चलाने में लगा था और उन्होंने अपने साथी से बहुत देर तक कुछ भी बातचीत न की। टामी ने धीरे धीरे तोपों को ठीक किया और चलाने के लिये बिलकुल तैयार कर लिया। पर उसकी निगाह चार्लस पर बराबर लगी हुई थी।

कुछ देर तक वे पुलनमोर की तरफ उड़ते रहे। पर टामी का इस तरफ कुछ खयाल न था। अभी वह किसी खास काम के करने का निश्चय न कर सका था। इतने में चार्लस ने कहा-"वह देखो पुलनमोर से हमारी फौज की कुछ मोटरगाड़ियां आ रही हैं। मैं जहाज को उनके पास ले चलता हूं, जरा उनसे राजी खुशी पूंछ लूं।"

टामी ने एक हूंकारा भर कर अपनी राय देदी। उसने देखा कि पुलनमोर की सड़क पर एक हथियारबंद मोटरगाड़ी चली जा रही है और उसके पीछे दो फौजी मोटरलारियां हैं। वह

नहीं जानता था कि उस गाड़ी में राष्ट्रीय सेना का सेनापति डबलिन भेजा जा रहा है और कुछ मील आगे राष्ट्रीय सेना वाले इन गाड़ियों पर हमला करने की घात में बैठे हुये हैं। वह सिर्फ इतना समझता था कि यह अंगरेज सिपाहियों का एक दल कहीं को जा रहा है। हवाई जहाज धीरे धीरे नीचे उतरता हुआ मोटरगाड़ियों की तरफ जा रहा था। उस वक्त तक टामी ने एक आवाज भी मुंह से नहीं निकाली। जब जहाज मोटर-गाड़ियों के ठीक ऊपर पहुंच गया तो उसने यकायक तोपों का मुंह उनकी तरफ खोल दिया। कई मन जलती हुई धातु मोटरों पर गिरी। मोटर वालों ने भी घबड़ा कर अपनी तोपें हवाई जहाज की तरफ छोड़ीं, पर चार्ल्स ने उसे एक दम ऊपर उड़ा दिया।

"जान, क्या तुम पागल हो गये हो! तुमने यह क्या किया कि अपने ही आदमियों पर तोप चलादी!!" चार्ल्स अपने को किसी तरह संभाल कर इतनी बात कह सका।

टामी गुर्रा कर बोलाः—"अब तुम जहाज को सीधी तरह पुलनमोर की छावनी को ले चलो। आज मैं उन सब को थोड़ा थोड़ा मजा चखाना चाहता हूं। ये साले राष्ट्रीय सेना वाले कहते थे कि मैं उनमें शामिल होने लायक नहीं हूं। अब उनको पता लग जायगा कि मैं उनसे भी सच्चा आयरलैण्ड का पुत्र हूँ। अच्छा, अब तुम भले आदमी की तरह मेरी बात मान कर जहाज को पुलनमोर ले चलते हो या नहीं?"

चार्लस साहब को फौज का काम करते हुये कितनी ही बार बड़ी बड़ी आफतों का मुकाबला करना पड़ा था; पर ऐसा बेढब मामला कभी उनके सामने नहीं आया था। उन्होंने जर्मनी वालों के साथ लड़ने में बड़ी बहादुरी दिखाई थी, इस लिये बड़े अफसर उनकी इज्जत करते थे। वे इस अनोखी आफत से निकलने की कोई तरकीब सोचने लगे। अखीर में उन्होंने तय किया कि या तो वे अपने पीछे बैठे हुये शख्श को मारेंगे या खुद मर जायँगे। अपनी मातृभूमि के साथ दगाबाजी करने का काम उनसे कभी नहीं हो सकता।

चार्लस ने चुपके से अपनी पिस्तौल उठाई और एक दम पीछे की तरफ फिर कर टामी पर निशाना लगाया। टामी को अगर्चे इस बात का खयाल नहीं था कि चार्लस इतनी जल्दी फैसला कर लेगा तो भी वह तैयार बैठा था। दोनों की पिस्तौलें एक साथ छूटीं और अपने निशाने पर लगीं। अब हवाई जहाज का कोई रखवाला न रहा और वह कुछ मिनट तक इधर उधर चक्कर खाकर लोटतापोटता हुआ जमीन पर गिरा। कुछ ही सैकिण्ड में उसमें आग लग गई और जब सरकारी सिपाही उसकी तलाश करते करते उस मुकाम पर पहुंचे तो उनको कुछ राख एक टूटे फूटे इंजन और आदमी की कुछ हड्डियों के सिवा कुछ न मिला

× × ×

राष्ट्रीय सेना वालों ने मोटरों पर हमला करने की जो तैयारी की थी वह योंही रह गई। हवाई जहाज की तोपों से मोटरों का बड़ा नुकसान हुआ था। उनमें बैठे हुये ज्यादातर सिपाही घायल हो गये और कई मर भी गये। पर खुशकिस्मती से राष्ट्रीय सेना का सेनापति बच गया और उसको घाव भी बहुत हलका लगा। इस लिये जब सब लोग अपनी अपनी जान बचाने की फिक्र कर रहे थे, और खूब गड़बड़ी मची हुई थी, वह भी चुपके से मोटर से उतर कर खेतों की तरफ भागा। उस वक्त तमाम सिपाही आंखें फाड़ फाड़ कर हवाई जहाज को देख रहे थे, और किसी का ध्यान सेनापति की तरफ नहीं गया।

इस के बाद आयरलैण्ड के बड़े हाकिमों ने इस मामले का भेद जानने की बड़ी कोशिश की, पर किसी तरह पता न लग सका। क्योंकि इस भेद को जानने वाला कोई बचा ही न था। करीब पंद्रह दिन बाद जीने के नीचे से जान समिट का मुर्दा शरीर बरामद हुआ। टामी का भी किसी तरह पता न चला। उसके बारे में यही खयाल किया गया कि वह नशे की झोंक में या तो कहीं चला गया या उसने आत्महत्या करली। पर इन बातों को जाहिर करना राजनीति और सरकार की शान के खिलाफ था। इस लिये तमाम मामला भीतर ही भीतर दबा दिया गया और टामी के गुम होने के बारे में यह कहा गया कि राष्ट्रीय सेना वाले जासूस होने के संदेह में उसे पकड़ ले गये और शायद जान से मार डाला!

× × ×

हम अच्छी तरह जानते हैं कि ज्यादातर लोग इस घटना की सचाई पर ऐतबार न करेंगे, क्योंकि इसका भेद छुपा ही रह गया। पर जैसा हम शुरू में लिख चुके हैं, वे इसे एक क़िस्सा ही समझ लें।



लड़ाई का अन्त।



न् १९२१ के गरमी के मौसम तक पुलनमोर की सरकारी फौज का असर बिलकुल खतम हो गया। इसका सबब यह न था कि वहां पर सिपाहियों या हथियारों की कमी थी। बल्कि बात यह थी कि फौजी अफसर यह फैसला न कर सकते थे कि हम क्या करें? डबलिन और लंदन में जो बड़े सेनापति और युद्ध-मंत्री रहते थे वे कभी एक तरह का हुकम भेज देते थे और कभी दूसरी तरह का। एक दिन वे लिखते थे कि खूब कड़ी दमन नीति से काम लो और दूसरे दिन उसी हुकम के मुताबिक काम करने के लिये स्थानीय अफ़सरों को डांटा जाता था। इसका सबब यह था कि बड़े हाकिमों में अकसर मतभेद रहता था और हर एक अपने मन के माफिक काम करना चाहता था। इन बातों से स्थानीय अफ़सर बड़े नाराज रहते थे और बार बार आपस में सवाल करते थे कि आखिर हम किस तरह से काम करें? पुलनमोर की फौज का सेनापति बुरा आदमी नहीं था। वह सिर्फ नौकरी की खातिर आयरलैण्ड में नहीं आया था, बल्कि उसे अपने कर्तव्य का पूरा खयाल था और उसके लिये वह अपनी जान तक देने को तैयार था। वह राष्ट्रीय दल वालों के साथ

खुल कर लड़ने की बड़ी इच्छा रखता था। पर उनका ढंग ही निराला था। जब सेनापति साहब लड़ने के लिये तैयार होकर आते तो उनको मैदान बिलकुल खाली मिलता; और जब वे राह देखते देखते थक जाते और भूख प्यास के कारण उनकी बुरी हालत हो जाती तो राष्ट्रीय सेना वाले किसी कोने से निकल कर अचानक उन पर हमला करते। आम लोगों की तरफ से भी अब उसको बड़ा डर मालूम पड़ता था। अब लोग सिपाहियों के ज़ुलमों और लूटमार को सहते सहते पक्के हो गये थे और इन बातों की कुछ भी परवा न करते थे।

अब सरकारी अफसरों को हर एक आयरलैण्ड निवासी पक्का बागी जान पड़ता था। हर रोज बड़े अजीब किस्से सुनने में आते थे और अच्छे अच्छे समझदार आदमी उन पर एतबार करते थे। अगर्चे अब कई बरस बीत जाने पर बहुत से अंगरेज अफसर उन बातों पर हँसते हैं, पर उस समय उनमें से ज्यादातर उन बातों को सच मानते थे। कहा जाता था कि छापा मारने वाले वालंटियरों को उनके काम के माफिक इनाम दिया जाता है और किसी पुलिस या फौजी अफसर के मारने की कीमत शेयर मारकेट की तरह उतरती चढ़ती रहती है। मालूम नहीं कि यह अफवाह कहां तक सच थी, पर इसमें शक नहीं कि उस जमाने में हर एक अफसर अकेला छावनी के बाहर जाने में डरता रहता था। उसे भय रहता था कि न मालूम कब कोई आफत मेरे ऊपर आ टूटे और मेरी जिन्दगी का खातमा हो जाय।

आयरलैण्ड के बड़े बड़े जमीदारों और अमीरों पर भी इन घटनाओं का असर कम नहीं पड़ा था। अब उनको अच्छी तरह मालूम हो गया था कि अंगरेजों का कानून और उनको फौज हमारी हिफाजत नहीं कर सकती। उनके घरों को चाहे जो बेखौफ होकर लूट सकता था। जैसा राज्यक्रांति के जमाने में अकसर हुआ करता है इस वक्त आयरलैण्ड में बहुत से लुटेरे और डाकू पैदा हो गये थे, और कितने ही आदमी अपने पुराने दुश्मनों से बदला लेने के लिये भी फसाद करने लगे थे। राष्ट्रीय सेना वालों ने ऐसे लोगों के दबाने का बड़ा पक्का इंतजाम कर रखा था और उनके सामने किसी की हिम्मत सर उठाने की नहीं पड़ती थी। इसलिये जो मालदार लोग राजभक्त थे और बगावत करने वालों को बुरा समझते थे उनको भी अपनी हिफाजत के लिये राष्ट्रीय सेना वालों का सहारा लेना पडता था।

पुलनमोर की सरकारी फौज हर तरह से मजबूत थी और उसके पास सामान की भी कुछ कमी न थी। इधर राष्ट्रीय सेना वालों की तादाद बहुत कम थी और उनको इधर उधर से हथियार और दूसरा सामान इकट्ठा करना पड़ता था। तो भी सरकारी सेना के करे धरे कुछ नहीं होता था। सरकारी सिपाही फौजी कायदे के साथ लड़ते थे, पर यहां उनका युद्ध-शास्त्र कुछ काम नहीं देता था। खासकर सड़क, तार और रेल की पटरियों के बार बार तोड़ दिये जाने से उनको बड़ी तकलीफ होती थी। अकसर ऐसा होता था कि राष्ट्रीय सेना वालों के बड़े

बड़े दल गांवों और छोटे कसबों में पहुंचते थे और वहां पर खुल्लमखुल्ला घंटों तक रहते थे, पर सरकारी सेना को कभी ठीक वक्त पर उनकी खबर नहीं मिलती थी।

× × ×

इस बार फोयले और उसके दल को पुलनमोर से दूर एक दूसरे जिले में जाकर काम करने का हुकम दिया गया। इस जगह को वहां के लोग छाया घाटी के नाम से पुकारते थे। यह जगह बिलकुल पहाड़ी थी और उसके बीच में होकर सिर्फ एक सड़क गई थी जो कई मील तक बड़ी रद्दी हालत में थी। सरकारी फौज वाले इस रास्ते से बहुत डरते थे और भूल कर भी उसमें होकर जाने का नाम नहीं लेते थे। सिर्फ एक बार 'ब्लैक एण्ड टैंस' वालों का एक दल वहां होकर गुजरा था; पर उसे बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। जब वे लोग बहुत से मुरदे और घायलों को लेकर छावनी में पहुंचे तो वहां का बड़ा अफसर बहुत गुस्सा हुआ। उसने कहा:—"अच्छा हुआ, तुम लोग इसी लायक थे। तुम्हारा नालायक कप्तान गोली से मार देने लायक है जिसने अपने आदमियों को उस पिंजड़े में फँसा दिया।"

इस छाया घाटी की पहाड़ियों पर जगह जगह राष्ट्रीय सेना के वालंटियर गिद्धों की तरह बैठे हुये अपने शिकार की राह देखा करते थे। पर उनकी आशा कभी पूरी नहीं होती थी। सरकारी सेना की बख्तरदार मोटरगाड़ियां भी जहां तक मुमकिन होता था इस बदनाम रास्ते को बचा कर निकलती थीं। इस

लिये यह जिला अंगरेजों की हकूमत से बिलकुल बाहर था और वहां पर राष्ट्रीय दल वालों का ही हुकम चलता था।

छायाघाटी का मुकाम चारों तरफ से पहाड़ों से घिरा था। बीच में थोड़े से गांव थे। इन गांवों के रहने वाले बड़े गंवार थे और उनको दुनियां की बातों का कुछ भी पता न था। उस जगह रेल, तार, डाकखाना वगैरह कुछ न था। एक गांव से दूसरे गांव को जाने के वास्ते सिर्फ सैकड़ों वर्ष पुरानी पगडंडियां थीं। यहां पर बहुत से लोग कानून के खिलाफ शराब बना कर बेचते थे। इसी शराब के काम को रोकने के लिये फोयले का दल यहां पर भेजा गया था। साथ ही राष्ट्रीय सेना के सेनापति का मतलब यह भी था कि फोयले का दल बहुत थक गया है और उसे इस जगह कुछ आराम मिल जायगा।

इस जगह आते ही वालंटियरों ने शराब बनने की जगहों का पता लगाया और उनके मालिकों के सामने ही शराब के बर्तनों को तोड़ कर फेंक दिया। उन्होंने हुकम दिया कि जो कोई चोरी से शराब बनायेगा उसे कड़ी सजा दी जायगी। अपनी प्यारी चीज को इस तरह जमीन पर फैलते देख कितने ही लोग बड़े दुःखी होते थे और कभी कभी राष्ट्रीय सेना वालों को बुरा भला भी कहते थे। एक दिन एक बहुत बूढ़ी औरत ने केसी से कहाः—"लोगों के खाने पीने की चीज को तुम इस तरह बर्बाद करते हो यह बड़ा बुरा काम है। भगवान के यहां से इसका फल अच्छा नहीं मिलेगा। सरकारी फौज वाले हमें कभी इस तरह तंग नहीं

करते थे। वे कभी कभी पीने के लिये दस पांच बोतलें उठा ले जाते थे। तुम लोग भी अगर कभी दो चार घूंट पी लिया करो तो हमको किसी तरह का एतराज न होगा और तुम्हारी थकावट दूर होकर तबियत खुश रहेगी।"

पर जब वालंटियर उनकी बातों पर कुछ ध्यान न देते तो वे ओहारा की चिरौरी करने लगते थे। उसके लाल चेहरे को देख कर उनको पक्का भरोसा हो जाता था कि वह खाली चाय पीने वाला आदमी नहीं है। इस लिये जब उस बुढ़िया ने देखा कि केसी उसकी बात नहीं सुनता तो वह ओहारा की खुशामद करने लगी कि:-"तुमको हमारे साथ ऐसा बर्ताव नहीं चाहिये। तुम तो इस अंगूरी शरबत के प्रेमी जान पड़ते हो। तुमको जरूर हमारी मदद करनी चाहिये।"

ओहारा ने दया के साथ कहा:-"मा, ईश्वर ने मेरे और दूसरे तमाम लोगों के भीतर पहिले से ही शैतान का अंश रख दिया है। फिर शराब पीकर उसकी जड़ मजबूत करने से क्या फायदा? अगर तुम कुछ भी विचार करो तो तुमको मालूम होगा कि हम तुम्हारे भले का काम कर रहे हैं।"

राष्ट्रीय सेना वालों की कोशिश से थोड़े ही दिन में वह शराब बनना बंद हो गया। गांवों के ज्यादातर लोग उनके काम की तारीफ करते थे। सिर्फ वे लोग जो शराब बना कर रुपया कमाते थे उनसे नाराज थे।

करीब दो हफते तक फोयले के वालंटियर छायाघाटी में रहे। उनका ज्यादातर वक्त मछलियां पकड़ने और शिकार खेलने में जाता था। यहां पर वे खूब खा पीकर और आराम करके तगड़े हो गये। अब उनको अपने जिले में लौट कर फिर काम में लगने की इच्छा प्रबल होने लगी। जब पंद्रह दिन और बीत जाने पर भी सेनापति ने उनके लौटने का हुकम न भेजा तब तो उनका जी बहुत ऊबने लगा। क्योंकि इस मुकाम पर खाने पीने के सिवा उनको और कोई काम न था और यह बेकारी सबको बुरी लगती थी। लोगों के मन का यह भाव देख कर फोयले ने कहा :-"भाइयो, तुम यहां आराम करने को भेजे गये हो जिससे फिर अपना काम तेजी के साथ कर सको। सेनापति ने मुझसे कहा था कि जब जरूरत होगी वह हमको बुला लेगा। पर अब बेशक बहुत देर हो रही है। इसलिये मैं एक आदमी सेनापति के पास भेजता हूं कि वह हमको लौटने का हुकम दे। जब तक वहां से हुकम नहीं आता तब तक हमको यहीं पर कोई काम ढूंढ निकालना चाहिये।

दो दिन बाद खबर आई कि आठ दस मील के फासले पर सरकारी फौज की कुछ मोटरगाड़ियां आने जाने लगी हैं। वालंटियर उन पर छापा मारने को वहीं पहुंचे। उनको वहां पर कुछ ही घंटे हुये होंगे कि वे यह देख कर बड़े खुश हुये कि एक खुली हुई मोटरगाड़ी बेलोनेटी के कस्बे से उनकी तरफ आ रही है। पर यह देख कर उनको बड़ा ताज्जुब हुआ कि

उसमें बैठे हुये सिपाहियों में से सिर्फ दो के पास बंदूकें हैं, और वे लोग बड़ी खुशी से गाते हुये आ रहे हैं। मालूम होता था कि उनको किसी तरह के खतरे का खयाल तक नहीं है।

फोयले ने केसी से कहा :-"न मालूम क्या बात है? खैर, सब लोग अपने मोरचे के पीछे खड़े हो जाओ और जब मोटर पास आजाय तो ऊपर की तरफ कुछ गोलियां चलाओ। फिर जैसा होगा देखा जायगा।"

ये बातें हो रहीं थीं कि मोटर मोरचे के सामने आ पहुंची। दस बारह वालंटियरों ने हवा में बंदूकें चलाईं और मोटर को ठहराने का हुकम दिया।

अंगरेज सिपाही फौरन ठहर गये और उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठा दिये। उनमें से एक ने कहाः-"क्या तुम राष्ट्रीय सेना वाले हो? अब तो हम लोगों की लड़ाई बन्द हो चुकी है।"

फोयले ने जोर से कहाः-"हां, हम लोग राष्ट्रीय सेना के वालंटियर हैं। तुम गाड़ी से उतर कर नीचे आओ और बन्दूकें अलग रख दो। अपने हाथ इसी तरह ऊपर उठाये रहो जब तक दूसरा हुकम न दिया जाय।"

सिपाहियों ने विना देर लगाये फोयले के हुकम के माफिक काम किया। जब वालंटियर उनके पास गये तो एक हवलदार ने फोयले से कहाः-"क्या आप इस दल के मुखिया हैं? हमको

हुकम दिया गया था कि आज बारह बजे से राष्ट्रीय सेना वालों साथ हमारी क्षणिक संधि हो जायगी। इस वक्त एक वजा है।"

फोयले ने जवाब दियाः-"मेरे पास ऐसा कोई हुकम नहीं आया है। तुम लोग अपने हाथ नीचे कर लो पर भागने की कोशिश मत करना। जिम, तुम इनकी बन्दूकों और गोली बारूद को अपने कवजे में रखो। तब तक हम मोटरगाड़ी को जलाते हैं।"

वे लोग सचमुच मोटर को जलाने वाले थे कि उनका आदमी, जो सेनापति के पास भेजा गया था, भागता हुआ आता दिखलाई दिया। वह दूर से ही चिल्लायाः-"लड़ाई बन्द हो गई; लड़ाई बन्द हो गई।" बाद में यह मालूम हुआ कि सेनापति ने तीन दिन पहिले अपने एक वालंटियर के हाथ क्षणिक संधि की खबर फोयले के पास भेजी थी। पर वह आदमी पहाड़ी पर चढ़ते समय पैर फिसल जाने से गिर गया और मरा हुआ पाया गया।

फोयले ने सेनापति का हुकम अच्छी तरह से पढ़ा और तब वह बोलाः-"यह खबर सच है कि सरकारी सेना के साथ हमारी क्षणिक संधि हो गई है। जिम, इन लोगों की बन्दूकें वापस कर दो।" इसके बाद सिपाहियों के पास जाकर उसने गलती के लिये बहुत रंज जाहिर किया। थोड़ी देर बाद सिपाही अपनी गाड़ी में बैठ कर खुशी खुशी चले गये।

—

जब सिपाही चले गये तो ओहारा ने कहाः-"अब हम लोगों के लिये सिवा हंसने के और कोई काम नहीं है।"

फोयले बोलाः-"हां, बात तो ऐसी ही है। भाइयो, अब छावनी को उठाओ और अपने प्यारे घरों को चलो।"

उस दिन शाम को वे बेलोनेटी के स्टेशन से रेल में सवार होकर पुलनमोर पहुँचे। रास्ते में जगह जगह लोगों ने उनका बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। वालंटियर तमाम रास्ते क्षणिक संधि की चर्चा करते रहे। उन लोगों ने अपनी बन्दूकें एक अच्छी जगह छुपादी थीं कि न मालूम आगे चल कर क्या हो? कितने ही लोग तो उसी रात को अपने घरों के लिये रवाना हो गये। बाकी आदमी पुलनमोर में ही ठहरे रहे क्योंकि वहां उसी समय उनके स्वागत के लिये एक नाच का जलसा करने का इन्तजाम किया गया था। फोयले और केसी जितना जल्दी हो सका जाकर अपनी प्रेयसियों से मिले। सब लोग क्षणिक संधि के बारे में अखबारों के लेख पढ़ रहे थे और आपस में बहस करते जाते थे। जब ओहारा से उसकी राय पूछी गई तो उसने अंगूठे से अखबार को ठोकते हुये कहाः-

"अब मेरी जिन्दगी में तुम लोगों को कभी अंगरेजों से लड़ने का काम नहीं पड़ सकता। इस बात से मुझे बड़ा रंज होता है, क्योंकि तुम लोगों को छोड़ कर मुझे फिर किसी दूसरे मुल्क को जाना पड़ेगा।"

ओहारा के जाने की बात सुन कर लोग बड़ा शोर मचाने और उसे समझाने लगे। पर ओहारा ने गम्भीर भाव से कहाः—

"मुझे तुम्हारे जैसे दोस्तों को छोड़ते समय जो दुःख होगा वह मैं ही जानता हूं। पर इसका कोई इलाज नहीं। मुझे लड़ाई का रोग है और मैं उसके सिवा कोई दूसरा काम नहीं कर सकता। मेरे लिये दुनियादार आदमियों की तरह घर में चैन से पड़े रहना नामुमकिन है। मुझे तो भयंकर और खूनी लड़ाइयों में ही मजा आता है।"

केसी ने भरे हुये गले से कहाः—"ओहारा, फिजूल की बातें मत करो। तुम्हारे जैसे आदमियों की आयरलैण्ड को बड़ी जरूरत है। जो मुल्क आजादी के लिये लड़ रहा हो उसके लिये तुम्हारे जैसे आदमी ही एक मात्र आधार हैं।"

ओहारा ने धीमी आवाज से कहाः—"मैं आपके इस प्रेम के लिये बड़ा अहसानमंद हूं। जब आयरलैण्ड फिर अंगरेजों से लड़ने को तैयार होगा और उस वक्त अगर मैं जिन्दा रहूंगा, तो कोई ताकत मुझे यहां आने से नहीं रोक सकेगी। पर तब तक मैं बेकार नहीं बैठ सकता।"

"पर तुम कहां जाओगे?" कितने ही वालंटियरों ने एक साथ ओहारा से सवाल किया। क्योंकि वे जानते थे कि वह जो कुछ कहता है उसे करके रहता है।

ओहारा ने जवाब दिया:-"अपनी कसम जो मैं कुछ भी जानता हूँ। पर दुनियां में कोई न कोई ऐसी पराधीन जाति होगी जो अपने अन्यायी शासकों का मुकाबला कर रही हो। ओहारा उन्हीं लोगों में मिल कर गोली बारूद का खेल खेलना पसंद करता है।"



सोशलिस्ट बुकशाप की पुस्तकें।

कम्यूनिज्म क्या है?

(लेखक—श्री० राधामोहन गोकुलजी)

कम्यूनिज्म (या बोलशेविज़्म) को समझाने वाली यह हिन्दी में पहली पुस्तक है। यह कम्यूनिज्म के कई बड़े अंगरेजी ग्रंथों के आधार पर लिखी गई है। इसमें नीचे लिखे अध्याय हैं?

१–विषय प्रवेश; २-कम्यूनिज्म; ३-आर्थिक पूंजी;४-शासन तृष्णा;५-असिनीति; ६--धन; ७-राष्ट्रीयता; ८-सेना का निबन्ध; ९-न्याय; १०-शिक्षा; ११-धर्म; १२-उद्योग का सम्विधान १३-खेतीबारी; १४-श्रमरक्षा और सामाजिक कल्याण के काम।

पुस्तक बहुत सरल भाषा में लिखी गई है और पेचीदा आर्थिक समस्याओं को बहुत सीधेसाधे ढंग से समझाया गया है। धर्म, शिक्षा और न्याय के सम्बन्ध में इसके विचार पाठकों को बिलकुल नये और क्रांतिकारी जान पड़ेंगे।

कम्यूनिज्म आजकल संसार का सब से महत्वपूर्ण और शक्तिशाली आन्दोलन है। इसलिये सिर्फ कम्यूनिज्म के मानने वालों के लिये ही यह पुस्तक जरूरी नहीं है वरन् हर एक ऐसे आदमी के लिये जो समय की गति को समझ कर उसके मुताबिक चलने में अपना कल्याण मानता है, इस पुस्तक का पढ़ना लाजिमी है। मूल्य दस आना।

पता—सोशलिस्ट बुकशाप, कानपुर।

बोलशेविज्म क्या है ?

संक्षेप में बोलशेविज्म के इतिहास और सिद्धान्तों का वर्णन। मूल्य १ आना, १०० प्रति का ५)।

भारत की वर्तमान राजनैतिक दशा और कांग्रेस।

स्वराज्य पार्टी के दोषों और खुदगर्जी का भंडाफोड़। मूल्य १ आना, १०० प्रति का ५)।

भारतीय श्रमजीवियों को संदेश।

किसान, मज़दूर और नौकरी पेशा वालों की दुर्दशा और उसके सुधारने के उपाय। मूल्य १ आना, १०० प्रति का ५)

सोशलिस्ट बुकशाप में मिलने वाली बाहरी पुस्तकें

१-देशभक्त मेजिनी (लेखक-राधामोहन गोकुल जी)	मू० १॥)
२-जोजेफ गैरीबाल्डी (,, ,, ,,)	मू० १।=)
३-वीरश्रेष्ठ सावरकर (जीवनी)	मू० ॥=)
४-अंदमान की गूंज (सावरकर के पत्र)	मू० ॥=)
5-Moplah Rebellion	8 as.

पुस्तक मिलने का पता :—

सोशलिस्ट बुकशाप

कानपुर.

The Socialist Book-Shop.

———:o:———

This book-shop has been opened to supply books on socialism; communism; labour problems; international affairs; political history etc. We have special knowledge of the books on Irish and Russian Rovolutions and we are always ready to give necessary informations and useful suggestions on these subjects. Our terms are very moderate and liabraries and lovers of socialist literature will find this book-shop much useful.

Address :—

MANAGER

The Socialist Book-Shop

Cawnpore.